ओ३म्

एक प्रति मूल्य 12/-

हिन्दी मासिक

जनज्ञान

अप्रैल २०११ वर्ष:४६ अंक:१२ चैत्र-वैशाख २०६८

छत्रपति शिवाजी

जयन्ती 26 अप्रैल

13 अप्रैल, जलियाँवाला बाग की खूनी बैसाखी की स्मरण तिथि

महात्मा हंसराज

जन्मदिवस: 18-04-1864

निधन: 15-11-1938

13 अप्रैल, नव सम्वत्सर बैसाखी पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

दयानन्द संस्थान के वार्षिकोत्सव एवं महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती समारोह

के अवसर पर

महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेद मंदिर में

आपका हार्दिक स्वागत है

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद
ऋक् यजु साम अथर्व

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

जनज्ञान प्रकाशन
नई दिल्ली - 5

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

सम्पर्क-स्थल :
२२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग,
नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ४१००४७४१, ९९६८५२३५२०

मुख्यालय :
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
निकट केशवनगर बसस्टैन्ड
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-११००३६
मोबाइल : ९८१०२५७२५४

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक : दिव्या आर्य

वार्षिक शुल्क -१२० रु०
एक प्रति - १२ रुपये
विदेश में वार्षिक शुल्क-1100 रु.
(हवाई जहाज से) वार्षिक शुल्क-2100रु.

अप्रैल 2011 वर्ष 46 अंक 12

सम्पादकीय

राष्ट्रभक्त उन अमर शहीदों को शत बार नमन है

अप्रैल मास इतिहास की उस प्रेरक स्मृति को प्रत्येक राष्ट्रभक्त के मानस पटल पर उभारता है, जिसकी अमर दास्तान उसे राष्ट्र रक्षा हेतु सर्वस्व समर्पण की सतत प्रेरणा प्रदान करती है। तेरह अप्रैल को सन् 1919 में वैशाखी के पुण्य पर्व पर अमृतसर में स्वातन्त्रय समर का वह प्रेरक अध्याय लिखा गया था। जो भावी पीढ़ियों को भी **'तेरा वैभव अमर रहे माँ हम दिन चार रहें न रहें'** की अनुगूंज से गुंजित करता रहेगा। उसी दिन अमृतसर में अँग्रेज जनरल ने निहत्थे राष्ट्र भक्तों के जन समूह पर बिना पूर्व चेतावनी के ही गोलियाँ चलवा कर चह नृशंस नरमेध किया था। जिसने नितान्त संयत शब्दावली का प्रयोग करने वाले अहिंसानुरागी महात्मा गाँधी को भी कहने पर बाध्य कर दिया था कि आधुनिक युग में मनमानी क्रूरता और अमानुषिकता का यह अद्वितीय उदाहरण है। ब्रिटिश संसद में भी इस काँड की तीव्र भर्त्सना हुई थी। किन्तु यही भीषण हत्याकांड भारतीय स्वाधीनता के महासमर के इतिहास में नवयुग का सूत्रपात भी कर गया था। पंजाब में उस समय सर माइकेल ओडवायर का दमनकारी शासन था।

वैशाखी के पुनीत पर्व पर स्वर्ण मन्दिर के सरोवर में स्नानार्थ आस-पास के देहात से भी अगणित नर-नारी आते हैं। उस दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में रोलैट एक्ट तथा स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय कुछ नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में एक जनसभा आयोजित की गयी थी। साढ़े चार बजे तक लगभग पाँच हजार लोगों का विशाल जन समूह सभा स्थल पर एकत्रित हो गया था। जनरल डायर को जब यह जानकरी मिली तो वह 200 सैनिकों को साथ लेकर रवाना हुआ,

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी २२८६ आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५ से प्रकाशित एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

और सौ से अधिक सैनिकों को उसने मार्ग में विभिन्न स्थानों की रक्षार्थ तैनात कर शेष के साथ जलियाँवाला बाग में प्रवेश किया और फिर निहत्थे निरीह जनों पर गोलियों की अन्धाधुन्ध बौछार का आदेश दे दिया। दस मिनट की अवधि में ही कुल मिलाकर 1650 गोलियाँ दाग दी गयी थीं और उनसे 379 लोगों ने वहीं दम तोड़ दिया था तो 1200 घायल हो गए थे। जलियाँवाला बाग की माटी उन देशभक्त अमर शहीदों के रक्त से लाल हो गयी थी। और बाद में इसी नरमेध का प्रतिशोध अमर हुतात्मा ऊधमसिंह ने लिया था।

किन्तु यह नर संहार भारतीय राष्ट्रभक्तों में नव चैतन्य का संचार भी कर गया था और महाकवि कालिदास का यह कथन साकार हो उठा था कि भगवान की इच्छा से कभी-कभी विष भी अमृत हो जाता है। पंजाब में हुआ यह जघन्य अत्याचार अन्तोतगत्वा स्वाधीनता की आकांक्षा रखने वाले राष्ट्रभक्तों के लिए अपना सर्वस्व मातृभूमि की स्वतन्त्रता हेतु समर्पित करने की उत्कट लालसा जगा गया था। उन बलिदानी वीरों के बलिदान से प्रेरणा प्राप्त कर क्रान्ति आन्दोलन के अनेक पुरोधाओं ने स्वातन्त्रय के महायज्ञ में अपनी जीवन समिधाएं समर्पित करने का जो उपक्रम प्रारम्भ किया था। उससे उस कांड के अगले 28 वर्षों में ही भारत से ब्रिटिश सत्ता का अन्त हो गया था। वस्तुतः एक मनीषी का यह कथन सर्वथा सत्य ही सिद्ध हुआ था कि प्लासी के युद्ध से भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना हुई थी और अमृतसर की घटना ने उनकी नींव हिला दी थी।

अप्रैल मास जहाँ उन अमर बलिदानियों की प्रेरक स्मृतियाँ दिलाता है, वहीं हमें हमारे कर्त्तव्य का भी पावन स्मरण कराता है कि जो स्वतन्त्रता अमर हुतात्मा ऊधमसिंह सरदार भगतसिंह, विस्मिल और अशफाक तथा लाहिड़ी सरीखे महान बलिदानियों के बलिदान और मातृभूमि को स्वाधीनता से महिमा मंडिता कराने के लिए अपना यौवन समर्पित करने वाले पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द स्वातन्त्रय वीर सावरकर और पंडित गयाप्रसाद शुक्ल सरीखे क्रान्ति दूतों की साधना का प्रतिफल है, उसे रखने के लिए हम सदैव जागृत और सन्नद्ध रहें। हमें स्मरण रहे लाला लाजपतराय स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम ने इस राष्ट्र और इसकी संस्कृति को अक्षुण रखने के लिए अपने प्राण समर्पित किए थे। आज स्वतन्त्र भारत के अमंगल की दुरभिसंधि अपने मन में बस अनेक राष्ट्रद्रोही तत्व स्वदेश में सक्रिय हैं। मुम्बई की आस्तीन के नागों के कुकृत्यों की भी स्मरणीय दास्तान है। गद्दार मेमन परिवार जितनी आसानी के साथ दुबई होकर पाकिस्तान पहुँच गया या उसने हर राष्ट्रभक्त के समक्ष यह प्रश्न चिन्ह उपस्थित किया कि हमारी सुरक्षा व्यवस्थाओं में खामी है। कुछ तत्त्व घर को आग लगाना ही अपना मजहवी फर्ज मान बैठे हैं। चिन्ताजनक तथ्य यह भी है कि भारत की धरती में ही पल और बढ़कर आस्तीन के कुछ साँप अभी भी अपने जहरीले फन फुंकार रहे हैं। जिन्हें अशफाक उल्ला की कुर्बानी पर गर्व नहीं अपितु जो जिन्ना को ही अपना प्रेरणा पुरुष मानते हैं। विडम्बना यह है कि इन मेमनों को दूध पिलाना ही स्वयं को उदारमना मानने वाले कुछ उदारता के पुतले आज भी अपना महान कर्त्तव्य मान रहे हैं। भारत से विद्वेष करने वालों को, उसे तोड़ने के नापाक इरादों को मन में बसाने वालो का तुष्टिकरण ही उन्हें भाता है। केवल कुर्सी ही उनका सपना है। जिसके लिए उनमें से अनेक बिल्लियों की तरह लड़ने में ही अपना रण कौशल मान रहे हैं।

राष्ट्रनिष्ठ भारतीय का कालखण्ड कर रहा आह्वान।।

देश की पाँच विधानसभा के निर्वाचन का क्रम भी आरम्भ हो गया है। चुनाव क्षेत्र कुरूक्षेत्र की रणभूमि का रूप ग्रहण कर रहें हैं। तुष्टिकरण जिन्हें आता है वे स्वयं को सेक्युलरवाद का ध्वजवाहक उद्घोषित कर रहे हैं। भारतीय इतिहास में महाभारत का प्रकरण तब घटित हुआ तब दो ही दल थे, कौरव और पांडव, परन्तु इसी चुनावी महाभारत में दलों की दल - दल का प्राबल्य दृष्टिगोचर है। मतदाता को यह समझ पाना ही कठिन हो गया है। कि इनमें से सत्य किसके पक्ष में है। कौन अर्जुन है, श्रीकृष्ण किसके सारथी हैं।

सामान्य मतदाता असमंजस ग्रस्त है। उसकी वाणी पर एक ही स्वर है ना जाने कौन विजयी होगा, किसकी बनेगी सरकार? जबकि मतदाताओं का एक वर्ग ऐसा भी है जो कहता है भारत को जिस दल ने आजाद कराया वही दल विजयी होगा। एक अन्य वर्ग भी है जो तर्क देता है कि देश की बागडोर प्रगतिशील तत्वों के हाथों में होनी चाहिए। जबकि युवा मतदाताओं में ऐसे भी अनेक प्रबुद्ध जन हैं जिनका यह सुस्पष्ट मत है भारत

इस अंक में पढ़े

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णत: सहमत हो)

सम्पादकीय- राष्ट्रभक्त उन अमर शहीदों को शत बार नमन है। ।
सामयिक विचार- अपने ही जाल में फँसी सरकार 4
महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी-हम संसार में क्यों आये हैं? 5
आपके-पत्र 6
नव सम्वत्सर का महत्व 9
सागरमाथा (कविता)- डॉ. श्यामसिंह शशि 10
हे रुद्र !नमस्ते ! हम तुमसे युद्ध नहीं लड़ सकते-देवनारायण 18
महर्षि दयानन्द गाथा (कविता) -महात्मा वेदभिक्षु: 13
महानतम तपस्वी-दर्शन-दक्ष व योगी महर्षि दयानन्द -ज्ञानचन्द 15
जगे देश का शौर्य तेज(कविता) -मुकुन्दमणि मिश्र 16
आर्यसमाज का दायित्व -पं. विनायक राव विद्यालंकार 17
दयानन्द दर्शन की आवश्यकता- प्रो. रामसिंह 19
वाल्मीकि के राम -डा. चन्द्रकान्त गर्जे 21
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम - डॉ. रमानाथ त्रिपाठी 23
शिवाजी जयन्ती 26
पंडित वीरबल का बुद्धि कौशल (बाल जगत) 28
रक्तअल्पता या एनीमिया कितना गम्भीर -डॉ. आर. डी.गुप्ता 30
मीडिया में भ्रष्टाचार पर ध्यान -सोमपाल शास्त्री 32
तनाव पर हास्य प्रहार - डॉ. विशेष गुप्ता 36
बन्द हो गाय बैलों से अमानवीय व्यवहार -मेनका गाँधी 41
समाचार-दर्शन - 43

के प्रबुद्ध जन दलीय हित पर राष्ट्रहित को प्रमुखता देते हुए जो प्रत्याशी राष्ट्र के समक्ष उपस्थित अभाव, शोषण, बेरोजगारी और आतंकवाद के संकट से मुक्ति दिलाने हेतु अग्रसर हों उन्हें ही अवसर दें।

इस समग्र परिस्थिति पर तटस्थ भाव से दृष्टिपात करें तो चिन्तन मनन करने पर यही निष्कर्ष समक्ष आता है कि राष्ट्र को सही दिशा दान प्रदान करने में वही सुधि साहसी और संकल्पबद्ध जन समर्थ हो सकते हैं, जो आसुरी प्रवृत्तियों के उन्मूलन का संकल्प ग्रहण कर स्वाधीनता संग्राम के अमर बलिदानियों से प्रेरणा लेते हों। राष्ट्र के विखण्डन में जिस प्रवृत्ति की भूमिका रही उसके उन्मूलन की जिनकी मानसिक सिद्धता है। राष्ट्रीय स्वभिमान और सुदृढ़ सांस्कृतिक आधार से जिनका जीवन समृद्ध है, ही जन समर्थन के वास्तविक अधिकारी हैं। इन चुनाव का परिणाम भावी राजनीति का भी आभास देगा। ●●

स्वागत है नव सम्वत्सर

-शिव अवतार सरस

हिन्दी-हिन्दू हित चिन्तन में, स्वागत है नव सम्वत्सर।
संस्कार-संस्कृति चर्चा का मिला आज अनुपम अवसर।।
सृष्टिसृजन का आदि-दिवस है,हुआ राम का था अभिषेक।
धर्मराज ने गद्दी पायी, शकहूणों का हुआ निषेध।।
वेद पढ़े फिर दयानन्द ने, किया स्थापित आर्यसमाज।
लिखे वेद के भाष्य दिया था, वृहद् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश।।
'राष्ट्र' धर्म के संरक्षण को हुए आज ही हम तत्पर।
हिन्दी-हिन्दू हित चिन्तन में, स्वागत है नव सम्वत्सर।।
पतझड़ बीता ऋतु बसन्त में होली-होला है खेला।
नवल-वर्ष में नवल-हर्ष से जुड़ा आज अद्भुत् मेला।।
नये वर्ष में सब नवान्न से रचें रचाएँ रंगोली।
होम-हवन-यज्ञादि करें, शुभ अग्निहोत्र से हो होली।।
सिंहनाद कर बिगुल बजा दें, गूँज उठे धरती अम्बर।
हिन्दी-हिन्दू हित चिन्तन में,स्वागत है नव सम्वत्सर।।
सम्वत् उन्निस सौ छियालिस में जन्म लिया था हेडगेवार।
आर.एस.एस. संस्थापन द्वारा किये स्वयं सेवक तैयार।।
बिना संगठन नहीं सुरक्षा, भय से अरिदल दूर भगे।
इसीलिये यह बनी कहावत-संघे शक्ति कलौयुगे।।
आँख तीसरी खोल उपस्थित होंगे निश्चित प्रलयंकर।
हिन्दी-हिन्दू हितचिन्तन में, स्वागत है नवसम्वत्सर।।

-मालती नगर, मुरादाबाद(उ.प्र.)

सामयिक विचार

अपने ही जाल में फँसी सरकार

मनमोहन सिंह सरकार जहाँ एक ओर विश्वसनीयता और ईमानदारी के संकट से जूझ रही है, वहीं दूसरी ओर वह इस ओर से जनता का ध्यान हटाने के लिए 'हिन्दू आतंकवाद' की जांच-पड़ताल राष्ट्रीय जाँच एजेंसी को सौंपे जाने की कसरत में जुट गई है। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में यह पहली सरकार है जो सत्ता-लालसा में अपनी साख पूरी तरह गँवा चुकी है और प्रधानमंत्री को तर्क देना पड़ रहा है कि जब जनता ने उन्हें दुबारा सरकार बनाने का जनादेश दे दिया तो मान लेना चाहिए कि उनके 'नोट के बदले वोट' जैसे पुराने सारे पाप धुल गए। यानी प्रधानमंत्री उन सभी दागी व्यक्तियों को सन्देश देना चाह रहे हैं जिनके विरुद्ध थानों और अदालतों की फाइलें गम्भीर आरोपों से भरी पड़ी हैं, कि जो येन केन प्रकारेण चुनाव जीतकर जनप्रतिनिधि बन गए हैं तो वे निर्दोष साबित हो ही गए। 5 दशकों से ज्यादा देश पर राज करते समय कांग्रेस ने चुनावी राजनीति को धनबल और बाहुबल पर पनपने का जो कुसंस्कार दिया, उससे वह इतनी कलुषित हो गई है कि अब चुनाव जीतना ईमानदारी, विश्वसनीयता और जनसेवा का परिचायक नहीं रहा, बल्कि जातिवाद, पैसा, आतंक और हथकंडेबाजी चुनावी जीत में अहम् भूमिका निभाने लगे हैं। ऐसे में प्रधानमंत्री का तर्क लोकतन्त्र के लिए एक मजाक बनकर रह जाता है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कांग्रेस ने लोकतन्त्र को लट्ठ तन्त्र और भ्रष्ट तन्त्र में बदल दिया और कमोबेश सभी राजनीतिक दल इस बीमारी से ग्रस्त हैं। अब तो स्वयं प्रधानमंत्री की 'मासूम' और 'ईमानदार' छवि भी तार-तार हो गई है। लेकिन कांग्रेस ने सत्ता लिप्सा में सारे नैतिक तकाजों को ताक पर रख दिया है और वह भौंडे तर्क देकर सत्ता में बने रहने की तार्किकता प्रस्तुत कररहीहै।

दस जनपथ के इशारों पर नाचने वाली सरकार अपनी नाकामियों, मजबूर प्रधानमंत्री, महाघोटालों और सांसद खरीदकर विश्वास मत जीतने जैसी अनैतिकता से जनता का ध्यान हटाने के लिए 'हिन्दू आतंकवाद' व 'भगवा आतंकवाद' जैसे जुमले गढ़कर उन्हें 'सच' साबित करने पर तुली हुई है। इसके लिए सीबीआई का खुलकर दुरुपयोग किया जा रहा है और पूरी बात सामने लाने की बजाय संप्रग सरकार चरणबद्ध तरीके से हिन्दुत्व विरोधी राजनीतिक षडयन्त्र को आकार देते हुए बड़ी चालाकी से एक के बाद एक 'खुलासे' कर रही है। एक नए 'खुलासे' में भाजपा सांसद योगी आदित्यनाथ और आर्ट आफ लिविंग के प्रवर्तक श्री श्री रविशंकर महाराज का नाम जोड़ दिया गया है। जबकि दोनों ही सन्तों ने इस पर सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा है कि हिन्दू कभी आतंकवादी नहीं हो सकता। सरकार के इस दुष्प्रचार को आगे बढ़ाने के लिए सीबीआई जानबूझकर बीच-बीच में ऐसी बातें 'लीक' करती रहती है जो चर्चित हों। स्वामी असीमानन्द के इकबालिया बयान के नाम पर ऐसी ही कुछ बातें 'लीक' की गईं। उस 'लीक' के लिए जिम्मेदार कौन, यह तलाशने के लिए अब अदालत में मामला चल रहा है, सीबीआई उसमें फँसती दिख रही है। न तथ्य, न कोई सिलसिलेवार जाँच, फिर पूर्व नियोजित बातें उछालने का क्या अर्थ है? आश्चर्य तो यह है कि मक्का मस्जिद, अजमेर दरगाह और समझौता एक्सप्रेस कांड में सरकारी जाँच एजेंसियाँ पहले ही पूरी जाँच-पड़ताल करके इंडियन मुजाहिद्दीन, सिमी और लश्करे तोएबा से जुड़े पाकिस्तानी आतंकवादियों को दोषी ठहरा चुकी हैं, अब उनमें 'हिन्दू आतंकवाद' का झूठ प्रक्षेपित करने का प्रयास किया जा रहा हे। कांग्रेस की इस वोट राजनीति ने बैठे बिठाए पाकिस्तान को भारत के खिलाफ एक कूटनीतिक हथियार दे दिया है और वह संप्रग सरकार से सवाल कर रहा है कि उसने 'हिन्दू आतंकवाद' के खिलाफ क्या कार्रवाई की। अगले सप्ताह भारत-पाकिस्तान के बीच गृह सचिव स्तर की वार्ता में पाकिस्तान यह सवाल उठा सकता है, उसका जवाब ध्यान में रखकर भी संप्रग सरकार ने पूरी जाँच समग्र रूप से राष्ट्रीय जाँच एजेंसी को सौंपे जाने की कवायद शुरू कर दी है। यानी यह सरकार अपने ही बुने जाल में पाकिस्तान के सामने तो फँस ही गई है, इसने अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर राष्ट्रीय सम्मान को भी दाँव पर लगा दिया है कि जो पाकिस्तान जिहादी आतंकवाद के नाम पर भारत से आँखें चुराता था, अब वह खुद भारत पर सवाल दाग रहा है। इन दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों से देश को बाहर निकालना है तो इन तत्त्वों को सत्ता से बेदखल करनाही होगा।(**पांचजन्य दिल्ली 3 अप्रैल, 2011 से साभार**)

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

संसार में क्यों आए हैं और क्या लेकर जाना है

इस धरती पर अमृत क्या है? मानव मन का बांछित स्वर्ग क्या है? वह क्या है? जिसे पाकर मनुष्य देव बन जाता है? वह क्या है जो अन्धकार का शत्रु है? वह क्या है प्रकाश जो निरन्तर नृत्य करता है?

इन प्रश्नों का उत्तर है अध्यात्म। अध्यात्म वह शब्द है, जिसमें जीवन की सफलता का सार छिपा है। अणु बम से भी अधिक शक्तिशाली शस्त्रों का सामना करने का सामर्थ्य उत्पन्न करने वाला ब्रह्माण्ड है अध्यात्म। अध्यात्म अर्थात् आत्मज्ञान, मनुष्य क्या है, क्यों है, किसलिए है और जो वह है वह वस्तुतः क्या है, यह जानना ही अध्यात्म है। अपने को जानना कितना साधारण किन्तु कितना कठिन है, इसकी कल्पना भी साधारण नहीं। व्यक्ति की महत्ता का स्रोत इस विज्ञान में है इसलिए ज्ञान की अनन्त महिमा ऋषि-मुनियों ने गाई।

अपने बिना को जाने हम कितना भटक जाते हैं। हमारे मन और मस्तिष्क सभी बदल जाते हैं। हम मृत्यु में जीवन और जीवन में मृत्यु देखते हैं। हमें निर्माण में विनाश और महानाश में निर्माण प्रतीत होता है। शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। दृश्यों का रूप बदल जाता है। पता नहीं क्या हो जाता है। इन दो मार्गों के अन्तर में। शरीर सत्य नहीं, इसका मूल्य भी कुछ नहीं। शरीर है तो जलेगा, हम प्रतिदिन देखते हैं। फिर भी नहीं देखते। एक पल भी तो नहीं लगता, मैं चला जाता हूँ तो सभी कुछ समाप्त हो जाता है और मेरे प्यारे-प्यारे शरीर को सभी जलाने हेतु उद्यत हो उठते हैं, क्यों?

ब्राह्मण इसीलिए पूज्य था कि वह अध्यात्म जानता था। विद्या का लक्ष्य ही था आत्म विज्ञान। इस विज्ञान द्वारा मनुष्य मनुष्य बनता था, वह सब कुछ पा लेता था, जिसे पाने के लिए उसने धरती पर जन्म लिया। समय के फेर ने आत्म विज्ञान के स्थान पर प्रकृति विज्ञान को महत्व दिया। हमने आत्मा को भुलाकर शरीर की उपासना आरम्भ की। शरीर का उपासक पशु बन सकता है, मनुष्य नहीं।

सचमुच बिना अपने को जाने हम कितना भटक जाते हैं। हमारे मन और मस्तिष्क सभी बदल जाते हैं। हम मृत्यु में जीवन और जीवन में मृत्यु देखते हैं। हमें निर्माण में विनाश और महानाश में निर्माण प्रतीत होता है। शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। दृश्यों का रूप बदल जाता है। पता नहीं क्या हो जाता है। इन दो मार्गों के अन्तर में। शरीर सत्य नहीं, इसका मूल्य भी कुछ नहीं। शरीर है तो जलेगा, हम प्रतिदिन देखते हैं। फिर भी नहीं देखते। एक पल भी तो नहीं लगता, मैं चला जाता हूँ, तो सभी कुछ समाप्त हो जाता है और मेरे प्यारे-प्यारे शरीर को सभी जलाने हेतु उद्यत हो उठते हैं, क्यों? कभी सोचा है आपने? क्या कारण है इसका? शरीर को जीवन ने सजाया, आत्मा को भुलाया, पर आत्मा गई तो शरीर भी जलाया। सत्य तब प्रकट होता है जब सत्य समाप्त हो जाता है। आज मनुष्य अन्धा हो चुका है। प्रकृति विज्ञान की सीमा लाँघ उसने अपने को प्रभु से भी महान समझ लिया है। किन्तु पशुता के उभार के अतिरिक्त इस विज्ञान की देन और क्या है?

आत्मा परमात्मा का संयोग है। भोग क्या है। देह प्रकृति का मिलना। देह प्रकृति मिलकर जब आत्म तत्त्व विस्मृत कर देती है, तब महानाश नृत्य करता है, किन्तु देह प्रकृति मिलन में जब देह की ज्ञानेंद्रियाँ आत्मतत्त्व जान, देह प्रकृति से लाभ उठाकर भी कभी मैं को विस्मृत नहीं करती, तब प्रकृति साधन बन जाती है, साध्य नहीं रहती। आत्मतत्त्व अपने उत्कर्ष के लिए प्रकृति का लाभ प्राप्त करता है, प्रकृति में लीन नहीं होता। आत्म तत्त्व को जान मैं देह का प्रयोग आत्म तत्त्व के उत्कर्ष हेतु कैसे करूँ? प्रकृति के विशाल भंडार से कैसे वह साधन खोजूँ जो आत्म तत्त्व के उत्कर्ष का कारण बने? अपने को जान कर (शेष पृष्ठ 38 पर)

आपके-पत्र

'यमुना सफाई योजना' पर अमल

महोदया, यमुना को फिर से साफ-सुथरा बना कर उसमें जल का सतत प्रवाह सुनिश्चित करने के प्रयास में गति लाने के उद्देश्य से दिल्ली के एक शिष्टमण्डल ने केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री श्री जयराम रमेश से मुलाकात की। उन्हें प्रस्तुत ज्ञापन में निम्नलिखित आवश्यकताओं के प्रति उनका ध्यान आकर्षित किया।

उच्चतम न्यायालय द्वारा काफी समय पहले दिए गए निर्देश के तहत हरियाणा राज्य यमुना नदी के लिए पर्याप्त जल की आपूर्ति करे, हरियाणा और दिल्ली में जहाँ-जहाँ से होकर यमुना बहती है, गन्दे नालों या अन्य प्रकार से मल, गन्दा पानी व कचरा नदी में जाने से रोकना, यमुना में पूरे साल पानी बहता रहे और इसका जल कम से कम नहाने लायक जरूर हो, इसका प्रबन्धदिल्ली और हरियाणा में बने समस्त मल शोधन संयन्त्र सुचारु रूप से काम करें, यह सुनिश्चित करना, और नदी ताल व झील आदि बनाकर वर्षा जल संचय की व्यवस्था।

-पदमचन्द गुप्ता,कक्ष क्र.27 नार्थ एंड कॉम्पलेक्स, रामकृष्ण मार्ग, नई दिल्ली-1

श्रीमती राकेशरानी जी

आशीर्वाद

फरवरी अंक में आपका सम्पादकीय पढ़ा वर्तमान स्थिति का वास्तविक चित्रण किया है। आपकी लेखनी का तो प्रत्येक बुद्धिजीवी को स्वागत करना ही पड़ेगा। अस्तु। आपके दिवंगत पति महात्मा वेदभिक्षु: जी की अमरवाणी वास्तव में महत्वपूर्ण है। प्रत्येक अंक में महात्मा जी की अमरवाणी प्रकाशित होती रहती है पढ़ने योग्य होती है। मेरा निवेदन है कि उनके लेखों की पुस्तक छपनी चाहिए जिससे उनके विचार स्थाई रह सकें। जनज्ञान में पाठक पढ़कर रख देता है।

आशा है मेरे निवेदन को स्वीकार करेंगी। जनज्ञान परिवार को आशीर्वाद। **-दयानन्द का सेवक स्वामी वैदिकानन्द, वैदिक सदन, झाबुआ, इन्दौर(म.प्र.)**

महोदया,

इतिहास में महारानी लक्ष्मीबाई का नाम वीरांगनाओं में सबसे ऊपर है। अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 में युद्ध करके देश की आजाद कराने वाले नेताओं में महारानी झांसी, लक्ष्मीबाई का नाम अमर है वे वीरता की साक्षात मूर्ति थीं। जनरल ह्यूरोज 20 हजार से ऊपर की सेना लेकर इग्लैण्ड से इस विद्रोह को दबाने आया था। उसने लिखा है कि 'शी वाज दी बैस्ट एंड ब्रेवेस्ट ऑफ देम औल'। यानी वे सबसे अधिक योग्य और वीर थीं। उन्होंने अन्तिम समय में युद्ध को विपरीतदियाा में जाते देख कर अपने सैनिकों से कहा था कि ''अपने साथ एक-एक लकड़ी बाँध लो''। ताकि मेरे मारे जाने पर तुरन्त मुझे अग्नि समर्पित कर देना। ये विदेशी मेरी लाश को छू न पाऐं। वे अनेक सैनिकों से लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई थीं। उनके मरने पर उन्हें बाबा रामचन्द्र दास की कुटिया पर उन्हें तुरन्त अग्नि समर्पित कर दिया गया था। अंग्रेज उन्हें कभी गिरफ्तार न कर सके। किन्तु जी.टी.पर ''झाँसी की रानी'' सीरियल में 15 फरवरी रात्रि में दिखाया गया है कि नेल्सन नामक अंग्रेज सेनापति ने उन्हें गिरफ्तार कर, हथकड़ी बेड़ी पहनाकर एक लकड़ी के ड्रम में बन्द कर दिया था। फिर झाँसी की सड़कों पर पैरों से ठोकर मारते हुए घुमाया। और जगह-जगह पर जनता को दिखाया कि हमने रानी को कैद कर लिया है। यह प्रसारण उनकी कीर्ति को धब्बा लगाने वाला, असत्य एंव उनकी चरित्र हत्या करने वाला है। इससे करोड़ों भारतवासियों की भावनाओं को ठेस लगी है। ऐसे सीरियल बनाने वाले को भारतीय जनता से क्षमा माँगनी चाहिए और सही बात अपने प्रसारण में दिखानी चाहिए।

-जुगल किशोर उपाध्याय, जिला अध्यक्ष, हिन्दू महासभा, आगरा (उ.प्र.)

क्या सुरक्षित है शहीदों का सम्मान

महोदया,

भ्रष्ट आचरण के इस बढ़ते शोर शराबे के बीच तीन ऐसी घटनायें और घटीं, जिनके कारण राष्ट्र के आत्म-विश्वास एवं सुरक्षा पर देशभक्त समाज को, जो व्यथित तो पहले से ही था, भविष्य के बारे में और भी चिन्तित कर दिया है। प्रथम-कांग्रेस के महासचिव ने भारत को विखंडित करने वाले पाकिस्तान के जनक मोहम्मदअली जिन्ना के बचाव में वह कह दिया

जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, ''कि हिन्दू और मुस्लिम दो कौम(राष्ट्र) हैं, यह नारा जिन्ना ने नहीं, बल्कि वीरसावरकर ने दिया था। मध्य प्रदेश पूर्व मुख्यमंत्री, राष्ट्र की कीमत पर असीम सुविधाओं एवं ऐश का खुला भोग करने वाला दिग्गी राजा क्या जाने कि वीर विनायक दामोदर सावरकर ऐसे देशभक्त थे जिन्होंने अखण्ड भारत की आजादी के लिए सब कुछ कुर्बान किया, अंडमान जेल में कोल्हू के बैल की जगह, रोज एक टिन तेल पेला, कमी पर कोड़े खाये, कील काँटों में दिन और रात काटे, जो असंख्य देश-प्रेमियों के आदर्श और प्रेरणास्रोत हैं, पवित्र हैं क्योंकि अपना सर्वस्व निछावर करके भी एक ही आह्वान किया-''अखण्ड भारत''। देशभक्त समाज, आज उनकी प्रतिमा को हृदय में संजोये नमन करता है न कि कश्मीर, तिब्बत, 43000 कि.मी. क्षेत्र चीन को छिनवाने वालों को और न ही 400 लाख बंगलादेशियों को आसाम, पश्चिम बंगाल आदि में नागरिकता एवं सब सुविधा देने वाले, लालची देशद्रोहियों को, मजहबी जेहाद में असंख्य निरअपराध देशवासियों की निर्मम हत्या करने वालों को संरक्षण एवं समर्थन देने वालों को। केन्द्रीय सत्ता में बोट बैंक के इन लालची और महत्वाकांक्षी नेताओं को इस सनसनीखेज खुलासों से कोई सरोकार नहीं कि पाकिस्तान ने तेजी से अपने न्यूक्लियर बमों का विस्तार किया है और आगे भी तेजी से कर रहा है। उसके पास 110 न्यूक्लियर बम है और फ्रांस को पछाड़कर वह विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी न्यूक्लियर ताकत है और यह भारी न्यूक्लियर जखीरा किसी अन्य देश के खिलाफ नहीं केवल भारत पर लक्ष्य साधे हुए है। इसके साथ ही यदि चीन के 240 न्यूक्लियर बम जोड़ दिये जाएं तो पाक-चीन के भारत विरोधी गठबन्धन के पास 350 बमों का एक जबरदस्त भण्डार है, जिसके मुकाबले भारत के पास मात्र 60-70 बम हैं। इस असमानता को कोई आश्चर्य नहीं कि जब चाहे, चीन और पाकिस्तान, भारत को धमकी देने का कोई न कोई बहाना ढूँढ ही लेते हैं।

इसी परिपेक्ष में, ''दी फ्यूचर आफ दी ग्लोबल मुस्लिम पॉपूलेशन'' ने खुलासा किया कि विश्व में 2030 में मुस्लिम आबादी, जो गैर मुस्लिमों की अपेक्षा, दुगुनी गति से बढ़ रही है, वह पूरे विश्व की आबादी की 26.04 प्रतिशत हो जाएगी। भारत में तो 2001 की जनगणना में पहले ही यह तथ्य आ चुका है कि सन् 1991-2001 के बीच जब हिन्दू और ईसाई आबादी क्रमशः 20 और 23 प्रतिशत बढ़ी, मुस्लिम आबादी तेजी से 36 प्रतिशत बढ़ी। इस सब के बीच गहन चिन्ता का एक प्रश्न यह है कि वर्तमान केन्द्रीय सत्ता क्या कभी वीरसावरकर, नेताजी सुभाष, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरु, लाला लाजपतराय, सरदार ऊधमसिंह, कुँवरसिंह जैसे देश की आजादी के लिए सब कुछ कुर्बान करने वालों को सम्मान दे सकती है? जो नेतृत्व अपनी सारी शक्ति पी. जे. थामस, क्वात्रोची, ए.राजा, कलमाड़ी, अफजलगुरू और आजमगढ़ के मुफ्ती आबू बसीर आदि को बचाने में लगा रही है क्या वह देश को बचा पायेगी। -डॉ.हरपाल सिंह

आर-3/1,राजनगर,गाजियाबाद (उ.प्र.)

समय का आह्वान्:सुने कोई दयानंद सा महान

आदरणीया,

लश्कर में जीवाजीगंज, जनकगंज, नई सड़क व लक्ष्मीगंज के संगम मार्ग को 'हनुमान चौराहा' कहते हैं। मैं जीवाजीगंज में रहता हूँ। शहर में कहीं भी जाने के लिये इस चौराहे को पार करना पड़ता है। जीवन के तीन तिराहे यानी लगभग 75 वर्ष की आयु इस हनुमान चौराहे को पार कर व्यतीत की है। पर लगता है कि चौराहा तो रहेगा, नाम भी हनुमान चौराहा होगा, परन्तु हनुमानजी नहीं होंगे। भक्त किसे प्रणाम कर आगे निकलेंगे? अतुलित बलशाली हनुमानजी ताले में बन्द थे और उनका घर, जिसमें वे निवास करते थे, प्रसाद पाते थे, ढहाया जा रहा था। मौहम्मद गजनवी द्वारा नहीं, बल्कि मन्दिर के मालिक द्वारा, जो अपनी जीविका पीढ़ियों से इस मन्दिर के चढ़ावे से चलाता आ रहा था। शासक वर्ग, शासकीय मशीनरी, पुलिस बल, न्याय व्यवस्था (अधिकांश हनुमान भक्त) का आदेश था कि मन्दिर स्वयं हटा लिया जावे या जे.सी.बी. मशीन से हटवा दिया जावेगा।

11 मार्च को सोमनाथ मन्दिर पर दाहर व महमूद गजनवी (गजनी) के आक्रमणों को याद दिलाने के लिये दिल-दिमाग पर दिन भर हथौड़े चलाता रहा। दो चार बार बाजार जाना पड़ा। चर्मचक्षु तो मन्दिर को टूटता देख रहे थे, पर अन्दर की आँखें सोमनाथ पर हुए छैः ध्वन्सों की याद दिला रही थी। विधर्मियों ने जिसे छैः बार ढहाया था, धूल-धूसरित किया था। वर्तमान् युग में जो सोमनाथ मन्दिर हम देख रहे हैं, उसके निर्माण में लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का सक्रिय सहयोग था और

उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद के कर कमलों द्वारा हुआ था। हाँ, तो मेरा मन मुझे सोमनाथ मन्दिर पर मौहम्मद गजनवी (गजनी) के आक्रमण की ओर बार-बार खींच रहा था। पुजारियों-पूजा के अरि अर्थात् पूजा के दुश्मनों का अनुरोध था कि धन-सम्पदा चाहे जितनी ले लो पर सोमनाथ की मूर्ति मत तोड़ो, सोमनाथ-शिव, महाकाल की प्रतिमा अधर में लटकी हुई, सैकड़ों वर्षों से, अरबों रुपये की सम्पत्ति, एकत्रित करा चुकी थी, यदि वह खण्डित नहीं होगी, तो फिर श्रद्धालु जनता अकूत सम्पत्ति इकट्ठी करा देगी। गजनी नहीं माना। उसने घोषणा की हम बुतशिकन (मूर्ति भंजक) हैं, बुत परस्त (मूर्ति पूजक) नहीं। हथौड़ों की चोटों ने त्रिभुजाकार चुम्बकीय खण्डों को तोड़ दिया-महाकाल की प्रतिमा धड़ाम से नीचे आ गिरी। अरबों के जवाहरात गजनी को मिले। जब यह सब तथ्य-वास्तविक सत्य, मुझे आज मालूम है, तो क्या लौहपुरुष सरदार पटेल को अथवा डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जैसे विद्वानों को नहीं मालूम होंगे? जन्मजात संस्कारों का प्रभाव कहिए या राजनैतिक सूझबूझ का तकादा। संवेदनशील-अतिसंवेदनशील बिन्दुओं पर "मस्तिष्क" को मत हावी होने दो। सम्भवत: पं. जवाहरलाल नेहरू ने सैक्यूलरवाद-धर्मनिरपेक्षता का उल्लेख करते हुए महामहिम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जी को सोमनाथ न जाने का परामर्श दिया था। अस्तु।

मैं, अपने आपसे लड़ रहा था। दो दिन पहिले चाय पीते हुए पत्नि ने कहा, देखो! पत्रिका में प्रकाशित हुआ है, "भैरो जी रो रहे हैं।" मुझे मालुम था कि माधवगंज में तोड़फोड़ चल रही है और वहाँ कभी भैरोजी का मन्दिर था अब भैरो जी रो रहे हैं। मैं सोचने लगा कि पत्नि का साफ इशारा है कि भैरो जी का काम तो रुलाना है, स्वयं रोना नहीं है।

पूरा ग्वालियर स्तब्ध है, मौन है, गूँगा-बहरा हो गया है। प्रशासन ने आश्वासन दिया है कि प्रतिमाओं को सम्मानपूर्वक एक स्थान पर एकत्रित कर दिया जावेगा। उनका शुद्धि संस्कार हो जावेगा और फिर उनका भजन-पूजन किया जा सकेगा। सबने इस आश्वासन पर मौन होकर स्वीकृति दे दी है। मूर्ति पूजक हिन्दु सहिष्णु हैं, अहिंसा वादी हैं, अधिकांश सैक्यूलर-धर्मनिरपेक्ष हैं। जनसंख्या में तीन चौथाई से अधिक होने के कारण उनसे इन्हीं गुणों की अपेक्षा की जाती है और निर्विवाद रूप से इस तुला पर वे खरे उतरे हैं। बाबरी जो स्वयं रामलला का मन्दिर था, विध्वंस कर, मुगल आक्रांता बाबर द्वारा बनाई गई थी, का 6 दिसम्बर 1992 को गिराया जाना, आज 19 वर्ष बाद भी दिग्गज हिन्दुओं को न्यायालय में घसीट रहा है। बहुदेवतावादी पूजकों का यही हश्र होना है।

महर्षि दयानंद ने देश की इस क्षेत्र में हुई पाँच हजार साल की दुर्दशा का आध्यात्मिक, सामाजिक व ऐतिहासिक मूल्यांकन किया था और केवल उद्घोषणा ही नहीं की थी, बल्कि जान हथेली पर रखकर प्रचार किया था कि केवल एकेश्वरवाद ही भारतीयों को बचा सकता है। विभिन्न देवी देवताओं की विभिन्न पूजा पद्धतियों से उपासना करने वाला हिन्दू कभी एकता के सूत्र में बँध नहीं सकता। महर्षि दयानन्द को मूर्तिपूजा विरोधी, हिन्दु की आस्थाओं का विरोधी घोषित कर दिया गया। मूर्तिपूजा की आस्था को सुदृढ़ करने वाले गढ़-काशी-वाराणसी को महर्षि ने छै: बार जगाया। अरे! कोई तो बताओ-वेद में मूर्ति पूजा कहाँ है? उस समय के एक प्रमुखतम ने कहा-दयानन्द, यदि तुम मूर्तिपूजा का विरोध छोड़ दो तो हम तुम्हें विष्णु का अवतार घोषित कर देंगे। तुम्हारी सर्वत्र पूजा होगी। दयानन्द नहीं माने तो उन स्वामी और उनके सहयोगी विद्वानों ने कहा- वह तो नंगा है, उसका क्या बिगड़ेगा? हमारे तो हलुवा-मांडे सब चले जावेंगे। कौन पूछेगा हमें? अध्येताओं के अनुसार काशी-नरेश ईश्वरीनारायणसिंह ने पूर्ण विनयपूर्वक महर्षि दयानन्द से क्षमा याचना की। किस बात के लिये? अन्याय का साथ देने, मूर्ति पूजकों के बहकावे में आकर काशी शास्त्रार्थ में पराजित घोषित करने के लिये। दयानन्द ने किसी भी मूर्तिपूजक हिन्दू से नहीं कहा कि तुम मन्दिर तोड़ दो, मूर्तियाँ फैंक दो। लोगों ने स्वयं ही मूर्तियाँ सैकड़ों की संख्या में नदियों में प्रवाहित कर दीं। यह काम एक नंगा फकीर, अवधूत दयानन्द ही करा सकता था। आज के किसी भी आर्यसमाजी विद्वान् या सन्यासी में यह शक्ति, ताकत, या आत्मिक बल कहाँ जो इस ओर उपदेश करने की भी हिम्मत कर सके। 150 वर्षों से कम समय में ही आर्यसमाज टूटता, विखण्डित होता हुआ, कानूनी झगड़ों में उलझा हुआ, अपने अहं की, पदलिप्सा की होड़ में लगा हुआ दिखाई दे रहा है। दयानन्द, एक बार तो आजा। स्वतन्त्र भारत की दशा परतन्त्र भारत से भी ज्यादा, कहीं ज्यादा गिरी हुई दिखाई दे रही है। **-अभिमन्यु कुमार खुल्लर, सेवानिवृत्त, वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र) 22 नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर**

नव सम्वत्सर का महत्व

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में विक्रमी सम्वत् तथा उसके अन्तर्गत पड़ने वाली तिथियों का विशेष महत्व है चाहे एक बच्चे के जन्म की बात हो, नामकरण संस्कार की बात हो, विद्यालय भेजने की बात हो, विवाह हो, ग्रह प्रवेश हो या किसी के राज सिंहासन पर बैठने की बात शुभ लग्न व मुहूर्त दिखवाने हैं। उनके अनुसार कोई भी कार्य यदि एक अच्छे मुहूर्त में प्रारम्भ हो तो उस काम की सफलता में चार चाँद लग जाते हैं। आखिर पंडित विद्वान लोग किस आधार और कैसे इस मुहूर्त को निकालते हैं। इस सब का आधार है विश्व की सर्वाधिक प्राचीन व वैज्ञानिक कालगणना पद्धति विश्व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल वं निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल तथा उनके सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं। सम्वत् यानि सम्वत्सरों के बारे में यजुर्वेद के 27वें व 30वें अध्याय के मंत्र क्रमशः 45 व 15 में भी विस्तार से वर्णन है।

विक्रमी सम्वत् का शुभ-आरम्भ (4 अप्रैल से)

भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष, उल्लास जगाते हुए एक सही दिशा प्रदान करते हैं, उन्हें हम उत्सव से मनाते हैं।

अपने स्वाभिमान, राष्ट्रप्रेम को जगाने वाला ऐसा ही प्रसंग आता है चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को, जिस दिन से भारतीय नववर्ष प्रारम्भ होता है। आइये इस दिन की महानता के प्रसंग देखते हैं-

ऐतिहासिक महत्व

1. यह दिन अपनी काल गणना का प्रथम दिन अर्थात् सृष्टि रचना का पहला दिन है। आज से एक अरब, सत्तानवें करोड़ उनतीस लाख, उन्चास हजार, एक सौ दस (1,97,29,49,110) वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना प्रारम्भ की।

2. **विक्रमी सम्वत का पहला दिनः** उसी राजा के नाम पर सम्वत् प्रारम्भ होता था जिसके राज्य में कोई चोर ना हो, अपराध ना हो भिखारी न हो और इसी दिन सम्राट विक्रमादित्य ने 2068 वर्ष पहले ऐसा राज्य स्थापित किया था।

3. प्रभु राम ने भी यही दिन लंका विजय के बाद अयोध्या आने के बाद राज्याभिषेक के लिये चुना था अर्थात् प्रभु राम का राज्यभिषेक दिवस भी यही है।

4. नवरात्र स्थापना शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात्, नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। प्रभु राम के जन्म दिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन उत्सव मनाने का प्रथम दिन।

5. **गुरू अंगदेव प्रगटोत्सव :** सिक्ख परम्परा में उनके द्वितीय गुरू अंगददेव का जन्मदिवस।

6. **आर्यसमाज स्थापना दिवस :** समाज को श्रेष्ठ (आर्य) मार्ग पर ले जाने हेतु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसी दिन को आर्यसमाज स्थापना दिवस के रूप में चुना।

7. **सन्त झूलेलाल जन्मदिवस :** सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक सन्त झूलेलाल का भी यह जन्म दिवस है।

8. **शालिवाहन जन्म दिवस :** विक्रमादित्य की भाँति शालिवाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना।

9. **युगाब्द सम्वत्सर का प्रथम दिन :** 5113 वर्ष पूर्व युधिष्ठिर का राज्यभिषेक भी इसी दिन हुआ।

10. डा॰ केशवराव बलीराम हैडगेवार जन्म दिवस है जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक थे।

प्राकृतिक महत्व

1. बसंत ऋतु से सम्बन्ध बसन्त यानि उल्लास, उमंग, खुशी चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि।

2. **फसल पकने का प्रारम्भ :** किसान की मेहनत का फल। क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है। जिससे राष्ट्रप्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके?

आज देश करवट ले रहा है। सदियों की निद्रा दूर कर भारत अँगड़ाई ले रहा है। इस देश की संस्कृति के मूल तत्व एक सत् विप्राः बहुधा वदन्ति याने सत्य एक है उसे लोग भिन्न-भिन्न नामों से जानते हैं हम सब साथ-साथ चलें और एक दूसरे से सहयोग करते चलें तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने राष्ट्र की पताका दुनियाँ भर में सबसे ऊँची फहराऐंगे।

इस वर्ष की महत्ता से जन-गण को अवगत कराएं। अगले वर्ष और अधिक से यह पर्व मनाएं।

सागरमाथा

यह गंगाजल है या
हिमालय के आँसू
हिन्द महासागर में छलकते
बयान कर रहे हैं प्रहारों को
किए गए थे
हिम-शिखरों पर
किसी हिंसा-प्रतिहिंसा द्वारा
कलेजा चीर गई थी उसका
युद्ध की गोलियाँ
देवभूमि पर घायल हुआ था
भारत माँ का मस्तक
सैनिकों के लहू में सना
बहुत रोया था हिमालय
और अब आतंक का भस्मासुर
लील रहा है आबाल-वृद्ध को
सैलाब बन उतर आए हैं
तमाम दुनियाँ के आँसू
ज्वार-भाटे की तरह
देख रहा हूँ
सागर तीरे टकराती लहरों में
थककर लेटी हैं वे दे रही हैं सन्देश
विश्व-शान्ति का
'ऊँ द्यौ शान्ति' के शब्दों में।

हिमालय को कई बार रोते देखा
आँसू बहाते जार-जार
पहली बार जबमैंअनुसन्धान-पथ पर
किसी कोल्टा से मिला था
बर्फीली हवाओं में
एक कंबल को तरस रहा था
कर्ज में दबी रहती थीं
उसकी पीढ़ियाँ
मैंने देखे थे खानाबदोश
गुज्जरों और गद्दियों के काफिले
ढूँढते चारा अपने पशुओं के लिए
किसी गुफा में काट लेते थे
यायावरी रातें
मैंने देखी थी कमान बनी कमर
बोझा ढोती
शेरपा और भोटिया की
जो पर्वतारोहियों को पहुँचाते
कंचनजंघा सागरमाथा तक
गुमनाम गुजर जाते वे
किसी के नाम के लिए
लगता जैसे हिमालय काँप उठा हो
हाँफते हिमपुत्रों को देख
जानलेवा खड़ी चढ़ाई पर

और रोने लगता अभावों के आँसू
जो उतर आए हैं आज सागर तीरे
मेरी स्मृति के आँसुओं में
इतिहास के/बहने लगते हैं रक्ताश्रु
उभरते हैं कुछ अक्षर
बदलते नेपाल से सीखो-
जहाँ ढह गए हैं भ्रातृघाती राजतन्त्र
और जनतन्त्र के सवेरे ने दस्तक
दी है सागरमाथा को!

इदन्नमम्

इच्छाओं के हाँफते लक्ष्य
कंठकाट होड़/जोड़-तोड़
समझौतेऔर अहंभरी उपलब्धियाँ
जीवन-पथ के सहयात्री तो हैं
पर सर्वस्व नहीं
शायद हम भूल जाते हैं
प्रकृति-नियति के चमत्कार को
चढ़ते सूरज के नमस्कार को
काश/आकाश की ऊँचाई पर
'इदन्नमम्' हमारा मित्र होता
तो हम हम न होते
हममें सब/और सबसे हम होते।

-डा. श्यामसिंह शशि (विश्व कविता की ओर)

आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवति परिचय सम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा(पं.) द्वारा आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के दूसरे परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं।यह सम्मेलन 17 अप्रैल 2011 को आर्यसमाज रोहिणी सेक्टर-7 में होना प्रस्तावित है। अत: जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे 5/-रु. का डाक टिकट लगा अपना पता लिखा लिफाफा भेजकर पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.delhisabha.com से डाउनलोड कर सकते हैं।

डा.कुशलदेव को श्रद्धांजली

नांदेड: आर्यजगत् के प्रसिद्ध लेखक,विद्वान्,शोधज्ञ तथा वक्ता डॉ. कुशलदेव जी का कोलकाता में आकस्मिक निधन हो गया। महाराष्ट्र के लातूर जिले के वडवल गाँव में जन्मे डॉ. कुशलदेवजी का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण उत्तर भारत रहा है। वे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के ऐतिहासिक तथ्यों की खोज में जीवन के अन्तिम श्वास तक लगे रहे। उनका आकस्मिक निधन आर्यसमाज और साहित्यिक जगत् के लिए दु:खद घटना है। महाराष्ट्र के गुरुकुलीय स्नातक जिनमें डॉ. चंद्रशेखर लोखंडे,प्रा. ओमप्रकाश होलीकर, प्रा.चंद्रदेव कवडे,वैद्य ब्रह्मदत्त पाठक,प्रा सत्यकाम पाठक, प्रा.रविन्द्र शिंदे, श्री राजवीर शास्त्री, सोलापुर,श्री प्रकाशवीर आर्य, प्रा.वि.जयकुमार शिंदे प्रा.भानुप्राकाश शास्त्री, श्री चंद्रहास शास्त्रीआदि सभी ने स्व. कुशलदेव शास्त्री को श्रद्धांजली दी। शान्ति यज्ञ में सैकड़ों आर्यजन तथा साहित्यकार उपस्थित थे।

अंग भंग वैज्ञानिक ऑकिंग और प्रभु-तरंग

'हे रुद्र! नमस्ते!! हम तुमसे युद्ध नहीं लड़ सकते'

-देवनारायण भारद्वाज

वैदिक आश्रम की दयानन्द वाटिका में प्रातः भ्रमण हेतु अनेक संभ्रान्त जन आते रहते हैं। जब मेधातिथि वहाँ पहुँचे तो पत्थर की पटिया पर बैठे हुए कुछ गुन-गुना रहे थे, वहाँ पहले से ही विराज रहे थे सेवातिथि। मेधार्ती बोले मित्र मन में ही क्या गुन-गुना रहे हो? जरा हमें भी सुनाइये। सेवातिथि ने मधुर स्वर में गीत गाना आरम्भ कर दिया।

ओंम् प्राणि पशुपते नमस्ते। ओंम् नमस्ते, ओंम् नमस्ते।।
क्यों हुए क्रोध से उग्र बड़े। मुट्ठी में पकड़े वज्र खड़े।
नहीं हमारी ओर मोड़ना, हम असहाय अति व्यग्र पड़े।
हम तेरे लिये तरसते। ओंम् नमस्ते, ओंम् नमस्ते।।1।।
जो तेरी भुजा फड़कती है। नभ विद्युत बनी कड़कती है।
अन्यत्र दुष्ट पर जा पहुँचे, जो मारक तड़ित तड़कती है।
हम रहें सदा इससे बचते। ओंम् नमस्ते, ओंम् नमस्ते।।2।।
हम होवें हिंसा ग्रस्त नहीं। तब क्रोधानल से त्रस्त नहीं।
हम अघ-अनर्थ से बचे रहें, हम होवें दीन अशक्त नहीं।
तेरे उपदेश रहें सुनते। ओंम् नमस्ते, ओंम् नमस्ते।।3।।
हम नहीं युद्ध कर सकते हैं, हम क्या तुझसे लड़सकतेहैं।
हो तुम्हीं हमारे संरक्षक, हम तुम्हें नमस्ते करते हैं
हम तेरे संकेत समझते। ओंम् नमस्ते, ओंम् नमस्ते।।4।।
तुम महा रुद्र परमेश्वर हो। सुधारकर्त्ता सर्वेश्वर हो।
हे हंस ध्वस्त मत कर देना, तुम सर्जक हो प्रलयेश्वर हो।
हम तुमसे नत होकर चलते। ओंम् नमस्ते, ओंम् नमस्ते।।5।।

वहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों ने सेवातिथि के मधुर गायन के लिये आभार व्यक्त किया। सभी ने दैनिक यज्ञ में भाग लिया। पूर्णाहुति के बाद पुरोहित पण्डित उदयवीर शास्त्री ने अपने हाथ में एक पत्रिका उठा ली, जिसमें यह मन्त्र गीत छपा है। पुरोहित जी ने कहा-गीत आप लोगों ने सुन लिया मन्त्र मैं सुनाये देता हूँ। सुनिये।

मा नोऽभि भ्रा मत्यं देवहेतिं मानः क्रधुः पशुपते नमस्ते। अन्यत्रस्मद्दिव्यां शाखां विधनू।।1।।

मानो हिंसीरधि नो ब्रूहि परिणो वृङग्धि मा क्रुधः। मात्वया समरामहि।।2।। (अथर्व.11.2.19.20) मन्त्र पाठ थमते ही वहाँ उपस्थित पण्डित शिवशर्मा ने पुरोहित द्वारा समाधान के लिये अखबार में कल ही छपा एक समाचार सुना दिया। ''ईश्वर ने नहीं बनायी दुनियाँ''-परम्परागत धार्मिक मान्यताओं को चुनौती देते हुए ब्रिटिश वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग ने दावा किया है कि ईश्वर ने ब्रह्माण्ड की रचना नहीं की है। अपनी नई पुस्तक ''द ग्रांड डिजायन'' में उन्होंने कहा कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के लिए जिम्मेदार 'बिगबैंग' के वास्ते भौतिक विज्ञान के गुरुत्वाकर्षण के नियम उत्तरदायी हैं। इसमें ईश्वर की कोई भूमिका नहीं है। पुरोहित जी कुछ कहते इससे पूर्व प्रो. इन्द्र वर्मा चुटकुला सुनाने की मुद्रा में आ गये। एक हाथी को पता ही नहीं चला कि चींटी कब उसकी पीठ पर आ गयी। एक पुलिया को पार करना था। जिसे देखकर चींटी हाथी से बोल पड़ी ''रे तू इसे सरलता से पार कर लेगा! या मैं नीचे उतर कर बोझ कम कर दूँ।'' स्पष्ट रूप से हाथी एवं चींटी के भार में अन्तर सर्वविदित है। पर अहंकार इस भार के भेद को समझना तो दूर, उसे उल्टा-पुल्टा कर देता है! एडवोकेट अशोक सक्सेना ने एक दृश्य का वर्णन किया। सड़क पर शॉपिंग मॉल के सामने बड़ी भीड़ रहती है। बाइक पर सवार कई छात्र वहाँ आये। आपस में लड़ने लगे। एक लड़का गालियाँ देता जा रहा था, और पिटता जा रहा था। यहाँ तक कि भूमि पर गिर पड़ा, फिर भी गालियाँ दे रहा था। और पिटाई हुई पर उसके अपशब्दों की बौछार रुकी नहीं। साथी लड़के उसे पड़ा छोड़ गये, राहगीरों ने उस पर दया की, और उठाकर सामने पड़ी ठेले वाले की तिपाई पर लिटा दिया। सम्पर्क सूत्र पूछकर उसके अभिभावकों को सूचना दी। वह अब भी रोता नहीं, चिल्लाता हुआ बदला लेने की धौंस और गालियाँ ही बकता जा रहा था। राहगीरों को उसकी धूर्तता का तो पता नहीं था, वे उस पर दयाभाव प्रकट कर रहे थे, और निकलने वाली मातायें उसे पुचकार कर सहला रहीं थीं।

पत्रकार मनोहर लाल ने बकील साहब के स्वरों में अपना स्वर मिलाते हुए एक और दृश्य का हाल सुनाया। बोले मैं प्रभात बेला में किशनपुर से दुध लेने जाता हूँ। देखता हूँ-गोपालक अपनी गौंओं को दूध दुहकर घर-घर से गौग्रास खाने के लिये छोड़ देते हैं। भीड़ की भीड़

निकलती चलती है। पर पीछे से लंगड़ाती-घसीटती एक तीन टाँग की गाय आती है। एक पैर उसका टूट चुका है। एक परिवार ने कभी गाय-भैंस नहीं पाली हैं। वह उसे रोक लेता है। केवल उसी के लिये दाना-भूसी की सानी करता है। उसे सहलाता पुचकारता व कभी नहलाता भी है। उसके चरणों को माथे से लगाता और सेवा-पूजा के बाद उसे आगे जाने के लिये बढ़ा देता है। दुर्घटनावश हो गई विकलांगता का उसे दया लाभ मिल जाता है। शासन ने भी यह सुविधा हाथ पैर व दृष्टि बाधित युवक-युवतियों को वरीय-आरक्षण की सुविधा प्रदान कर रखी हैं। कुछ लोग झूँठे प्रमाण पत्र प्राप्त कर पदासीन हो जाते हैं और जब पकड़े जाते हैं तो दण्डित होते हैं। पत्रकार महोदय चुप हुए तो हिन्दी-अँग्रेजी के सर्वाधिक अखवार पढ़ने वाले अभियन्ता श्याम शर्मा ने कहा-आप लोगों को विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग के विषय में कितना पता है? चलिये मैं वताता हूँ।

पिता फ्रेंक हॉकिंग माता इसोबेल के घर इनका जन्म 8 जनवरी 1942 को आक्सफोर्ड ब्रिटेन में गैलीलियो की मृत्यु के लगभग 300 वर्ष बाद हुआ। इनकी पहली शादी 1965 में जेन विल्ड से हुई। जिससे इनके तीन बच्चे हुए। 1991 में इनका तलाक हो गया। इसके बाद इन्होंने अपनी नर्स ऐलेन मैसन से विवाह किया, लेकिन यह शादी भी छः साल से अधिक नहीं चली। मोटर न्यूरान डिजीज जैसी भयंकर बीमारी ने इन्हें 21 वर्ष की आयु में ही पूर्णतया जकड़ लिया था। जिसके कारण वे न हिल सकते हैं, न बोल सकते हैं। पूरे दिन वे अपनी कम्प्यूटर वाली ह्वीलचेयर पर बैठे रहते हैं। चमत्कारी ह्वीलचेयर में लगे कम्प्यूटर से ही वे दूसरों से संवाद करते हैं, लेखन करते हैं और जो ठान लेते हैं वह कर गुजरते हैं। इस बीमारी में मनुष्य की माँसपेशियाँ क्रमशः काम करना बन्द कर देती है। पूर्ण विकलांगता की दशा में भी, हॉकिंग का मस्तिष्क इतना चंचल क्रियाशील है कि ब्रह्माण्ड की अवूझ गुत्थियों को सुलझाने में लगा रहता है। कैम्ब्रिज में गणित के प्रोफेसर हॉकिंग कई पुरस्कारों से सम्मानित किये जा चुके हैं। उन्होंने अपनी पी.एच. डी. डाक्टर ट्यूटर डेनिस विलियम सीआमा की सहायता से पूरी की थी।

अभियन्ता श्यामशर्मा की वार्ता आगे चलती, पर इस प्रभात गोष्ठी को समाप्त कर लोगों को अपने अपने घर जाने की शीघ्रता भी थी, सो उन्होंने पुरोहित जी के विचार जानने की इच्छा प्रकट कर दी। पुरोहित जी ने कहा- वास्तव में धर्म व विज्ञान एक दूसरे के पूरक तो हैं, किन्तु धर्म की स्वतन्त्र सत्ता है, जबकि विज्ञान की यही पराधीनता है कि वह बिना धर्म के अपंगु या विकलांग हो जाता है। धर्म में विज्ञान समाहित रहता है। धर्म-"तमसो मा ज्योतिर्गमय" अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर यात्रा करता है। जब प्रकाश आ गया तो अन्ध कार का क्या काम? विज्ञान प्रकाश से अन्धकार की यात्रा करता है। प्रकृति के छिपे रहस्य को ज्ञान प्रभा से जानता है। इसकी यह जानकारी अन्तिम नहीं होती है। यही हॉकिंग महाशय अपनी बहुचर्चित पुस्तक "ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ टाइम्स(1988)" में स्वयं ईश्वर की भूमिका को सर न्यूटन के विश्वास के अनुसार स्वीकार कर चुके हैं। विज्ञान की एक स्थापना नई शोध से बदल जाती है। वेद परमात्मा की वाणी है। प्रभु पूर्ण हैं उनकी ज्ञान-वाणी भी पूर्ण है। ऊपर जिन मन्त्रों का पाठ व गीत गायन सुना है, उनसे पता चलता है कि परमात्मा न्यायकारी रुद्र है तो वह दयावान माता भी है। पता नहीं कौन से कर्म हैं जिनके दण्ड स्वरूप परमात्मा ने इस वैज्ञानिक के सारे अंग भंग कर दिये हैं, पर उसके मस्तिष्क को ज्ञान की तरंगों से भर कर दया भी कर दी है, वह उसी से ईश्वर को चुनौती दे रहा है। यदि ईश्वर कुछ नहीं, उसका विज्ञान ही सभी कुछ है तो वह इससे अपने शरीर को ही खड़ा कर लेता, तो कोई बात बनती। अपने काम चलाने के लिये जिस कम्प्यूटर पर वह आश्रित है, वह भी मस्तिष्क की देन है और मस्तिष्क ईश्वर का वरदान है। महात्मा आनन्द स्वामी ने अपनी बोध कथाओं में हाथ-पैर हीन जिस भिक्षुक का कथन किया है, वह अपनी वाणी के मधुरस के बल पर पैसे भी एकत्र कर लेता, रोटी भी प्राप्त कर लेता, खिलाने पिलाने वाले को भी बुला लेता।

नास्तिक-पुनर्जन्म अविश्वासी को भी महारुद्र भद्रांग प्रभु उसकी अमर आत्मा को अगला जन्म देते हैं। शुभ ज्ञान-चिन्तन के बल पर वह हॉकिंग को भी मिलेगा। तब उनकी देह टूटी-फूटी नहीं सुदृढ़ हो सकती है, वैज्ञानिक इसी ईश्वर के प्रकाश में उसी प्रभु के छिपाये गये कुछ रहस्य खोल लेते हैं तो उसे भूलने लगते हैं। हॉकिंग के अनुसार गुरुत्वाकर्षण नियमों के कारण ब्रह्माण्ड 'स्वतः' अस्तित्व में आया, जिसके कारण आज मानव जाति का अस्तित्व है। इनके शब्दों से स्पष्ट है कि जहाँ कोई नियम होते हैं, तो वे किसी (शेष पृष्ठ 16 पर)

महर्षि दयानन्द गाथा

भारतेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षुः)

सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।
धर्म प्रेम की दिव्य मूर्ति की हमने गाथा गानी।।

भारत के कण-कण में था जब घोर अँधेरा छाया।
पीर पुजारी मुल्लाओं ने अपना जाल बिछाया।
"वेद" ज्ञान को खोकर हमने अपना मान गँवाया।
ठोकर खाकर भटक रहे थे जिसने आन बचाया।
उसकी निर्मल गाथा ही तो, सबको आज सुनानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।1।।

गुजरात प्रान्त टंकारा में था एक बाल ने जन्म लिया।
मात-पिता ने हर्षित होकर मूलशंकर नाम दिया।
बालक पन बीत रहा था शिवरात्रि व्रत आन किया।
रात्रि जागरण में बालक ने ज्ञानामृत का पान किया।
तम का बादल हटा हृदय से बालक था अब ज्ञानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।2।।

वैभव तज कर घर से निकला सच्चा वैभव पाने को।
दर-दर डोला गुरु चरणों में, सच्ची ज्योति दिखाने को।
बालक "मूल" दयानन्द बन घूमा अज्ञान मिटाने को।
सुख की कुछ भी चाह न थी पर खोजा एक सयाने को।
"विरजानन्द" सा गुरु मिला भारत की सुघड़ निशानी।
सनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।3।।

ज्ञान पान सम्पूर्ण हुआ तो, गुरु दक्षिणा लाई।
मुझको इसकी चाह नहीं है, चाह और बतलाई।
वेद ज्ञान को भूला जग है, फैलाओ आज्ञा पाई।
गुरु चरणों में शीश नवाकर जय-जय वेद गुँजाई।
जय देव की, जय धर्म की, फैली ऋषि की वाणी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।4।।

पाखण्ड-खण्डिनी साथ लिए था ओ३म् का झंडा गाड़ा।
ज्ञान जगाने देश उठाने ब्रह्मचर्य व्रत धारा।
छोड़ो अन्धकार की राहें, नारा यही उचारा।
वेद मार्ग ही सच्चा पथ है जग का एक सहारा।
सबने माना पाप भरी माया है, आज मिटानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।5।।

घर-घर जाकर शास्त्रार्थ की ऋषि ने धूम मचाई।
सत्य भानु का उदय देख, कहते आग लगाई।
खड्डे में गिरते भारत की आकर जान बचाई।
एक प्रभु के पुत्र एक हैं, तोड़ो बन्धन भाई।
आँख खुली करवट भी बदली, महिमा जग ने जानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।7।।

दौड़ पड़े पंडित मुल्ला और पीर पादरी सारे,
ज्ञान हुआ जिनको भी सच्चा हुए न ऋषि से न्यारे।
वेद-ज्ञान का तेज निखरते हो गये प्रभु के प्यारे।
कोटि-कोटि प्राणि तो ऋषि ने, आत्म ज्योति से तारे।
सत्य प्रेम अस्त्र के लिए थी दुनियाँ सकल जगानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।8।।

गंगा के पावन तट पर योगासन आन जमाया।
ब्रह्मचर्य का तेज ऋषि ने कई बार दिखलाया।
जिस-जिस ने भी वार किए तो उसको खूब छकाया।
व्यर्थ हुई दुष्टों की चालें, सबको दूर हटाया।
ज्योतिपूर्ण उत्साह भरी है कैसी सरस कहानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।9।।

अन्धकार की दुनियाँ में थी वैदिक ज्योति जगाई।
स्वतन्त्रता की सबसे पहले ऋषि ने बात बताई।
मानव की मानवता दिल में फिर से आज बसाई।
राष्ट्र जगा, आँखें भी खोलीं, सम्भलें सारे भाई।
विश्व प्रेम की भव्य भावना सबको थी सिखलानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।10।।
उन्नति का आधार लिए बल आत्म ज्ञान बतलाया।
शस्य-श्यामला भूमि भारत का दुःख योगी देख न पाया।

अन्तर व्याकुल हुआ हृदय ने, मुक्ति गान था गाया।
कहा अरे ये बन्धन तोड़ो, अमर सन्देशा आया।
मुग्ध धर्म की सत्य कामना लेकर राह बनानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।11।।

राजपूत राजाओं के वह घर-घर जाकर बोला।
अन्धकार में पड़े भटकते उठो, ज्ञान पट खोला।
एक तुम्हारी आशाएं हैं, एक तुम्हारा चोला।
वैभव लुप्त हुए क्यों भूले, मानव जन्म अमोला।
मिलन भाव के स्वप्न देखता, बढ़ता जाता स्वामी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।12।।

कलियुग के इस घोर प्रहर में रक्षक बनकर आया।
गिरे हुए मानव को उसने प्रेम पंथ बतलाया।
धर्म प्रेम की सत्य भावना, लेकर मार्ग सुझाया।
मजहब के हैं बन्धन झूठे, पर जग समझ न पाया।
महर्षि को प्राण दान दे दुनियाँ थी समझानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।13।।

वेद-सूर्य की ज्योति लिए सत्यार्थप्रकाश बनाया।
मत पंथों के सारे झगड़ों को झूठा बतलाया।
एक वेद की वीणा का स्वर सुनो, यही समझाया।
मूर्ति नहीं, ईश्वर को ध्याओ, सत्य पंथ सिखलाया।
कोई न आया राह बताने ऐसा देव सुज्ञानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।14।।

भाग्य देश के फूटे, दीपमालिका का दिन आया।
पत्ते रोए आसमान ने रोकर चाँद छिपाया।
अपने हाथों ने जहर दिया और अपना भाग्य सुलाया।
"तेरी इच्छा पूर्ण प्रभु" हो, कहकर स्वर्ग सिधाया।
प्रलय काल तक भूल न पाएं ऋषि की यह कुर्बानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।15।।

ऋषि को खोकर हमने अपनी पूँजी स्वयं गँवाई।
अपने हाथों अपने रक्षक की थी भेंट चढ़ाई।
राष्ट्र विधाता भाग्य हमारा छला गया हा भाई।
युग-युग तक अमर रहेगा सूर्य चन्द्र की नांई।
मान सकेगी, सारी दुनियाँ ऋषि की अमृत वाणी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।16।।

पाप पूर्ण आतंक मयी जगती की भूलो माया।
नश्वर देह से प्रेम किया, और आत्मसुख बिसराया।
भोगवाद को छोड़ो, मार्ग त्यागवाद बतलाया।
प्रेम सहित समझाओ सबको, डिगो न पथ से, गाया।
शुभ्र भाव से फैलेगी यह जगती तल में वाणी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।17।।

बन्धन जग के सारे झूठे, नाता प्रभु से जोड़ो,
पापों की प्रिय गठरी लेकर, मानव और न दौड़ो।
सत्य, विचारो, सत्य उचारो, झूठी गरिमा छोड़ो,
गड्ढे में गिरती जगती का, पथ परिवर्तन मोड़ो।
आदेश दिए उपदेश दिए, जो भूल न पाएँ प्राणी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।18।।

ईश्वर एक अजर-अमर है सर्वव्यापक अविनाशी।
हर कण में है व्याप्त दयालु फिर भी आज उदासी।
आत्मा का तो अन्त नहीं है, जीवन क्षणिक छटा सी।
मुक्त प्रेम में प्रभु के होकर, भूलो जगत् व्यथा सी।
कष्टों की धारा में क्यों, बहता है ओ, अज्ञानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।19।।

धर्म अर्थ और काम मोक्ष में प्रगति करो बतलाया।
धर्म मोक्ष के बना अधूरा जीवन है सिखलाया।
शत्रु मित्र के भाव बिसारो एक प्रभु की माया।
भाव सुधारो जगती तल के भावों की ही छाया।
अन्धकार में दौड़ाती है भटकाती मनमानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।20।।

वर्णाश्रम आधारशिला 'जीवन' मूल बताया।
ब्रह्मचर्य की नींव बिना, नासुख पाओगे, पाया।
धर्म गृहस्थी रथ का पहिया, जनमन यही सिखाया।
वानप्रस्थ है सेवा का पथ पहला, यह दर्शाया।
संन्यासी सेवाव्रत धारी, ईश्वर पथ का ज्ञानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।21।।

स्वतन्त्रता अधिकार हमारा, अपना राज्य बनाओ,
अपना राज्य बनाकर आर्यों, वेद ज्ञान फैलाओं
सुखी विश्व हो, सुखी देश हो, प्रेम धर्म से लाओ।

(शेष पृष्ठ 35 पर)

महानतम तपस्वी-दर्शन-दक्ष व योगी: महर्षि दयानन्द

-डॉ. ज्ञानचन्द्र

ज्ञान सूर्य, विज्ञान-मार्तण्ड एवं योग-सिद्ध महर्षि दयानन्द के उपमा-रहित, अनुपमेय महत्त्व को उसकी परिपूर्ण महत्ता में समझने के लिए अभी मानवता को कुछ काल और लगेगा। अनेक कुवृत्तियों और कदाचारों में आशीर्ष संलिप्त पौराणिक हिन्दु समाज धीरे-धीरे अपनी अज्ञ पौराणिकता से आज भी अधिक धृष्टता-मूढ़ता पूर्वक अभिभूत होता जा रहा है। तरह तरह के विकृतिपूर्ण नव सिद्धान्त, नव-दर्शन व नव वृत्तियों का प्रसार-प्रचार बढ़ रहा है जिनमें शुद्ध धार्मिकता, अमिश्रित दार्शनिकता व लक्ष्योन्मुखता का अल्पतम चिन्ह भी नहीं है। पाश्चात्य कुतन्त्र व अस्पष्ट तथा कथित धर्म-परम्पराओं के प्रभावों ने और भी स्थिति को भयावह रूप से रुग्ण और विपर्ययकारी बना दिया है।

इस सब अवसाद और अताश्या उत्पादक स्थिति का दोष किसे दें? कठिन प्रश्न है यह। वेद-संस्कृति का अनेक कारणों से पराभूत और अप्रचलित होना ही निर्विवाद कारण है इस दुर्व्यवस्था और दुरावस्था का। वेदकाल की आदर्श सर्वगुण सम्पन्न, अतिशय व्यवहारिक व सर्वलाभक संस्कृति की धन्यता अनेक सुदीर्घ कालों तक सुचारु रूप से भारत, वृहत्तर भारत व अल्पाधिक रूप से अनेक देशों, राष्ट्रों को प्रेरणा व प्रकाश देती रही। वेदकाल सहस्त्रों युगों तक अक्षुण्ण रूप से प्रचलित रहा। पर धीरे-धीरे आलस्य, प्रमाद आदि अवगुणों में ग्रस्त हो जाना मानवगणों की प्रवृत्ति है। अत: अल्प परिश्रम व स्वार्थ वृत्ति के कारण वेदार्थों में भ्रान्ति और विकृतियाँ उत्पन्न होने लगीं। फलस्वरूप महाभारत काल एक ऐसा संधिकाल है भारतेतिहास का जहाँ वेदज्ञान में क्षीणता आनी आरम्भ हो गई थी। महाभारत की समाप्ति को इसी कारण कलियुग या अवसर्पिणी काल का प्रारम्भ माना जाता है। शुद्ध वैदिक ज्ञान-विज्ञान में मिश्रण प्रारम्भ हो गया था। इसका प्रमाण स्वयं महाभारत ही है। महाभारत में वैदिक विचारों के साथ मिश्रित विचार ही नहीं बल्कि वेद के पूर्ण विपरीत विचार भी बहुलता से प्राप्त होते हैं। सबसे बड़ा प्रमाण विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ भगवद्गीता है जिसमें वेद-विचार भी हैं और मिश्रित के साथ पूर्ण अवैदिक विचार भी हैं। एक ही प्रमाण पर्याप्त होगा। वेद सृजन को, जगत को न मरने और न जीर्ण होने वाली देव-रचना मानता है। ''पश्य देवस्य काव्यं न मकार न जीयति'' जबकि गीता जगत-जीवन को दु:खालयम् अशाश्वतम् कहती है। निश्चय ही श्रीकृष्ण जैसे वेदज्ञ के कथनों में पश्चकालों का मिश्रण, प्रक्षिप्तीकरण स्पष्ट है।

इस मिश्रित वेदार्थ और विपरीत वेदमन्तव्यों के कारण ही वृत्तियाँ अशुद्ध दूषित और दुरितावह हो गईं और महाभारत जैसा युद्ध हुआ। सच कहा जाय तो महाभारत पुरातन भारतीय वैदिक संस्कृति का अन्तिम कालयुग है। अन्त: प्रेरणात्मक, ईश्वरी अन्तराभासात्मक ज्ञान के स्थान पर बुद्धि प्रेरित तार्किक व युक्तिपरक ज्ञान ही महाभारत के पश्चात् प्रचलित हुआ। इस बौद्धिक तकीधारित ज्ञान की पराकाष्ठा हुई बौद्ध एवं जैन नामक अनीश्वरवादी व पार्थिव जीवन विरोधी, नारी व समृद्धि निन्दक दार्शनिक परम्पराएँ बढ़ी और फैलीं। जहाँ वैदिक संस्कृति राजर्षियों, योद्धाओं और संघर्ष प्रिय लोगों की संस्कृति थी वहाँ भिक्षु और पलायनवादी सन्यासी समाज के निर्देशक-उपदेशक बन गए। भारतीय प्राण-ऊर्जा का क्षरण प्रारम्भ हो गया।

सृजन व जीवन की समस्त समस्याओं के सर्व-ताप-शमन औषधि के रूप में महर्षिश्रेष्ठ दयानन्द ने वेदों को मानवता के समक्ष रखा। तन से बलिष्ठ मन से मनस्वी व स्पष्ट-दृष्टि, आत्मा में ईश्वर-प्रपन्नता के दुलर्भ सद्गुणों से सम्पन्न महर्षिवर ने समस्त भौतिक, आधिदैविक व आध्यात्मिक समस्याओं के समाधान के लिए वेद सामने रखा। वेद को समस्त अपर साहित्य से अलग करके प्रस्तुत किया। महर्षि से पूर्व अज्ञानवश विद्वत्गण ब्राह्मण, उपनिषद, आरण्यक आदि ग्रन्थों को भी ''वेद'' संज्ञा में सम्मिलित करते थे। अपूर्व चमत्कार है कि मह्यभारत के पश्चात् पाँच हजार वर्ष में महर्षि दयानन्द ही एक मात्र स्वनामधन्य महानात्मा हैं जिन्होंने 'वेद' को ब्राह्मण आदि ग्रन्थों से भिन्न करने जैसी सिंह घोषणा की। उनके पश्चात् के अत्यन्त ज्ञानाश्रयी योगेश्वर श्री अरविन्द ने भी इस विचार का अनुमोदन ही किया है।

महर्षि ने सहस्त्रों ग्रन्थों के अध्ययन के साथ स्वचिन्तन, मनन एवं ध्यान-तप योग की अनुभूतियों के पुष्ट आधार पर यह उद्घोषित किया कि ब्राह्मण,

आरण्यक व उपनिषदादि ग्रन्थ मनुष्य कृत ऋषिगण निर्मित अतएव पौरुषेय ग्रन्थ हैं। अपौरुषेय तो एक मात्र वेद हैं। आज भी अनेक पूर्वाग्रही व दुराग्रही लोग इस उद्घोषणा को स्वीकार नही करते। वे नहीं जानते कि महर्षि के वचन, लेखन का प्रतिवाद करने के लिए भी तो उन जैसा तपस्वी, यति, योगी, अध्ययन-मननशील व विचारक-प्रचारक होना होगा। और ये सब होने पर महर्षि के वचनों पर आस्था-विश्वास के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं हो सकता। अल्पश्रुत, अत्यल्प-पठ, निवीर्य, तप-स्वाध्याय हीन व्यक्ति कुछ कहे भी तो उसकी महत्ता ही क्या है, मूल्य ही क्या है।

विश्व-सृष्टि की जड़ हैं वेद। यह उल्टा अश्वत्थ वृक्ष है जिसकी शाखा-पल्लव हैं वेद की ऋचाएँ ऐसा गीता ने भी उद्घोषित कियां । विश्व-सृजन के इस जड़मूल रूप वेदाधार को सींचकर, खाद देकर और वायु, सूर्य शक्तियों की सहायता से पुनः युवा, जीवित करने देने का कार्य किया महर्षि दयानन्द ने। एक मात्र महर्षि दयानन्द को ही देनी होगी इसकी प्रविष्ठा और इसका श्रेय व शेसा।

अपेक्षा है निष्पक्ष दृष्टि के अत्यन्त परिश्रमी दक्ष-विचक्षण और अनाग्रही परीक्षकों अनुसन्धानकों की जो महर्षि दयानन्द के जीवन वृत्ति व कर्त्तव्य के साथ उनकी दार्शनिकता और धार्मिकता पर समय और सद्भाव पूर्ण खोज पर निर्भर है। आशा है ऐसा समय शीघ्र ही आएगा। यह सम्पूर्ण लेखन अन्धश्रद्धा व पूर्वाग्रह पूर्ण दृष्टि से नहीं रखा गया है बल्कि वर्णों के अध्ययन-अनुसन्धान से पोषित विचारों-चिन्तनों का प्रतिफल है।

-श्री अरविन्द चेतना समाज
चमेलियान रोड, दिल्ली

भारतीय नववर्ष पर विशेष

"जगे देश का शौर्य तेज..।"

-मुकुन्दमणि मिश्र

है कामना एक यही, दे प्रभु सद्ज्ञान।
मंगलमय नववर्ष हो, हों हर्षित मन-प्राण।।
देशहित सर्वस्व हो, भाषा, बोली, वेश।
पढ़ें, लिखें, आगे बढ़ें, याद रहे स्वदेश।।
ना भूलें अपघात को, ना भूलें अपमान।
लें सभी संकल्प यही, रहे देश का मान।।
सत्ता की गलियों में घुसे, देखो गिद्ध अनेक।
नोंच रहे हैं देश को, बदल-बदल के वेश।।
रहा सोचता मैं यही, छिप गया दिनमान।
कैसे-कैसे लोग यहाँ, बेच रहे ईमान।।
हैं मुकुन्द सहमे हुए, देख दिनन का फेर।
रीत गया घट पर अभी, मिटा न मन का फेर।।
सुजल-सुफल हो धरा, पूरे मन के साध।
इस चमन में हे प्रभु! दीखे न कोई व्याध।।
फूले-फलें विटप सभी, हरे-भरे हों खेत।
पर्यावरण विषम न हो, हो हृदय में चेत।।
हरिकृपा से देश में, रहे ना कोई क्लेश।
प्रेम, दया, सद्भाव सदा, होवे हृदय विशेष।।
चैत्र प्रतिपदा वर्ष नव, उड़े अबीर, गुलाल।
रंग न उतरे वर्ष भर, रहे चमकता भाल।।
नववर्ष का पुष्प यह, रहे नवल-नवीन।
अर्पित जगहित छंद यह, मिले सुयश-सुदिन।।
सन्देश यहीं नववर्ष का, देते आज मुकुन्द।
जगे देश का शौर्य, तेज, धार होय ना कुन्द।।

-पुरैना गुसाईं,चनपटिया, प.चम्पारण

(पृष्ठ 12 का शेष)

नियामक के द्वारा ही संचालित होते हैं। जहाँ कोई सिद्धान्त होते हैं- अर्थात् सिद्धि का अन्तिम छोर तो उसका आरम्भिक भोर भी होता, यही तो ईश्वर है। धर्म-ज्योति से जाग्रत व्यक्ति कभी ईश्वर को चुनौती देकर युद्ध के लिए ललकारता नहीं। हाँ, नास्तिक के तन के कण कण को वह तोड़ता फोड़ता भी दिखाई नहीं देता है। यह 'स्वतः' ही हो गया लगता है। अभी अलीगढ़ आगमन पर महान वैज्ञानिक पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. कलाम ने प्रश्नोत्तर में ईश्वर की सत्ता को ससम्मान मान्य किया था। आधुनिक कायाकष्ट वैज्ञानिक जी! तुम नये नहीं हो। पुरातन अष्टावक्र की ओर झाँक लो। राजा जनक की राज्यसभा में जब उन्होंने प्रवेश किया, तो उनके आठ अंगों से टूटे कुरूप शरीर को देखकर राजा के मन में उत्पन्न संशय को उन्होंने यह कहकर दूर कर दिया कि शरीर टेढ़ा हो सकता है पर आत्मा उसी प्रकार टेढ़ी नहीं होती है जैसे टेढ़े-मेढ़े किनारों वाली नदी का जल टेढ़ा नहीं मीठा ही होता है। अच्छा, प्रभु रुद्र को नमस्ते, कल आना हँसते हँसते।

-'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़

स्थापना दिवस पर विशेष

आर्यसमाज का दायित्व

-पं. विनायक राव विद्यालंकार

विद्वान लेखक ने यह विचार सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन, 1951 में अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यक्त किए थे, जो आज भी समसामयिक और चिन्तनीय हैं। -सम्पादक

आज से 76 वर्ष पूर्व सन् 1875 ई. में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापाना की थी। आर्यसमाज की स्थापना इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। कोई माने न ामाने किन्तु आज भारत में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व शैक्षणिक तौर पर जो चौमुखी उन्नति दृष्टिगोचर हो रही है, उसमें बड़ा भाग आर्यसमाज का रहा है।

जिस समय आर्यसमाज का जन्म हुआ था उस समय भारतीयों को अनेक प्रकार की कुरीतियों और खतरों ने घेर रखा था। एक ओर हमारी अन्धश्रद्धा और अविवेकता थी तो दूसरी ओर धार्मिक संकुचितता ने हमें विदेशियों के सम्मुख हास्यास्पद बना रखा था। साथ ही साथ इस्लाम और ईसाइयत के तीव्र हमले भी हो रहे थे। विदेशी शिक्षा ने भारतीयों के मस्तिष्कों को ही बदल दिया था। जिससे उन्हें अपने देश, धर्म और संस्कृति से घृणा होती जा रही थी। ठीक उसी समय सभ्य कहाये जाने वाले संसार में धर्म के विरुद्ध एक अन्य प्रकार की क्रान्ति का बीजारोपण हो रहा था। पदार्थ विज्ञान के आविष्कारों से प्रभावित होकर पृथ्वी तल पर बसने वाली अनेक जातियों के समागम और उनके साहित्य इतिहास तथा संस्कृति का अवलोकन तथा समाज की आर्थिक व्यवस्था की छानबीन कर क्रान्ति के वे नेता इस परिणाम पर पहुँचे थे कि समस्त सांसारिक दु:खों का एक मात्र कारण धर्म की कल्पना है। उन्होंने कहा और लिखा कि धर्म अफीम की एक गोली है, जो निराश्रित और निरावलम्बियों को दी जाती है, ताकि वे अपने दु:खों को उनके वास्तविक रूप में अनुभव ही न कर सकें। उनमें धार्मिक विचार और सामाजिक प्रयासों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न होने लगी। सामाजिक तौर पर उन्होंने समझा कि 'धर्म' ही उनके सब बन्धनों का मूल है और उसको तिलांजलि देना ही स्वतन्त्रता के रमणीय वातावरण में आनन्द के उपभोग का एक मात्र साधन है।

इस विचार प्रवाह ने भारत को भी प्रभावित किया। भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़कर निकले हुए हमारे शिक्षित नवयुवक जब कार्यक्षेत्र में उतरे तो उन्होंने जनता में इन विचारों को तीव्रता से फैलाना प्रारम्भ किया। तर्क और विज्ञान से विमुख हमारी खोखली अन्धश्रद्धा इस नवीन विचारधारा से टक्कर लेने में असमर्थ थी। अतएव शिक्षित वर्ग में धर्म के प्रति अश्रद्धा और अनास्था बढ़ने लगी।

महर्षि ने इस धारा को मोड़ने के लिए तर्क और विज्ञान का ही सहारा लिया। जहाँ उन्होंने अन्ध श्रद्धालु जनता को यह बताया कि उनकी अनेक कल्पनाएं यथा अवतारवाद और मूर्तिपूजा जो कि तर्क की कसौटी पर नहीं उतर सकती, धर्म का अंग नहीं बन सकती, वहाँ वैज्ञानिकों को यह भी बताया कि वैदिक धर्म की सब बातें यथा आस्तिकवाद और पुनर्जन्म का सिद्धान्त इत्यादि सबकी सब तर्क सिद्ध हैं और विज्ञान उन्हें झुठला नहीं सकता। भारतीयों को महर्षि की दूसरी देन भारत का उज्जवल इतिहास है। ऋर्षि से पूर्व आठ सौ वर्षों की दासता के कारण भारत के प्राचीन इतिहास पर मनों मिट्टी पड़ी हुई थी। साथ ही अंग्रेजों ने स्वार्थवश उसे और भी विकृत बना दिया था। महर्षि ने कूड़ा-कर्कट में पड़े हुए भारतीय इतिहास के उज्जवल पृष्ठों को भारतीयों के सम्मुख रखकर उन्हें उनके वास्तविक रूप का, उनके गौरवशाली अतीत का तथा उनकी अनुकरणीय सभ्यता का दर्शन कराया। फलस्वरूप भारतीयों में अपने राष्ट्र के प्रति अभिमान उत्पन्न हुआ।

इसके पश्चात महर्षि दयानन्द के अनुयायी एक हाथ में तर्क की तलवार और दूसरे हाथ में वैदिक सभ्यता की इतिहास रूपी ढाल को लेकर समाज सुधार के क्षेत्रों में उतरे तो उन्होंने कुछ वर्षों के लिए जनता में एक प्रकार की हलचल मचा दी। उनके विचार नये थे, किन्तु वैदिक थे। सुनने वाला स्वत: को नई दुनियाँ में अनुभव

करने लगता था। उसके मस्तिष्क में एक प्रकार की विचार क्रान्ति उत्पन्न हो जाती थी। वह अपने अन्दर अदम्य उत्साह और प्रबल वेग अनुभव करता था। वह यों अनुभव करता था कि वह दूसरों से ऊपर ही ऊपर उठा चला जा रहा है। वह स्थितप्रज्ञ और दृढ़ संकल्प होता जाता था। बिरादरी के बहिष्कार, सरकार की वक्रदृष्टि और सम्बन्धियों के मोह जाल उन पर तनिक भी प्रभाव नहीं करते थे। इसलिए आर्यसमाज अपने समाज सुधार के कामों में बड़ी द्रुतगति के साथ सफल होता रहा था। इस क्षेत्र में आर्यसमाज ने स्त्री शिक्षा, स्त्री स्वातन्त्र्य, जात-पात के बन्धनों को तोड़ा जाना, वर्णव्यवस्था का जन्मानुसार न होकर कर्मानुसार होना और निराकार परमेश्वर का पूजन आदि अनेक विषयों पर आवाज उठाई और उन सबमें वह उत्तीर्ण हो गया। अब इन विषयों में आर्यसमाज के विचारों में किसी को मतभेद नहीं हैं किन्तु कामयाबी के साथ ही कार्य के लिए नवीन क्षेत्र के अभाव के रूप में आर्यसमाज के सम्मुख एक बड़ी कठिनाई खड़ी हो गयी है।

आर्यसमाज का काम उस दिन तक तो बड़े जोरों पर चलता रहा, जब तक देश की समस्याएं वही थीं, जो कि महर्षि के समय में थीं और महर्षि की दी हुई पूँजी हमारे लिए पर्याप्त थी, किन्तु केवल बाप-दादाओं की विरासत पर जीने वाले वंशज अधिक उन्नति नहीं कर सकते। वहीं वंशज उन्नति के अनुगामी होते हैं, जो कि अपने पूर्वजों की पूँजी में भाग डालने की क्षमता रखते हैं। मुझे शोक है कि हमने इस दिशा में अधिक कार्य नहीं किया है। हमारे साहित्य और हमारे उपदेशकों के व्याख्यानों में अब भी इसी बात की प्रमुखता रहती है कि हमारे पूर्वज उच्च सभ्यता को प्राप्त कर चुके थे, उन्होंने साम्राज्य स्थापित किए थे, वे अपने जमाने में संसार के गुरु रह चुके थे। इससे अधिक कभी-कभी वैज्ञानिक सिद्धान्त को वेदमन्त्र प्रतिपादित बताकर हम अपने आपको कृतकृत्य समझ लेते हैं। हमने देश की वर्तमान समस्याओं की तरफ बहुत कम ध्यान दिया है, भविष्य की बात तो बहुत दूर की है, हमें समझना चाहिए कि वही जाति या संस्था उन्नति कर सकती है, जो नावों के काल में जहाजों की सोचें, जहाजों के काल में विमानों की सोचें, विमानों के काल में राकेट्स की सोचें और राकेट्स के काल में ऐसे यान की सोचें जिनमें बैठकर नक्षत्रों की सैर की जा सके।

स्वामी जी की मृत्यु के उपरान्त गत पचास वर्षों में समाज शास्त्र ने बहुत उन्नति की है। इसके परिणाम स्वरूप समाजवाद, साम्यवाद, उन्मूलनवाद इत्यादि अनेक वाद खड़े हो गये हैं, जो स्वामी जी के समय इस प्रकार विस्तार से खड़े नहीं थे, जैसे कि इस समय हैं। उस समय, जैसा कि मैं पूर्व ही बता आया हूँ कि भारतीय संस्कृति पर ईसाइयत या इस्लाम के हमले होते थे या भारतीय फिलासफी अथवा दार्शनिक सिद्धान्तों को विज्ञान की दृष्टि में बताया जाता था कि युक्तिसंगत नहीं हैं। स्वामीजी ने इन दोनों प्रकार के आक्षेपों का तर्क, प्रमाण व विवाद से पूरे तौर पर मुकाबला किया और विजय प्राप्त की। यदि आज स्वामी जी महाराज जिन्दा होते, तो इन बातों का भी उसी प्रकार से प्रतिकार करते जैसा कि उन्होंने अपने समय में दूसरी बातों का किया, इन वादों में बहुत कुछ अवैदिकता है, तीसरी बात हमारा शिक्षित वर्ग इनकी तरफ तीव्रता से खिंचा चला जा रहा है। ऐसी सूरत में स्वामी जी के उत्तराधिकारी कहलाने वाले आर्यसमाज का यह कर्त्तव्य है कि वह इनका प्रतिकार करे और अवैदिक वादों में बिखरते हुए समाज को सीधे मार्ग पर लाये। यह बात केवल भावना प्रधान बातों से नहीं होने वाली, न ही केवल श्रुति और स्मृति के प्रमाणों से होगी। इसके लिए पाश्चात्य वादों का मंथन और वैदिक वादों का अनुसन्धान करके नये साहित्य निर्माण के लिए निष्कर्ष निकालने होंगे, जिससे विश्वविद्यालयीन नवयुवक प्रभावित हो सकें। आर्यसमाज में ऐसे विद्वान मौजूद हैं, जो कि नई और पुरानी रोशनियों से अभिज्ञ हैं। किन्तु साहित्य निर्माण के लिए उनके पास साधन नहीं हैं। आर्य प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा को चाहिए कि इन विद्वानों को एकत्रित करें, उनके लिए साधन-सामग्री भी जुटाएं और वर्तमान युग के लिए नये साहित्य का निर्माण करायें। अन्यथा निश्चय जानिये कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ जनता शनैः शनैः आर्यसमाज के प्रभाव से परे होती जायेगी।

नूतन-वर्ष के स्वागतार्थ

चैत्र शुदी एकम्(04 अप्रैल, 2011, सोमवार)
विक्रमी सम्वत् 2068 (युगाब्द: 5113)

भिन्न-भिन्न घोटाले देखे, भिन्न-भिन्न देखे नटवर।
भिन्न-भिन्न आतंकवाद ने, भिन्न-भिन्न रेते नरवर।
पशुता का तांडव चहुँ-ओर, आहत हो मानवता रोती।
जो अभिन्न हैं संविधान में, भिन्न-भिन्न क्यों रहे बिखर।
यह नूतन-नव वर्ष,नया युग, लाया नव-संकल्पों कीरूत।
आओ जड़ से काट गिराएँ,भिन्न-भिन्न सब दुष्टों केकर।

विनयकुमार सिंघल1085/4रामाकृष्णपुरम्नईदिल्ली-22

चिन्तन-मनन

दयानन्द दर्शन की आवश्यकता

-प्रो. रामसिंह एम.ए.

सुप्रसिद्ध विचारक, चिन्तक, व्याख्याता, स्वाधीनता सेनानी, आर्यसमाज के अग्रणी नेता, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के यशस्वी प्रधान, हिन्दू महासभा के पूर्व अध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा के विभिन्न पदों पर रहे प्रो. रामसिंह का जन्म 28 अगस्त 1895 को हरियाणा के ग्राम फरमाना में हुआ। लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द आपके प्रेरणास्रोत थे। आपने स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय एवं अग्रणी भूमिका का निर्वहण किया। हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन में आपने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। आप दिल्ली नगर पालिका के सदस्य रहे तथा दिल्ली की पहली विधानसभा के लिए भी आप चुने गए। आप केसरी हिन्दी साप्ताहिक के सम्पादक रहे। आपका निधन दिल्ली में 2 जुलाई 1983 को हुआ। श्री जगद्देव सिद्धान्ती अभिनन्दन ग्रन्थ 1977 से उद्धृत प्रस्तुत लेख में आपने दयानन्द दर्शन के विशद अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया है।

दृशे विश्वाय सूर्यम्।

श्री पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने कुछ वर्ष पूर्व एक अत्युत्तम पुस्तक लिखी थी-फिलासफी आफ-दयानन्द इसकी कई महानुभावों की ओर से भूरि-भूरि प्रशंसा भी की गई। इसी भावना से प्रेरित होकर अन्य सज्जनों ने भी ऋषि के विचारों को इधर-उधर से एकत्रित करने का प्रयास किया। परन्तु यह सभी सराहनीय प्रयत्न, महर्षि की विलक्षण मान्यताओं, उनके द्वारा व्याख्यात वैदिक सिद्धान्तों और मन्तव्यों का वैज्ञानिक रीति-नीति से दिग्दर्शन न कर सके। अत: विद्वद्मण्डल की यह धारणा प्राय: प्रबल होती जाती है कि वैदिक धर्म के शुद्ध स्वरूप के जानने के लिए एक विस्तृत और व्याख्या समन्वित दयानन्द-दर्शन की अत्यन्त अपेक्षा है।

दयानन्द निर्भ्रान्त थे। उन्होंने अपने परम अध्यवसाय, त्याग और तपस्या के बल पर ही ऋषित्व प्राप्त किया। आज सभी एक स्वर से इसे मानने लगे हैं। हजारों वर्षों के पश्चात् इस महान् आत्मा का अवतरण हुआ। वे वेद-वेदांग, परम-निष्णात, साक्षात्कृत धर्म और मन्त्रकृत के रूप में संसार के सन्मुख उपस्थित हुए। निरुक्त के शब्दों में वे मन्त्रार्थ के प्रत्यक्ष-द्रष्टा थे- ऐसे समय में जब वेद लुप्तप्राय: और शून्य की स्थिति को पहुँच गए थे। वेदों के शुद्ध स्वरूप का उद्घोष करना, न साधारण मनुष्य का काम था और न ही अन्य शास्त्रीय विद्वान् का-

नह्येषु प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसो वा, पारोवर्यवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयोविद्य: प्रशस्यो भवति।

अत: दयानन्द पारोवर्यवित् थे। जो कार्य उन्होंने किया, वह 'अनृषि' और 'अतपस्वी' नहीं कर सकता।

'मनुष्या वा ऋषिषूत्क्रामत्सु' देवानब्रुवन् को न ऋषिर्भविष्यतीति, तेभ्य: एते तर्कमृषिं प्रायच्छन् मन्त्रार्थचिन्ताभ्यूपभ्यूदहंतस्माद् यदेवं किंचानूचानोऽभ्यूहति आर्षम् तद् भवेति। (निरुक्त 13. आ. 10 खं. 12)

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है, ऋषि दयानन्द अगाध विद्यानिधि, षडंङ्गवित् तथा परम अनूचान थे। अत: जो कुछ उन्होंने लिखा, बताया अथवा उद्घोषित किया वह नितान्त 'आर्ष' ही है।

इसी कारण से यह आवश्यक हो गया है कि ऋषि के द्वारा किये गये वेद-भाष्य को जानने तथा वेदार्थ के गूढ़ रहस्यों को पूर्णतया समझने के लिए ऋषि की मान्यताओं, मन्तव्यों और विचारों का एक क्रमबद्ध संकलन वा संग्रह 'दयानन्द-दर्शन' के नाम से प्रसिद्ध हो।

इन्हीं भावों से प्रेरित होकर 'वेदवाणी' के ज्येष्ठ सम्वत् 1032 के 8वें अंक में आचार्य सुद्युम्न शास्त्री ने यह माँग की थी कि "प्राचीन दार्शनिकों के समान जब तक हम युक्ति प्रमाण पूर्वक (दयानन्द) के सभी विचारों को स्थिर न करेंगे, तब तक हमें (सिद्धान्तों को स्थिर करने के लिए) दृढ़ आधार बनाने में कठिनाई होगी, इसलिये एक पृथक् आर्यसमाजी-दर्शन की आवश्यकता है।" इसी सन्दर्भ में श्री पं0 गयादत्त जी शास्त्री व्याकरणाचार्य दयानन्द-दर्शन की पृथक् आवश्यकता नहीं समझते। फिर भी अपने लेख के अन्त में वह यह स्वीकार करने पर बाध्य हो गये हैं कि "ऋषि की समस्त दार्शनिक मान्यताओं को पृथक् दर्शन का नाम दें या नहीं, परन्तु यह समीचीन, सामयिक और प्रशस्त ही लक्षित होता है कि हमारे इन

षड् आस्तिक दर्शनों के जो-जो प्रसंग आर्य समाजिक मान्यताओं के साथ विवादास्पद प्रतीत हों, चाहे उनमें वास्तविक विरोध न होकर विरोधाभास ही क्यों न हो, उनकी सुन्दर व्याख्यायें और सप्रमाण विवेचन प्रस्तुत किये जायें। दूसरी ओर दयानन्द की सम्पूर्ण कृतियाँ स्थान-स्थान पर कथित दार्शनिक विचारों का संग्रह तैयार करके उन पर वेदादि शास्त्रों के प्रामाण्य से युक्त टिप्पणी अथवा उनकी व्याख्या प्रस्तुत की जाये।'' तात्पर्य यह है कि विद्वान् लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि ऋषि दयानन्द के समस्त दार्शनिक विचारों का एक प्रामाणिक संग्रह सामयिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए नितान्त अपेक्षित है।

मेरा इसमें एक निवेदन यह है कि सत्यार्थप्रकाश के अन्त में ऋषि ने 'स्वमन्तव्या-मन्तव्यप्रकाश' लिखने का कष्ट इसलिये किया कि उनके मन्तव्य विलक्षण और रूढ़िवाद से सर्वथा भिन्न हैं।

इन मन्तव्यों के अतिरिक्त प्रकरणवश ऋषि के वेद-भाष्य, भाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश तथा अन्य ग्रन्थों में ऐसे विचार मिलते हैं जो सर्वथा विलक्षण हैं और आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं। फिर भी नये-नये भौतिक आविष्कार कभी-कभी विद्वानों के मन और बुद्धि को आलोड़ित करते हैं और वे लोग 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'-इस पर दृढ़ विश्वास करते हुए भी समाधान की टोह में रहते हैं। श्री डा. खुराणा और श्री डा. पन्नालाल जैन(अमरीका में) के नूतन वैज्ञानिक आविष्कार इसके निदर्शन हैं। आर्य विद्वानों की यह मान्यता 'व्याख्यानो विशेष प्रतिपत्तिर्न हि सन्देहाद् अलक्षणम्' कब काम आयेगी। **अतः मेरा नम्र-निवेदन है कि स्वामी दयानन्द की मान्यताओं और उनके द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित एक 'दयानन्द दर्शन' संग्रहीत किया जाये जो आधुनिक विज्ञान की उलझनों को भी सुलझाने में सहायक हो। आर्य विद्वानों के विचारार्थ ही यह नम्र निवेदन है।**

युवा हिन्दू ध्यान दें

- क्या हिन्दू युवाओं को अपनी संस्कृति को जानने का अधिकार नहीं?
- फिर हिन्दू धर्म के अध्ययन अनुसन्धान और शिक्षण पर प्रतिबन्ध क्यों है?
- क्या हिन्दू युवाओं को स्वरोजगार हेतु वित्तीय सहायता की आवश्यकता नहीं?
- फिर क्यों केवल मुस्लिमों को ही स्वरोजगार के लिये अनुदान सहित कम ब्याज पर ऋण दिया जाताहै।
- क्या हिन्दू युवाओं को यह अधिकार नहीं कि वे अपनी प्राचीन भव्य संस्कृति पर गर्व कर सकें?
- फिर क्यों भारतीय संस्कृति और अतीत को घृणित तरीके से पाठ्य पुस्तकों में पढ़ाया जाता है?
- क्या हिन्दू युवाओं को अपनी मातृभाषा में कार्य करने और उसे जीवित रहने का अधिकार नहीं?
- फिर क्यों अंग्रेजी भाषा के आधिपत्य को स्वीकार किया जा रहा है। क्षेत्रीय भाषाओं की अवहेलना कर
- पाश्चात्य संस्कृति में संस्कारित पीढ़ी को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- क्या हिन्दू युवा जो कृषकपरिवार से सम्बन्धित है उसे कृषि आधारित व्यवसाय करने का अधिकार नहीं
- फिर क्यों ऐसी नीति नहीं बनाई जाती कि हिन्दू कृषक युवा कृषि आधारित व्यवसाय करके राष्ट्रीय उत्पादकता में वृद्धि में सहयोग दे सकें।

चाहे शिक्षा हो, चाहे व्यवसाय, हिन्दू युवा शोषण का शिकार है। उसे जागना होगा, भारत माता के लिये

अपने अतीत और स्वाभिमान की रक्षा के लिये हिन्दुत्व की ध्वजा हाथ में हो,
और स्वाभिमान का संघर्ष हो, हम हैं आपके साथ
चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारत हिन्दू महासभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

12 अप्रैल 2011-'रामनवमी के अवसर पर

बाल्मीकि के राम

-डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे

लुटेरा रत्नाकर लूट कर्म से अपना तथा अपने परिवार का भरण पोषण कर नित्य जीवन व्यतीत करता था। लूट कर्म के परिणामों के हिस्सेदार बनने से परिवार के नकारने के कारण लुटेरा रत्नाकर महापुरुषों के संग के प्रभाव से वाल्मीकि हो गया। गंगा के किनारे निकटवर्ती तमसा नदी के तट पर विचरण कर रहे वाल्मीकि ने देखा एक निषाद ने अपने बाण से काम मोह में रत क्रोंच का मृत कलेवर खून से लतपथ पड़ा हुआ। क्रोंची के व्याकुल स्वर ने वाल्मीकि को व्याकुल कर दिया। उनके व्याकुल स्वर थे- मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम्: शाश्वती समाः।

यत क्रोञ्च मिथुनादिकम्वधी: काम मोहितम्।।

यह भाव विह्वलता महर्षि वाल्मीकि की असाधारण कवि प्रतिभा से निकली वाङमयीन भागीरथी सिद्ध हुई। महर्षि वाल्मीकि आदि कवि हैं, उनका वाल्मीकि रामायण आदि महाकाव्य है। आदि कवि ने महामानव मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र को अपने काव्य मन्दिर की पीठ पर प्रतिष्ठित किया है। महर्षि ने अपनी काव्य सृजनात्मक क्रिया में श्री राम के आदर्श चरित्र का चयन किया है। इस महामानव के चयन का स्पष्टीकरण स्वयं वाल्मीकि ने 'वाल्मीकि रामायण' के 'बालकाण्ड' में किया है। वाल्मीकि नारद से पूछते हैं-''संसार में गुणवान, पराक्रमी, धर्मज्ञ, सत्यवक्ता, दृढ़व्रती पुरुष कौन है? सदाचार से युक्त, विद्वान, सामर्थ्यशाली पुरुष कौन है? जो तपस्वी हो, क्रोधी न हो, तेजस्वी हो पर ईर्ष्यालु न हो। वह क्रान्तिमान हो, धैयवान हो, जितेन्द्र, शमूसंहारक, धर्म का रक्षक, अधर्म का संहारक, प्रतिभावान हो, ऐसा कौन सा पुरुष है?'' नारद जी का उत्तर था-'अयोध्या के इक्ष्वांकु वंश में जन्मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र। कविवर वाल्मीकि ने अपनी 'अमरवाणी' में हमारे सम्मुख श्रीराम के उसी परम प्रकाशमय आदर्श चरित्र को रखा है।

वाल्मीकि के राम का जीवन यज्ञमय था। विश्व कल्याण के लिए अपनी समस्त आन्तरिक और भौतिक सम्पदा को यज्ञ में स्वाहा करना ही उनके जीवन का एक मात्र संकल्प था। पारिवारिक जीवन में श्री रामचन्द्र एक आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श स्वामी, आदर्श राजा और आदर्श पिता थे। पारिवारिक जीवन के हर व्यवहार में उनका आदर्श व्यक्तित्व ही अभिव्यक्त होता है। श्री राम ने पिता के प्रति कर्त्तव्य का पालन करने के लिए अयोध्या राज्य से निर्वासन स्वीकार किया। विमाता कैकई की कठोर आज्ञा को उन्होंने सिर आँखों चढ़ाया। वन में जाते समय समस्त चराचर प्राणी सन्तप्त हो उठे, पर उनके मुख मण्डल पर तनिक शिकन तक नहीं थी। वाल्मीकि ने अपने रामायण महाकाव्य में रामचरित के अंकन में आर्य संस्कृति का आदर्श स्वरूप रखा है।

अयोध्या काण्ड में लक्ष्मण की माता सुमित्रा श्रीराम के वन जाने पर कौसल्या को धीरज देते हुए कहती है-''बहन! श्रीराम सूर्य के भी सूर्य हैं, अग्नि के भी अग्नि हैं, वे प्रभू के प्रभू, लक्ष्मी के लक्ष्मी, कीर्ति के कीर्ति, क्षमा की क्षमा तथा देवताओं के देवता हैं। राम ही सम्पूर्ण भूतों सत्ता प्रदान करने वाले परमेश्वर हैं। वे वन में रहे या नगर में, उनका क्या अमंगल हो सकता है। भ्राता भरत ने श्रीराम की धरोहर उन्हीं के चरणों में अर्पित की पर श्रीराम ने उसे अस्वीकार कर वनगमन ही पसन्द किया। उस समय भ्राता भरत को दिया हुआ श्रीराम का उपदेश एक आदर्श राजनीति को दर्शाता है। श्री रामचन्द्र ने अपने व्यक्तिगत जीवन में भीषण दण्ड ग्रहण कर, मनुष्य के महान जीवन के अति उज्वल स्वरूप की प्रतिष्ठापना की है। इसमें उनका अधिनायकत्व ही सिद्ध होता है। विभिन्न विकट परिस्थितियों में रहकर, व्यक्ति अपने शील के सौंदर्य की किस प्रकार रक्षा कर सकता है- यह वाल्मीकि के राम ने सिखलाया है। श्रीराम का क्रोध तथा प्रमाद दोनों ही अमोघ हैं। अपने पापों के कारण हनन योग्य व्यक्तियों को बिना मारे ही वे रह नहीं सकते। क्रोध के कारण उनकी आँखें भी लाल नहीं होतीं-

नास्य क्रोध: प्रमादों वा निरर्थोऽस्मिक दायन। हन्त्येष निरापद् व ध्यानयेषु न कुप्यति।। (वा.रा.-2-2-46)

श्रीराम का शील मधुर है। वे सदा दान करते है। कभी दूसरों से प्रतिग्रह नहीं लेते। वे अप्रिय कभी नहीं बोलते। साधारण स्थिति की बात नहीं, प्राण संकट में होने की अवस्था में भी नियमों का उल्लंघन नहीं करते।

दद्यान प्रतिग्रह्णौ यानंब्रूयात किञ्चिदाप्रियम्। अपि जीवित हेतोर्वा राम: सत्य पराक्रम।। (वा.रा.5-35-25)

अपने परिजनों के प्रति उनका व्यवहार कोमल एवम् सहानुभूति पूर्वक है। पत्नी सीता के प्रति उनके परिताप

का कारण चतुर्मुखी है। आपत्ति में, स्त्री की रक्षा करने का आदेश धर्मशास्त्र देता है। परन्तु श्रीराम से यह हो नहीं सका। वे स्त्री की रक्षा न करने के कारण करुणा से सन्तप्त हैं। वन में सीता श्रीराम के आधीन थी। परन्तु राम ने अपने आश्रित सीता की रक्षा कर नहीं सके थे। इस लिए सन्तप्त हैं। सीता श्रीराम की सहधर्मिणी पत्नी थी। श्रीराम पतिधर्म निभा नहीं सके थे। इसलिए सन्तप्त हैं। सीताराम की प्रिया है, लावण्यवती है। सीता के खो जाने पर, आनन्दमयी जीवन की मधुर स्मृतियाँ जाग्रत हो जाने के कारण श्रीराम शोकाकुल है।(वा.रा.5.15.48.49

भ्राता लक्ष्मण को शक्ति लगने पर श्रीराम के भ्राता प्रेम से भरे हुए शब्द उद्गार वाल्मीकि के साहित्य की अमूल्य निधि रही हैं। वाल्मीकि ने कहा है- यदि पुरुष चाहे तो उसे विवाह योग्य स्त्रियाँ मिल सकती हैं किन्तु भ्राता मिलना कठिन है-देशे देशे कल्याणि देशे च बांधवा। तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः।।(वा.रा. -6.16.13) श्रीराम की शरणगत वात्सल्यता अपने आप में अनोखी है। श्रीराम ने अपने मायावी शत्रु के भाई विभीषण को, उसकी नगरी में ही आश्रय प्रदान किया था। सुग्रीव श्रीराम की ओर सन्देह की दृष्टि से देखते हैं।यह सन्देह दुरुभि सन्धि का सन्देह था। ऐसे समय कुछ अन्यथा विचार न करते हुए केवल कर्तव्य की भावना से यह रावण का ही भाई नहीं, यदि रावण भी शरण में आते तो अवश्य ही आश्रय प्रदान करूँगा-यह श्रीराम की शरणागत के प्रति कर्तव्य परायणता थी। शरणागत चाहे जैसा अपराधी हो, शरण्य की श्रेष्ठता और उदारता इसी में है कि शत्रु के अपराधों को भूलकर उसे अभय प्रदान कर आश्रय दें। उन्होंने विभीषण को केवल अभय-आश्रय ही नहीं, लंका के सिंहासन पर अभिषिक्त भी कर दिया था। रावण के मृत्यु के साथ उनका प्रति वैर भी शान्त हुआ था। 'मरणान्तानि वैराणि निवृत्तं नः प्रयोजनम्। कियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।। रावण की मृत्यु के पश्चात्, श्रीराम ने पत्नी सीता की विशुद्धि को लेकर जनता के अनेक कटु वचन सुने और सहे। कटुवचन सुनने और सहन करने में, जनता की भावना का आदर करना, इस विशेषता को दर्शाता है।

श्रीराम की मर्यादापालन की कर्त्तव्य परायणता भी दिव्य है। जिस राज्य प्राप्ति के लोभ से सुशिक्षित और उन्नतमना भाई आपस में कट जाते हैं, उनके लिए महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम का आदर्श रखा है। देवतागण भी श्रीराम की स्तुति करते हैं।

'शार्ङ्गधन्वाहृषिकेश पुरुषः पुरुषोत्तम।
अजितखंगडःधृग्निष्णुःकृष्णश्चैव ब्रह्मदलं।।

वाल्मीकि के राम, उनके रामायण के चरित नायक हैं, गुणों से सम्पन्न हैं और विवेकशील हैं। राम एक चक्रवर्ती राज्य के अधिष्ठाता हैं तो भी प्रजा के साथ उनकी घनिष्ठता है, सहृदयता है। उनमें राजा-प्रजा का भेदभाव नहीं है। यह राजा और प्रजा के सम्बन्धों का सर्वश्रेष्ठ आदर्श है। रावण के वध के पश्चात् मन्दोदरी विलाप करते हुए भी श्रीराम के चरित्र का गुणगान करती है-''निश्चय ही श्री रामचन्द्र जी महान योगी एवम् सनातन परमात्मा है। इनका आदि, मध्य और अन्त नहीं है। वे महान से भी महान, अज्ञान, अन्धकार से परे तथा सब को धारण करने वाले परमात्मा हैं।, जिन्हें पराजय करना सर्वथा असम्भव है वे अधीश्वर हैं। (वा.रा.-111. 11.14) जहाँ भी दुर्बल पर सबल का अत्याचार हो, ध र्म के ऊपर अधर्म का आघात हो, तपस्वी की तपस्या में विघ्नबाधा आती हो वहीं पर वीर क्षत्रिय का कार्य होता है। इसी कार्य का निबाहन करने वाले थे वाल्मीकि के राम। वाल्मीकि रामायण के 'सुन्दरकाण्ड' के 51 वें सर्ग में श्रीराम के लोकोत्तर ऐश्वर्य का वर्णन करते हुए हनुमान जी रावण को कहते हैं- 'तीनों लोकों में कोई भी ऐसा नहीं है जो रामचन्द्र जी का अपराध कर सुखी रह सकें।' श्रीराम एक पत्निव्रत है उनका भ्रातृप्रेम (वा.रा.-2.26.3) शरणागत वात्सल्यता (वा.रा.-6.8.3, 8.6.96, 23.24, 39. 4,मातृ प्रेम, पितृभक्ति 2.92, 6.8, 2.98, 28.20) एक मर्यादा पुरुषोत्तम का आदर्श उदाहरण है। वाल्मीकि के राम एक ओर राक्षसी एवम् आसुरी शक्ति के पापमय चंगुल से छुटकारा कर राष्ट्र का उद्धार करते हैं, दूसरी ओर मानव जीवन के नित्यानित्य प्रेम और पवित्रतामय संकल्पना का आदर्श समाज में स्थापित करते हैं। आसूरी प्रकृति के सजीव प्रतीक रावण का उच्छेद कर, उन्होंने समग्र विश्व में मानव की विजय पताका फहराई है। वाल्मीकि के राम मनुष्य हैं, न कि ईश्वर। वस्तुतः राम मनुष्य ही थे और मर्यादा का पालन करने के कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम कहलाये। अतः उनके आदर्श चरित्र का पालन करने में ही मनुष्य मात्र का हित और गौरव है।

आदि कवि वाल्मीकि का रामायण आदि महाकाव्य है। वह भारतीय संस्कृति का धरोहर है। वाल्मीकि के राम भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। वह राष्ट्र नहीं, जहाँ रामराज्य न हो, वह जंगल भी राष्ट्र होगा जहाँ राम का निवास हो- 'न हि सद्भविता राष्ट्रं यत्र रामो न भूपतिः।
तद्वनं भविता राष्ट्रं यत्र रामो निवत्स्यामि।।

11-भोसले इलाइट, शिवाजी नगर, पुणे (महा.)

राम नवमीं पर विशेष

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

भारतीय संस्कृति के मेरूदंड

-डॉ. रमानाथ त्रिपाठी

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बँधे हुए हैं। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता-परिवार प्रेम से हम वंचित रह जाएंगे।

कोई पूछे कि भारतीय संस्कृति की परिभाषा क्या है, तो बेहिचक उत्तर दिया जा सकता है कि राम का उदात्त चरित्र ही भारतीय संस्कृति है। एक पूर्ण पुरुष में जितने भी अच्छे गुण हो सकते हैं, राम उन सबके पुंज हैं। उन्होंने अनेकविध कष्ट झेलते हुए भी घर-परिवार, समाज, राष्ट्र और अखिल विश्व के समक्ष त्याग, स्नेह शील और नैतिकता के जो आदर्श प्रस्तुत किये, उससे भारत का जन-जन प्रभावित है। यहाँ की चप्पा-चप्पा भूमि पर रामत्व की छाप है। रामायण घरेलू जीवन का महाकाव्य है। ऐसा ग्रंथ किसी अन्य देश या संस्कृति में उपलब्ध नहीं।

पिता की आज्ञा शिरोधार्य

कैकेयी ने भले ही छलपूर्वक राजा दशरथ से दो वर माँग लिये हों, पर राजा दशरथ ने कभी अपने मुँह से राम को वन जाने के लिए नहीं कहा था। वे मन ही मन चाहते थे कि राम वन न जाएं। माता कौसल्या उन पर दबाव डाल रही थीं कि माँ का महत्त्व पिता से बढ़कर है। वे माँ का आदेश मानकर वन न जाएं। गुरु वसिष्ठ, मन्त्रिमंडल के सभी सदस्य, पूरा रनिवास और समस्त प्रजाजन राम के पक्ष में थे। लक्ष्मण फुंफकारते हुए कह रहे थे-रघुनन्दन, इसके पहले कि कोई वनवास की बात जाने, आप राज्य पर अधिकार कर लीजिए। मैं आपकी बगल में धनुष लेकर खड़ा हो जाऊँगा। आप काल के समान युद्ध कीजिए। मैं भरत का पक्ष लेने वालों को वाणों से बींध दूँगा। पिताजी कैकेयी का साथ देंगे तो उन्हें भी दंडित करूँगा।

कैकेयी और मंथरा को छोड़कर कोई भी राम का विरोध नहीं कर रहा था। यदि वे वनवास को स्वीकार न करते तो कोई उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था। ऐसी अनुकूल परिस्थिति में भी उन्होंने इतना बड़ा त्याग किया, किसलिए? इसलिए कि श्रद्धेय पिता द्वारा दिए वचन झूठे न हो जाएं। इस प्रकार उन्होंने राज्य का सुख त्याग कर और 14 वर्षों के कठोर व्रत को स्वीकार कर पितृ भक्ति का अभूतपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया। पिता ने भी पुत्र वियोग में प्राण त्याग कर चरम वात्सल्य का परिचय दिया। राम ने परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखा। यहाँ तक कि इतना बड़ा दण्ड देने वाली सौतेली माता कैकेयी की भी उन्होंने निन्दा नहीं की। पंचवटी में जाड़े की ऋतु में कोहरे से ढंकी गोदावरी में स्नान के लिए जाते हुए लक्ष्मण ने कहा था- ऐसी शीत ऋतु में महात्मा भरत तड़के सवेरे उठकर सरयू में नहाते और ठंडी धरती पर सोते होंगे। ऐसा धर्मात्मा पुत्र पाकर भी कैकेयी इतनी क्रूर कैसे हो गयीं? राम बोले-लक्ष्मण, रहने दो, माता कैकेयी की निन्दा न करो। इस समय तुम केवल इक्ष्वाकुनाथ भरत की चर्चा करो।

मर्यादा की स्थापना

विमाता कैकेयी ने राम के प्रति क्रूर होकर घोर अनिष्ट किया था। लेकिन उन्होंने भी राम के चरित्र के विषय में जो शब्द बोले, विचारणीय हैं। जब भरत ननिहाल से लौटकर माता कैकेयी से मिले और उन्हें ज्ञात हुआ कि राम को वनवास दिया गया है तो उन्होंने चकित होकर पूछा-क्या राम ने किसी ब्राह्मण का धन हरण किया है? किसी निरपराध व्यक्ति की हत्या की है अथवा क्या उनका मन परायी नारी की ओर चला गया है? उन्हें किसलिए वनवास का दन्ड दिया गया है? कैकेयी ने बताया-बेटा, राम ने न तो किसी का धन छीना है और न किसी निरपराध की हत्या की है। वह तो परायी नारी की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता-न

रामः परदारान् स चक्षुभ्यमिपि पश्यति। मानस में भी कहा गया है-**जेहि सपनेहु परनारि न हेरी।** उड़िया रामायण के अनुसार राम परायी नारी को सहोदर या माता कौसल्या के समान मानते थे। सीता ने भी स्वीकार किया था कि उनमें ही राम का गहन अनुराग है। परिस्थितियों से विवश होकर राम ने सीता को निर्वासित किया था किन्तु उन्होंने अन्य किसी नारी का पाणिग्रहण नहीं किया था। उन्होंने दाम्पत्य जीवन की मर्यादा स्थापित की थी। राम के चरित्र से प्रभावित होकर अन्य रामायणी पात्र भी उनके जैसा आचरण करते थे। लक्ष्मण ने भाभी सीता के चरणों को छोड़कर कभी आँख उठाकर उनके सौंदर्य को नहीं देखा था।

आरम्भ से ही राम जनमत को आदर देने वाले लोकप्रिय शासक रहे थे। जब वे अयोध्या को छोड़कर वन की ओर चले थे तो उनके पीछे ब्राह्मण, ऋषि आदि ही नहीं रजक(धोबी) तन्तुवाय(दर्जी) और अनेक प्रकार के शिल्पी(कारीगर) आदि जन भी अपने-अपने घर छोड़कर चल पड़े थे। राम उन्हें कौशल-पूर्वक ही लौटा सके थे। चित्रकूट से दण्डकारण्य की ओर चलते समय अनेक ऋषियों की हड्डियों के ढेर लगे हैं। इन्हें राक्षसों ने मारा है। राम, तुम नगर में रहो या वन में, तुम्हीं हमारे शासक हो। इन राक्षसों से हमारी रक्षा करो। राम ने उन्हें रक्षा का आश्वासन दिया था। मानस में भी राम ने कहा है-**निसिचरहीन करउँ महि, भुज उठाइ प्रन कीन्ह।**

वे धनुष की प्रत्यंचा टंकारते हुए और भारी पगों से धरती को कँपाते हुए दक्षिण की ओर बढ़े थे। मानों वे राक्षसों को चुनौती दे रहे थे। उनके इस कृत्य से ही स्पष्ट है कि सीताहण न भी हुआ होता तो भी उन्होंने राष्ट्रविरोधी राक्षसों से टक्कर ली होती। कुछ लोगों को भ्रम है कि राम ने एकाध बार मर्यादा का उल्लंघन किया है। जैसे, उन्होंने बाली को छिपकर मारा। बाल्मीकि रामायण को ध्यान से पढ़ा जाए तो पता चलता है कि राम ने बाली को छिपकर नहीं मारा था। बाली ने उनकी ओर वृक्ष और बड़ी-बड़ी शिलाएं फेंकी थीं। राम ने अपने वज्र जैसे वाणों से विदीर्णकर उसे मार गिराया था-**क्षिप्तान् वृक्षान् समविध्य विपुलाश्च तथा शिला। बाली वज्र समैर्बाणैर्वज्रेणेव निपाततः॥**

वस्तुतः सुग्रीव और सभी मंत्रियों को विश्वास हो गया था कि बाली मायावी असुर के साथ युद्ध करते हुए मारा गया है। तभी मंत्रियों ने सुग्रीव का अभिषेक कर वानरों की प्रथा के अनुसार तारा को उसकी पत्नी बना दिया था। इसमें कुछ भी अनुचित नहीं था। लेकिन बाली जब असुर को पछाड़कर आया तो उसने बिना सोचे-समझे निर्दोष सुग्रीव को पीट-पीटकर राज्य से बाहर खदेड़ दिया और अनुज वधु रूमा को बलात् अपनी पत्नी बनाया, सुग्रीव के जीते जी उसने यह अपराध किया था। उसने इससे भी बड़ा एक और अपराध किया था-आतंकवादी राक्षस निरन्तर आर्यावर्त की ओर आते रहते थे। वे उत्पात मचाकर ऋषि संस्कृति को नष्ट कर रहे थे। रावण के साथ बाली की सांठ-गांठ थी। बाली इन आतंकवादी राक्षसों को रोकता नहीं था। राक्षसों की घुसपैठ रोकने और दुराचारी रावण से टक्कर लेने के लिए बाली का विनाश अपरिहार्य था। राम ने उससे युद्ध नहीं किया था, उसे दंडित किया था।

सीता निर्वसन के प्रसंग में किसी रामायण में बताया गया कि राम ने एक धोबी के कहनें पर सीता को निर्वासित किया। किसी रामायण में बताया गया कि रावण का चित्र बनाने के कारण राम ने सीता के चरित्र पर संदेह किया। जबकि बाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने कभी भी सीता के चरित्र पर संदेह नहीं किया। गुप्तचर ने उन्हें बताया था कि नगर, वन-उपवन, हाट-घाट और चौराहों पर खड़े होकर लोग चर्चा करते हैं कि राम ने पराये घर में कई मास तक रही सीता स्वीकार कर अच्छा नहीं किया। अब हमें भी अपनी स्त्रियों को सहना पड़ेगा, क्योंकि जैसा राजा करता है प्रजा उसी का अनुसरण करती है। यह सुनकर राम को गहरा आघात लगा था। जिस जनता के लिए वे सदा समर्पित रहे वही उनका विरोध कर रही थी। राम सीता को प्राणों से भी अधिक चाहते थे। उन्होंने पतिव्रता सीता के चरित्र पर कभी भी संदेह नहीं किया। उन्होंने कहा था- मेरी अन्तरात्मा कहती है कि यशस्विनी सीता शुद्ध है-**अन्तरात्मा च मे वेत्ति सीतां शुद्धां यशस्विनीम्।** ऐसा था तो राम ने सीता को निर्वासित क्यों किया? उन्होंने ऐसा किया प्रजाजन के मत का सम्मान करने के लिए। उत्तर रामचरित नाटक में राम के चरित्र को सही रूप में समझा गया है।

राम के अभिषेक के समय वसिष्ठ ने कहा था-देखो राम, साधारण जनता ने भी ऐसा अनुभव किया है कि यह अभिषेक मानो उनका ही हो रहा है। तुम्हें भेदभाव से ऊपर उठकर सभी का ध्यान रखना होगा। प्रजारंजन तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य है। श्रेष्ठ राज्य की नींव शासकों के व्यक्तिगत त्याग, मर्यादा और बलिदान पर ही रखी जाती है। राम ने गुरु वसिष्ठ को आश्वस्त करते हुए

कहा था-गुरुदेव, प्रजा के अनुरंजन के लिए मुझे अपने सभी सुख, माया-ममता, यहाँ तक कि सर्वाधिक प्रिय जानकी को भी त्यागना पड़े तो मुझे रंचमात्र व्यथा न होगी-**स्नेहं दयांच सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।**
आराधनाय लोकस्य मुञ्चते नास्ति मे व्यथा।

राम ने एक ओर प्रजारंजक राजा के कर्त्तव्य का पालन किया तो दूसरी ओर उन्होंने पति का दायित्व भी निभाया। उन्होंने सीता को पिता के मित्र बाल्मीकि के आश्रम के निकट इसीलिए रखवाया था ताकि ऋषि सीता और उनकी गर्भस्थ सन्तान को संरक्षण दे सकें। सीता को निर्वासित कर वे स्वयं ही निर्वासित हुए थे। लक्ष्मण सीता को वन में छोड़कर जब अयोध्या लौटे थे तो उन्होंने पाया था कि राम इन चारों दिनों तक कक्ष में बन्द रहे थे। वे न सोये थे और न उन्होंने अन्न ग्रहण किया था। उनका मन लगाने के लिए यज्ञ की व्यवस्था की गयी थी। यज्ञ धर्मपत्नी के बिना सम्पन्न नहीं होता। इसलिए उन्होंने किसी अन्य नारी का पाणिग्रहण न कर अपने पार्श्व में सीता की कंचन प्रतिमा स्थापित करायी थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बँधे हुए हैं। जहाँ यह प्रभाव नहीं रह गया है वहाँ माँ, पिता, पुत्र, भाई, बहन के सम्बन्धों की पवित्रता भी नष्ट हो रही है। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता-'परिवार प्रेम' से हम बंचित रह जाएंगे। तब भारत भोगवादी पश्चिम भले ही बन जाए, वह त्याग, सनेह, शील-सम्पन्न नैतिकतावादी देश नहीं रह जाएगा।

छिन जाते हैं सिंहासन

-मित्र-

卐 卐

आँखों पर सत्ता के पर्दे अहंकार आचरणों में
कथनी-करनी में अन्तर हो, चर्चे नये प्रकरणों में
सम्बन्धों में कड़वापन, आडम्बर हो व्यवहारों में
स्वार्थ परस्ती का चिन्तन,आ जाये निजी विचारों में
खुली आँख सोते-सोते, आदत हो जाये सपनों की
अधिकारों के कोलाहल में खो जाये जब अपनापन
होते हैं परिणाम भयानक छिन जाते हैं सिंहासन

मृगमरीचिका यह सत्ता की,समझो सिर्फ भुलावा है
गुलदस्ते हैं कागज के, फूलों का सिर्फ छलावा है।
आदर्शों के राजमहल में, कुण्ठा की दीवारें हैं
बाँट रहे जो दालानों को, सारे अहम तुम्हारे हैं
सिर्फ दिखावा भर हैं, झूठे दावे सब अनुशासन के
खड़े गवाही देते सभी समर्थक भ्रष्ट प्रशासन के
चौराहों पर आ जाती जब, आपस की सारी अनवन
होते हैं परिणाम भयानक छिन जाते हैं सिंहासन

निर्धनता के आँगन में हो रंगीनी की चहल-पहल
झोंपड़ियों की मजबूरी पर हँसते हों जब राजमहल
उम्मीदों पर गिरें बिजलियाँ, टूटे स्वप्न बहारों के
आशा के विपरीत लगें व्यवहार नये संस्कारों के
जीवन की सुख सुविधायें, हों बन्द कहीं गोदामों में
बँट जाये जब राजनीति, ऐसे बैसे कुछ नामों में
आलू, प्याज, नमक से जब भी हुए प्रभावित निर्वाचन
होते हैं परिणाम भयानक छिन जाते हैं सिंहासन

शिवाजी जयन्तीः 19 अप्रैल

शिवाजी के पिता शाहजी बीजापुर-दरबार में दरबारी थे। बीजापुर के नवाब की ओर से जब शाहजी अहमदनगर की लड़ाई में फँसे थे, मालदार खान ने दिल्ली के बादशाह को प्रसन्न करने के लिये बालक शिवाजी तथा उनकी माता जीजाबाई को सिंहगढ़ के किले में बन्दी करने का प्रयत्न किया। लेकिन उसका यह दुष्ट प्रयत्न सफल नहीं हो सका। शिवाजी के बचपन के तीन वर्ष अपने जन्म स्थान शिवनेर के किले में ही बीते। इसके बाद जीजाबाई को शत्रुओं के भय से अपने बालक के साथ एक किले से दूसरे किले में बराबर भागते रहना पड़ा। किन्तु इस कठिन परिस्थिति में भी उस वीर माता ने अपने पुत्र की सैनिक शिक्षा में त्रुटि नहीं आने दी।

माता जीजाबाई शिवाजी को रामायण, महाभारत तथा पुराणों की वीर-गाथाएँ सुनाया करती थीं। नारो, श्रीमल, हनुमन्त तथा गोमाजी शिवाजी के शिक्षक थे और शिवाजी के संरक्षक थे प्रचण्ड वीर दादाजी कोंडदेव। इस शिक्षा का परिणाम यह हुआ कि बालक शिवाजी बहुत छोटी अवस्था में ही निर्भीक एवं अदम्य हो गये। जन्मजात शूर मावली बालकों की टोली बनाकर वे उनका नेतृत्व करते थे और युद्ध के खेल खेला करते थे। उन्होंने बचपन में विधर्मियों से आर्य धर्म, देव मन्दिर तथा गौओं की रक्षा का दृढ़ संकल्प कर लिया।

शाहजी चाहते थे कि उनका पुत्र भी बीजापुर दरबार का कृपापात्र बने। शिवाजी जब आठ वर्ष के थे, तभी उनके पिता एक दिन उन्हें शाही दरबार में ले गये। पिता ने सोचा था कि दरबार की साज-सज्जा, रोग-दाब, हाथी-घोड़े आदि देखकर बालक रोब में आ जाएगा और दरबार की ओर आकर्षित होगा। किन्तु शिवाजी तो बिना किसी ओर देखे तथा बिना किसी ओर ध्यान दिये पिता के साथ ऐसे चलते गये, जैसे किसी साधारण मार्ग पर चल रहे हों। नवाब के सामने पहुँचकर पिता ने शिवाजी की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा-बेटा! बादशाह को सलाम करो। बालक ने मुड़कर पिता की ओर देखा और बोला बादशाह मेरे राजा नहीं हैं। मैं इनके आगे सिर नहीं झुका सकता। दरबार में सनसनी फैल गई। नवाब बालक की ओर घूरकर देखने लगा। किन्तु शिवाजी ने नेत्र नहीं झुकाये। शाहजी ने सहमते हुए प्रार्थना की-शहनशाह! क्षमा करें। यह अभी बहुत नादान है। पुत्र को उन्होंने घर जाने की आज्ञा दे दी। बालक ने पीठ फेरी और निर्भीकता पूर्वक दरबार से चला आया। घर लौटकर शाहजी ने जब पुत्र को उसकी धृष्टता के लिए डाँटा, तब पुत्र ने उत्तर दिया-पिताजी! आप मुझे वहाँ क्यों ले गये थे? आप तो जानते हैं कि मेरा मस्तक भगवान् तथा आपको छोड़कर और किसी के सामने झुक नहीं सकता। शाहजी चुप हो गए। इस घटना के चार वर्ष पीछे की एक घटना है। उस समय शिवाजी की अवस्था बारह वर्ष की थी। एक दिन बालक शिवाजी बीजापुर के मुख्य मार्ग पर घूम रहे थे। उन्होंने देखा कि एक कसाई एक गाय को रस्सी से बाँधे लिये जा रहा है। गाय आगे जाना नहीं चाहती है, पीछे खिंचती है, चीत्कार करती है। और इधर-उधर कातर नेत्रों से देखती है। कसाई उसे डन्डे से बार-बार पीट रहा है। इधर-उधर दुकानों पर जो हिन्दू हैं, वे मस्तक झुकाये यह सब देख रहे हैं। इनमें इतना साहस नहीं कि कुछ कह सकें। विदेशियों के राज्य में रहकर वे कुछ बोलें तो पता नहीं क्या हो। लेकिन लोगों की दृष्टि आश्चर्य से खुली की खुली रह गई। बालक शिवा की तलवार म्यान से निकलकर चमकी। वे कूदकर कसाई के पास पहुँचे और गाय की रस्सी उन्होंने काट दी। गाय भाग गयी एक ओर। कसाई कुछ बोले, इससे पहले तो उसका सिर धड़ से कटकर भूमि पर लुढ़कने लगा था।

समाचार दरबार में पहुँचा। नवाब ने क्रोध से लाल होकर कहा तुम्हारा पुत्र बड़ा उपद्रवी जान पड़ता है। शाहजी! तुम उसे तुरन्त बीजापुर से बाहर कहीं भेज दो।

शाहजी ने आज्ञा स्वीकार कर ली। शिवाजी अपनी माता के पास भेज दिये गये, लेकिन अन्त में एक दिन वह भी आया कि बीजापुर नवाब ने स्वतन्त्र हिन्दू सम्राट के नाते शिवाजी को अपने राज्य में निमन्त्रित किया और जब शिवाजी हाथी पर सवार होकर बीजापुर के मार्गों से होते दरबार में पहुँचे, तब नवाब ने आगे आकर उनका स्वागत किया तथा उनके सामने मस्तक झुकाया। □□□

जन्म शताब्दी पर विशेष

आदर्श आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द

कर्म व अध्यात्म की पावन धारा में आर्यसमाज के महान सन्त एवं स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती में वे सब गुण थे जो व्यक्ति को मानव से ऊपर उठाकर महापुरुष बनाते हैं और महापुरुषों को कालान्तर देवत्व प्रदान कराते हैं। उनकी एक विशेष बात यह रही कि उन्हें न तो कभी बड़प्पन भाया और न कभी बड़प्पन का चोला ओढ़ने का प्रयास किया। अपने जीवन को निरन्तर कठोर साधना की भट्ठी में झोंककर विधि कार्यों की समाजहित में पूर्ति की। हरियाणा की वीरभूमि में (वर्तमान में दिल्ली राज्य स्थित) नरेला गाँव के एक प्रतिष्ठित एवं सम्भ्रान्त कृषक परिवार में 22 मार्च 1911 के दिन स्वामी जी ने देवी स्वरूप श्रीमती नान्ही देवी की कोख से जन्म लिया। आचार्य भगवान देव संन्यास लेने पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती के नाम से प्रख्यात हुए। अँग्रेजी शासनकाल के दौरान 1930 में सरदार भगतसिंह को फाँसी दिए जाने पर देश की स्वतन्त्रता के लिए कालेज व गृहत्याग कर आजादी की लड़ाई में कूदे। उन्होंने अपनी करोड़ों रुपये की चल-अचल सम्पत्ति आर्यसमाज व गुरुकुल के लिए दान कर दी। महान इतिहास वेत्ता, संस्कृत मर्मज्ञ स्वामी ओमानन्द ने प्रारम्भिक शिक्षा नरेला से प्राप्त करने के पश्चात् उच्च शिक्षा सेंट स्टीफन कॉलेज दिल्ली, गुरुकुल वेद विद्यालय दिल्ली व गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में ग्रहण की। 1936 में नैष्ठिक दीक्षा के बाद भगवानसिंह आचार्य भगवानदेव कहलाए और 4 अप्रैल 1970 को संन्यास दीक्षा लेकर स्वामी ओमानन्द सरस्वती के नाम से भारत ही नहीं विश्वभर में विख्यात हुए। शुद्ध सात्विक भोजन के सहारे 92 वर्ष की आयु के वाद अपना शरीर त्यागने वाले स्वामी जी आजीवन ब्रह्मचर्य के कठोर अनुरुप गर्मी-सर्दी में नंगे तन केवल कोपीन कटि वस्त्र चादर के सहारे रहते थे। वे प्रात: 4 बजे जागरण के पश्चात् रात्रि 11 बजे शयन को जाने के अलावा नित्य प्रति व्यायाम, संध्या, हवन आदि को अपनी दिनचर्या के मुख्य अंश मानते थे। संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान् कहलाए जाने वाले वेदोपनिषद्, षट्शास्त्र मर्मज्ञ प्राचीन-अर्वाचीन विविध भाषाओं व लिपियों के ज्ञाता प्राच्य शास्त्रास्त्र निपुण, सुयोग्य लेखक, रसायनज्ञ एवं कुशल वैद्य के रूप में भी उनकी ख्याति पूरे देश में फैली है। साहित्य रचनाकार के रूप में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दर्जनों ग्रन्थों के माध्यम से दिया।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के अलावा निजाम हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा, गोरक्षा आन्दोलन का कुशल नेतृत्व करते हुए कठोर जेल यात्राएं भी कीं। स्वामी सर्वानन्द सरस्वती को अपना गुरु मानकर उनसे संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। सामाजिक कार्यों में भी स्वामी जी की उपलब्धियाँ कम नहीं रहीं। 1947 में देश विभाजन, दैवी आपदा, सूखा व बाढ़ पीड़ितों की सहायता, सामाजिक कुरीतियों व बुराइयों के अलावा शराब, माँस, अण्डे व नशीले पदार्थों के विरुद्ध आन्दोलन चलाया। वहीं असहाय, अनाथों की यथासम्भव सहायता को अपना मूल उद्देश्य मानते थे। संस्कृत अकादमी दिल्ली व हरियाणा सरकार द्वारा उन्हें संस्कृत पंडित की उपाधि के सम्मान से अलंकृत किया। विद्या मार्तण्ड गुरुकुल काँगड़ी, आर्यसमाज बम्बई सहित सैकड़ों सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक संस्थाओं द्वारा उच्चकोटि के सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। स्वामी जी ने धर्म प्रचार व एतिहासिक खोज के उद्देश्य से जापान, जर्मन, इंग्लैड, आस्ट्रेलिया, सोवियत संघ, मारीशस, अफ्रीका, जावा, सुमात्रा, थाईलैंड, चीन, ताईवान आदि देशों की भी यात्रा की। स्वामी जी झज्जर गुरुकुल के अलावा विभिन्न संस्थाओं से जुड़े रहे। कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली, श्रीमद् दयानन्दार्ष विद्यापीठ के कुलपति यतिमण्डल भारत, आर्य प्रतिनिधि हरियाणा के प्रधान, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के सीनेट सदस्य, परोपकारिणी सभा अजमेर के कार्यकारिणी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व विद्यासभा गुरुकुल काँगड़ी के मुख्य स्तम्भ होने के अलावा ऑल इण्डिया इतिहास परिषद् भारत सरकार में सलाहकार के पद पर रहे। उन्होंने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करवाकर विश्व की सबसे भारी व कीमती पुस्तक का निर्माण कर सम्भवत: गिनीज बुक में रिकार्ड बनाया। झज्जर गुरुकुल में प्रान्तीय पुरातत्व संग्रहालय आर्ष आयुर्वेदिक रसायनशाला आदि संस्थाएं स्थापित कीं। दयानन्द संस्थान के वेद भाष्य प्रचार अभियान में भी उनकी महती भूमिका रही। एक हजार परिवारों में चारों वेदमाला हिन्दी में पहुँचाये। ❑❑❑

पण्डित वीरबल का बुद्धि कौशल

-अशोक कौशिक

सन्त तुलसीदास की एक प्रसिद्ध चौपाई है - 'कर्म-प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करि सो तस फल चाखा।'

अकबर के जीवन की एक दिन की बात है कि नित्य की भांति प्रात:काल जब उसके पानपेशकार ने उसे पान पेश किया, अकबर ने पान लेकर मुख में डाला तो उसकी जीभ पर पान के चूने का प्रभाव हुआ और उसका मुख बिचक गया। यद्यपि अकबर के पान का चूना हीरे-मोतियों का होता था फिर भी चूना तो चूना ही है। अकबर ने पीड़ा का अनुभव करते हुए पानपेशकार को दण्डित करने का निश्चय कर कहा, 'बाजार से तुरन्त पाव भर चूना ले कर आओ।' इसका अभिप्राय न समझते हुए भी पानवाला चूना लेने के लिये गया और दुकानदार से चूना देने के लिये कहा। दुकानदार को आश्चर्य हुआ कि अकबर को बाजार के चूने की क्या आवश्यकता पड़ गई। उसने उससे पूछा, 'तुम बादशाह के पानपेशकार हो न ? पानवाले ने हां की तो दुकानदार का माथा ठनका। उसने फिर पूछा कि वह चूना किसके लिये ले जा रहा है तो पानपेशकार ने अभी-अभी घटित घटना का पूरा विवरण सुना दिया।

सुनते ही दुकानदार के मुख से निकल गया-'आज तुम्हारी खैर नहीं है।' पानपेशकार असमंजस में पड़ गया। दुकानदार ने उसे समझाया कि उसके पान में चूना थोड़ा सा अधिक होने के कारण अकबर की जीभ फट गई और उससे क्रोधित हो कर तुमको दण्ड देने के लिये वह चूना मंगाया है जिसे वह तुमको खाने के लिये कहेगा और उससे तुम्हारी की मृत्यु हो जायेगी। सुनते ही पानपेशकार की चलती सांस रुक गई। वह घबरा कर बोला 'अब मैं क्या करूं ?'

चूने वाले ने कहा, देखो, आगे जो पहली गली है उसमें एक पण्डित वीरबल नाम के सज्जन रहते हैं, उनके पास चले जाओ, उनको सारी बात समझाकर उनसे इस संकट से बचने के उपाय के विषय में पूछना, हो सकता है वे कुछ तुम्हारी सहायता कर सकें। पेशकार उसके बताये मार्ग पर गया और उनके पास जा क उसने अपनी सारी स्थिति का वर्णन कर उससे बचने का उपाय बताने के लिये प्रार्थना की। पं० वीरबल ने कुछ सोच कर कहा, देखो तुम बाजार से एक सेर गाय का घी ले लो। आजकल जाड़ों के दिन होने से घी अच्छा जमा हुआ होगा। जब तुम चूना लेकर महल के पास पहुंचो तो घी की डलियां ले कर पेट में डाल लेना। पाव भर घी बचा कर रखना और अकबर के पास पहुंचने पर, उसे चूना देने से पहले वह घी मुख में डाल लेना, उसे निगलना नहीं। जब अकबर तुमसे वह चूना निगलने के लिये कहे तो कुछ इस प्रकार करना कि जीभ को बचा कर सारा चूना ऐसी तरकीब से मुख में डालना कि वह सीधा पेट में चला जाय। इससे तुम्हारा जीवन बच सकता है।

वही हुआ। पानपेशकार के द्वारा चूना पेश किये जाने पर अकबर ने उससे उस चूने को खा जाने के लिये कहा और सोचा कि अब इसकी खैर नहीं, यह सोच कर वह प्रसन्नता अनुभव करने लगा कि उसने बड़े पुण्य का काम कर दिया। उधर पानपेशकार ने पण्डित वीरबल द्वारा बताये तरीके से काम किया और सकुशल घर पहुंच गया। क्यों कि सेर भर घी के पेट में पड़ने के कारण उसका भीतरी भाग घी में सन जाने से उसमें गया चूना अपना विपरीत प्रभाव नहीं कर सका और पेट के मल के साथ ही यथावसर पेट से बाहर आ गया।

दूसरे दिन पानपेशकार ने अकबर के सम्मुख नियमानुसार पान पेश किया तो अकबर उसे देख कर आश्चर्य चकित रह गया। उसने पूछा, कल तुमने ही पान पेश किया था ? जी हुजूर उस समय मैंने तुमसे बाजार से चूना मंगाया था ? जी हुजूर। हमने तुमसे वह चूना खाने के लिये कहा था और तुमने वह चूना उसी समय मुख में डाल लिया था? जी हुजूर। ताज्जुब है, फिर तू जिन्दा कैसे है? कड़क कर अकबर ने पूछा तो पानपेशकार डर गया और वह गिड़गिड़ा कर अकबर से प्राणों की भीख मांगने लगा। अकबर फिर बोला, वो तो ठीक है। इस बात से यह तो साबित हो गया कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। पर यह तो बता कि तू बच किस तरह गया? अकबर के कहने पर पानपेशकार ने वह सारी कहानी, जो उस पर बीते दिन बीती थी,

यथावत् उसको सुना दी। अकबर समझ क्या कि सेर भर घी के प्रभाव से चूना निष्प्रभाव हो गया और पानपेशकार की जान बच गई।

इस प्रकार पानपेशकार का जीवन बच गया। इससे प्रत्यक्ष होता है कि विगत कर्मों के फलस्वरूप ही उस निरपराध पानपेशकार को संयोगवश पं० वीरबल का आश्रय मिल गया और पण्डित वीरबल ने अपने बुद्धिकौशल से उसको जीवन का उपाय बता दिया अन्यथा अकबर ने उसे अघोषित प्राणदण्ड दे ही दिया था।

अकबर के इस प्रकार के अन्य भी कर्म है जिनसे उसकी क्रूरता, निष्ठुरता, हृदय-हीनता और उसकी अपरिपक्वता का परिचय प्राप्त होता है। इतना ही नहीं वह निम्न-स्तर का कामान्ध भी था। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है उसके द्वारा गठित आगरा का 'मीनाबाजार'। अकबर ने अपनी वासना तृप्ति के लिये उस बाजार का संचालन किया था और नियम बना दिया था कि उस बाजार में पुरुषों का प्रवेश सर्वथा निषिद्ध है। इस कारण उसमें कोई पुरुष प्रविष्ट ही नहीं होता था। किन्तु अपने लिये उस ने मार्ग निकाल लिया था। मीना बाजार जाने के लिये अकबर स्त्रियों का परिधान धारण कर ऊपर से बुरका डाल लिया करता था और मुख छिपा कर वह नियमित रूप से मीनाबाजार में भ्रमण करता हुआ अपनी वासना की तृप्ति किया करता था। ऐसा क्रूर, निर्दयी, निष्ठुर और कामातुर व्यक्ति अपने पूर्व-जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप किशोरावस्था में ही भारत जैसे महान् देश का बादशाह बन कर अकबर महान् कहलाया, जिसके योग्य वह कदापि नहीं था।

पण्डित वीरबल अपने बुद्धिबल से आगरा की गलियों में अपना साधारण जीवन व्यतीत कर रहे थे, जिसके परिणाम स्वरूप वह उस क्षेत्र में सबके परिचित बन गये थे, उसी के परिणाम स्वरूप संयोग से अकबर का पानपेशकार, अपने प्राणों को संकट से बचाने का उपाय जानने के लिये पहुंच गया और उसके माध्यम से अकबर को पं० वीरबल के बुद्धि कौशल का ज्ञान हुआ, जिससे वह प्रभावित हुआ और उसने बीरबल को अपने दरबार में आमन्त्रित किया तथा उनकी बुद्धि के प्रताप को समझकर अपने मन्त्रिमण्डल में सम्मानित स्थान दिया।

-385 साइट 9, विकासपुरी, नई दिल्ली

धर्म प्रचार में प्राप्त सहयोग राशी

सर्वश्री-अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ-दिल्ली.11000रु. शत्रुघ्नलाल गुप्ता श्रीमती सुशीलागुप्ता-राँची-11000रु. मृदुलाआनन्दचौहान-डिफेन्सकालोनी-5000रु. डा. सन्तोषराय(हि.म.स.)दिल्ली-4000रु.।आर्यसमाज सीब्लाक-जनकपुरी-2100रु.। के.के.शुक्ला-श्रीनिवासपुरी-2100रु.। आर. के. जोशी-आर.के.पुरम्-2100रु.। प्रभा खुराना-डिफेन्स कालोनी-2100रु.। अनिल घई आर्य-बड़ौदा-1400रु.। संजय त्यागी- बुराड़ी-4100रु. । वावूराम जी-नयावाँस-3500रु.। अजय सहगल-डिफेन्स कालोनी-3400रु.। श्याम सिंह शशि-दिल्ली-1000रु. ।रविन्द्रकुमार शर्मा-गाजियाबाद- 1000रु.।अर्चना खोसला-लन्दन-1000रु.। एस.एम. गुलाटी-नई दिल्ली-1000रु.। महिला आर्यसमाज- लाजपतनगर-500रु. । सुनील घई-लाजपतनगर-501रु.। राजेन्द्र चौधरी-नयावाँस-501रु.। मंजुशर्मा-नरेला-500/ अभिमन्यु-गुलाबीबाग-601रु.।राजवीर सिंह-हिरनकी-501रु.। खजानसिंह-पलवल-365रु.। आर्यसमाज-मदनगीर-250रु.। विजय गुप्त- मदनगीर-250रु.। भजन मंडली- कुशक-340रु.। डी. आर.आर्य-नयाबाँस-152रु.।

1100रु. देने वाले

सर्वश्री-आर्यसमाज- साकेत। उत्तमकुमार- नयाबाँस। गणेशदास गरिमा गोयल- नयाबाँस। राजवीर सिंह तंवर-श्रीनिवासपुरी। रामविहारी विश्वकर्मा- लक्ष्मीनगर। वेदप्रकाश विद्यार्थी-रामाकृष्णापुरम्। ओमप्रकाश आर्य-हापुड़। टी.टी. चेरीटेबल ट्रस्ट-करोलबाग। दीपचन्द विजय कुमार-कीरतपुर। रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल-सरोजनीनगर। जितेन्द्र जैन- केशव नगर। महिलाआर्यसमाज-लाजपतनगर। आर्य समाज- नयाबाँस। मनीष चोपड़ा-राजेन्द्र नगर। हरीओम-नेबसराय। विजय शर्मा-जनकपुरी। चन्द्रकान्ता-जनकपुरी। डा.ज्ञानचन्द-गुड़गाँव। चन्द्रभान गुप्ता- अशोक बिहार। जवाहर सिंह मान-होलम्बी खुर्द।

101रु. देने वाले

सर्व श्री:- वीरेन्द्र नारायण त्रिपाठी-मयूरविहार। विश्वनाथ प्रसाद जायसवाल-मयूरविहार। फिरीचन्द्र-जगतपुर। विजयपाल सिंह-करावलनगर। दिनेश-केशव नगर। रघुवीर सिंह-टिगीपुर। सूरजभान-टिगीपुर।प्रतापसिंह गुप्त-जनकपुरी। रामकृष्ण सतीजा- जनकपुरी। बलजीत सिंह मान-हिरनकी। रघुनन्दन चौहान-सुंगरपुर। ब्रजलाल-केशवनगर।

रक्तअल्पता या एनीमिया: कितना गम्भीर

-डॉ. आर.सी.गुप्ता

भारत की लगभग 40 प्रतिशत आबादी रक्तअल्पता या एनीमिया की शिकार है और यह रोग बेपढ़े गरीब लोगों तक ही सीमित न होकर सभी वर्गो में महामारी का रूप ले रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण कुपोषण है जो सही प्रकार के भोजन की कमी, पाचन न होने, तथा शरीर में रक्त चूसने वाले कृमियों के कारण है। जहाँ गरीब को तो उचित भोजन, उचित मात्रा में नहीं मिल पा रहा है, वहीं मध्यम और उच्च वर्ग के लोगों में यह रोग नये फास्ट फूड, दूषित अन्न, फल और सब्जी तथा उल्टे सीधे भोजन तथा कुपाचन के कारण है।

सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं की कुल आबादी की 45 प्रतिशत महिलाएं किसी न किसी रोग की शिकार हो डाक्टरों के चक्कर लगा रही हैं और इनमें से अधिकांश महिलाएं विकासशील एवं अविकसित देशों की हैं। एक ओर तो ये महिलाएं अपनी गरीबी और अशिक्षा के कारण अनेक रोगों से ग्रस्त हैं, दूसरी ओर इन बीमारियों से परिवार के आय का एक बड़ा भाग चिकित्सा में खर्च हो जाता है, चाहे यह चिकित्सा झाड़फूँक, टोना-टोटका इत्यादि हो या फिर कोई और विधा हो। आधुनिक चिकित्सा तो इन्हें मिल ही नहीं पाती है और अगर मिल भी सकती है तो वह इतनी मँहगी है कि ये या इनके परिवार वाले चिकित्सा का खर्च वहन नहीं कर सकते।

मानव शरीर में रक्त की सही मात्रा होनी आवश्यक है क्योंकि हृदय में साफ किया और पोषक तत्वों से भरपूर रक्त शरीर के सभी भागों के कोषों में पहुँचता है और वही फिर अंगों को पोषण देकर और दूषित पदार्थो को लेकर वापस हृदय में आता है। फिर यही रक्त शरीर में मौजूद या उत्पन्न दोष और विकारों को लेकर फेफड़ों, जिगर, गुर्दो तथा चर्म में जाता है, जिनसे उनका उत्सर्जन किया जाता है। शरीर को पूर्णत: स्वस्थ रखने के लिए रक्त की उचित मात्रा पुरुषों में सामान्यत: 13-18 प्रतिशत ग्राम तथा महिलाओं में 12-16 प्रतिशत ग्राम होती है। 1987 में विश्व के 45 देशों में कार्य कर रही अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने सुरक्षित मातृत्व के लिए कुछ ठोस कदम बताये थे, इसमें से प्रमुख था- गर्भावस्था में रक्तअल्पता को कम करना। इन महिलाओं में लौह की कमी रक्तअल्पता का प्रमुख कारण होती है, जिसका प्रभाव माँ और बच्चे दोनों पर पड़ता है। प्राय: देखा गया है कि रक्तअल्पता की स्थिति में प्रसव भी समय से पूर्व हो जाता है और शिशु भी कमजोर और कम वजन का हो होता है। इसके अतिरिक्त रक्तअल्पता से घबराहट, कमजोरी, काम करने की कम क्षमता, हृदय पर अधिक भार तथा रक्त में कम प्राणवायु ऑक्सीजन का होना है। इसके अतिरिक्त रक्तअल्पता के कारण संक्रमण से लड़ने की क्षमता तथा शल्य क्रिया को सहने की शक्ति भी कम हो जाती है एवं प्रसव के समय रक्त स्राव बढ़ जाता है।

भारत के लिए एनीमिया रोग एक गम्भीर समस्या है, जिसकी ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिए जाने के कारण गर्भवती महिलाओं की मृत्यु दर पररोक लगा पाना सम्भव नहीं हो पा रहा है।

महिलाओं में खून की कमी होना एक साधारण रोग समझ कर इसकी गम्भीरता को अनदेखा किया जा रहा है। शारीरिक रूप से स्वस्थ दिखने वाली आम महिला को यह मालूम नहीं होता है कि स्वस्थ रहने के लिए उसके शरीर में सामान्य रूपसे 12 से 16 ग्राम हीमोग्लोबिन होना चाहिए। भारतीय चिकित्सा अनुसन्धान परिषद् के अनुसार 1985-86 में 13.1 प्रतिशत गर्भवती महिलाएँ अति गम्भीर रक्तअल्पता (7 ग्राम प्रतिशत से कम) तथा 40.8 प्रतिशत गर्भवती महिलाएँ साधारण रक्तअल्पता (10-11 ग्राम प्रतिशत) की शिकार थीं।

मातृत्व पर एनीमिया के कुप्रभाव को 3 श्रेणियों में बाँट कर देखा जाता है। पहली श्रेणी में हीमोग्लोबिन 10-11 ग्राम प्रतिशत हो तो एनीमिया का प्रभाव हल्का होता है जिसे महिला रोगी बिना अधिक परेशानी के गर्भ एवं प्रसवकाल को झेल लेती है। लेकिन दूसरी श्रेणी में 7-10 ग्राम प्रतिशत के बीच में एवं तीसरी श्रेणी 7 ग्राम से कम। गर्भवती महिलाओं को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उनका शारीरिक स्वास्थ ठीक नहीं होने के कारण उनकी कार्यक्षमता में कमी आना तथा प्रसव के दौरान होने वाले खतरनाक परिणाम में मृत्यु होने तक की आशंका बनी रहती है।

भारत सहित दूसरे विकासशील देशों में 40 से 80

प्रतिशत गर्भवती महिलाएँ खून की कमी की शिकार हैं। इनमें से 20 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं की मौत एनीमिया रोग के कारण होती है। विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों में एनीमिया रोग से पीड़ित महिलाओं की संख्या कम है। इसका कारण यह है कि वहाँ की महिलाएँ अपने शारीरिक स्वास्थ्य की ओर पूरा ध्यान देती हैं। अब से 50 वर्ष पूर्व जब लेखक चिकित्सा शास्त्र का विद्यार्थी था उस समयकी एक प्रसिद्ध पाठ्य पुस्तक में एक रोगी के बारे में लिखा था कि उसकी हीमोग्लोबीन 7 ग्राम प्रतिशत थी और यह महिला 1-2 वर्षों से ब्रिटेन के उत्तरी समुद्र क्षेत्र में रहती थी, जहाँ पर कुछ फल और सब्जी ही खाने को मिलती थीं। कितना आश्चर्य हुआ कि पाठ्य पुस्तक में (7 ग्राम प्रतिशत) हीमोग्लोबीन को इतना गम्भीर बताया जा रहा था। इस देश में लगभग 5 प्रतिशत ऐसी ही महिलाएँ हैं जो केवल घर गृहस्थी, खेत इत्यादि पर काम ही नहीं पर साथ में गर्भधारण तथा प्रसव की कड़ी परीक्षा के बीच गुजरती हैं। यह सत्य है कि इन महिलाओं की कार्यक्षमता तथा रोगों से लड़ने की शक्ति बहुत कम होती है और प्राय: बीमार रहती हैं। गर्भ के दौरान गरीब व निम्न मध्यवर्गीय परिवार में महिलाओं के खानपान पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता। इतना ही नहीं, बच्चे की चाह में परिवार के लोग यह भी नहीं सोचते हैं कि अभी वह गर्भधारण करने लायक है भी या नहीं। बेटे की चाह और परिजनों के दबाव में वह गर्भधारण करने के लिए मजबूर हो जाती है। ऐसी स्थिति में कई महिलाओं की प्रसव के दौरान खून की कमी के कारण मृत्यु हो जाती है। इसके अलावा निम्न वर्ग की महिलाओं में साफ सफाई न करने की वजह से कई तरह के रोग जैसे- मलेरिया, दस्त, पीलिया और वायरल बुखार आदि हो जाते हैं। ये रोग भी प्रसव के समय कई बार मौत का कारण बन जाते हैं। प्रसव अथवा उस समय की शल्यक्रिया के लिए रक्ताधान आवश्यक हो जाता है और फिर यहाँ पर समाज का एक और विकृत रूप देखने को मिलता है, वह है परिवार वालों का रक्तदान करने में हीले-हवाले, आना-कानी और पैसों से रक्त खरीदने की बात, चाहे इन महिलाओं की मृत्यु हो जाय अथवा मलेरिया, दस्त, पीलिया और एड्स जैसे भयंकर रोग के शिकार हो जाएँ, इनको कोई परवाह नहीं है। विकासशील देशों में रक्तअल्पता का एक बड़ा कारण पेट में कीड़ों का होना भी है। पेट में हुकवर्म नाम का एक कीड़ा प्रतिदिन एक औरत अथवा आदमी के शरीर में 0.25 मिलीग्राम खून चूसता है और प्रत्येक के शरीर में ऐसे अनेक कीड़े होते हैं। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार ये कीड़े 5 मिलीग्राम प्रतिदिन के हिसाब से एक माह में 50 मिलीग्राम खून चूस कर शरीर में हीमोग्लोबीन की मात्रा कम कर देते हैं जिससे सामान्य स्त्री पुरुष एनीमिया के शिकार हो जाते हैं।

गर्भवती महिलाओं को सामान्य महिलाओं की तुलना में तीन गुना अधिक आयरन की आवश्यकता होती है ताकि वह उस आयरन से अपनी शारीरिक क्षमता, गर्भस्थ शिशु के स्वस्थ निर्माण तथा प्रसवकाल के दौरान होने वाले रक्तस्राव की पूर्ति कर सके। लेकिन आमतौर पर महिलाएँ कुपाचन तथा प्रतिरोधक क्षमता की कमी होने के कारण आयरन कैप्सूल हजम नहीं कर पाती हैं।

यह सत्य है कि यदि भोजन लोहे की कढ़ाई पर बनाया जाय तो इससे लोहे से फेरस आक्साइड बनने और उसे भोजन में मिलने से आसानी होगी। फेरस आक्साइड वही है जो लोहे के इन बरतन पर पीला दाग सा लग जाता है और जिसे महिलाएँ सफाई के समय पूरी तरह साफ कर देती हैं। इसी तरह लौह की बड़ी मात्रा हरी सब्जी, पालक, मेथी, सरसों, बथुआ, चौराई इत्यादि से मिल सकती है और सेब तो लोहे का सबसे बड़ा भण्डार है। शायद आपने देखा होगा कि सेब को काटकर छोड़ देने पर वह पीला सा हो जाता है और यही है लौह का नया रूप फेरस आक्साइड।

कम उम्र की लड़कियाँ अपने मासिक रक्तस्राव को लज्जा एवं संकोच के कारण परिवार में किसी से कह नहीं पाती हैं। ऐसी स्थिति में कई बार मासिक रक्तस्राव में अनियमितता या अधिक रक्तस्राव होने जैसी परेशानियों से पीड़ित हो जाती हैं। बाद में उन्हें पता चलता है कि वह तो एनीमिया के दायरे में आ गई हैं। यदि समय पर डाक्टर से परामर्श लिया जाए तो इन परेशानियों से बचा जा सकता है। इसके अलावा अनेक महिलाओं द्वारा कम समय के अन्तर में बार-बार गर्भधारण करना भी उसके स्वास्थ्य के लिए काफी खतरनाक होता है। पहले प्रसव के बाद महिला को पुन: गर्भधारण के लिए कम से कम 2 वर्ष का अन्तर रखना जरूरी है अन्यथा उसका शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और फिर शरीर में कई बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

गर्भावस्था के दौरान रक्तचाप बढ़ने पर कई दौरे पड़ते हैं। गर्भावस्था में आयरन की कमी से थकान महसूस होना, (शेष पृष्ठ 38 पर)

चिंतनीय विषय

सजग मतदान-मीडिया में भ्रष्टाचार पर ध्यानः अनेक समस्याओं का समाधान

-सोमपाल शास्त्री

राजनीति में सक्रिय होने और पत्रकार जगत् से इतना विस्तृत परिचय होने के बावजूद न तो मैं अपने लोकतन्त्र के मर्म को समझ पाया हूँ और न पत्रकारिता को। रक्षा वैश्विक चिन्ता का विषय इन दोनों की है। ये वास्तव में इतने गहन, गम्भीर और विशिष्ट हैं कि उनके मर्म को पढ़ पाना कठिन है। इतने ऊँचे और व्यापक भी हैं कि उन्हें पकड़ पाना और पार पाना एकदम दुरूह है। सम्प्रति द्रुतिगति से चल रही वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने उन्हें एक ओर तो इतना विराट् बना दिया जैसे कि ब्रह्माण्ड का अनन्त विष्णु रूप। और दूसरी ओर उनसे सम्बद्ध आयाम और अन्तर्भाव तत्व इतने सूक्ष्म हैं कि अणु से भी सूक्ष्म। न तो इस विराट् रूप को पार पाना आसान है और न ही वामन सूक्ष्म रूप का दर्शन-विश्लेषण। तथापि ये दोनों आधुनिक जीवन के ठोस तथ्य हैं। अतः इनसे अछूता रहना भी कदापि सम्भव नहीं।

अपनी अल्प बुद्धि और सीमित क्षमता से चिन्तन करने पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इस समस्या के प्रति दो दृष्टिकोण हो सकते हैं। एक तो ब्रह्माण्डीय अथवा ईश्वरीय शक्ति सत्ता के गूढ़ रहस्यों के प्रति आध्यात्मिकों का भक्तिपरक दृष्टिकोण। वह यह कि सब कुछ स्वयं चल रहा है, स्वयम्भू है। हम भी इसके क्षुद्र भाग हैं। यह ईश्वरीय सृष्टि-प्रकृति स्व-संचालित है। सब ठीक है, ठीक ही होगा। इसमें हस्तक्षेप करना बेकार है। एक उदासीन भक्तिभाव, असम्पृक्त का भाव बनकर रखें। इसकी बहुत देखभाल, खोज, विश्लेषण, दखल करना सर्वथा बेकार है। यह एक उपाय तो है। कहने-देखने में सरल सरलतम प्रतीत होता है। भक्ति सम्प्रदाय के सन्तों ने ऐसा बखूबी किया भी है।

दूसरा, इसके ठीक विपरीत वैज्ञानिकों का दृष्टिकोण है। उनका दावा है कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु, घटना को देखना, उसका विश्लेषण करना तथा उसकी सृष्टि को न केवल समझना, अपितु उसकी रचना और सृजन करना पूर्णतः सम्भव है। और मानव इसके लिए सक्षम है। परन्तु वैज्ञानिकों के भी दो खेमें हैं- सापेक्षता सिद्धान्त वाला और परिमाण भौतिकी वाला दोनों में कौन सही है आज तक निर्णय नहीं हो पाया। दूसरी इतनी ही महत्वपूर्ण बात यह है कि विज्ञान की नित नयी खोजें, पुरानी मान्यताओं को बदल रही हैं और अधिसंख्य वैज्ञानिक भी कहने लगे हैं कि जितना अभी तक ज्ञान पाये हैं वह तो समस्त ज्ञान सागर का अल्पांश है। फिर भी वैज्ञानिक दम भरते हैं कि हम सब कुछ जानकर रहेंगे और तब मनुष्य जो चाहेगा कर लेगा। अर्थात् कृत्रिम जीवन भी सृजित कर सकेगा, और व्याधियों तथा मृत्यु पर विजय पा लेगा। यह है वैज्ञानिकों का सर्वकारी अहंकार।

इन दो अतिवादी युद्धों के बीच अटकी मानव सभ्यता के पास कोई अन्य मार्ग भी है। ठीक ही है कि न तो पूर्णता ही सम्भव है और न पूर्ण असंपृक्तता। आम आदमी यानी साधारण बुद्धिवाला - तर्क - बुद्धिवाला मनुष्य दोनों में से कोई भी नहीं अपना सकता। उसे तो मध्यमार्ग ही चुनना पड़ेगा, जिसका उपदेश महात्मा बुद्ध ने किया और कर्मव्येवाधिकारस्ते के रूप में गीता व अन्य उपनिषदों ने भी। अर्थात् जितना अपने वश में है, अधिकार में है, उसे करें, शेष की चिन्ता न करें। परन्तु बार-बार जोर देकर कहा है कि कर्तव्य-विमुख न हों, कर्म का त्याग कदापि न करें। अपनी सामर्थ्यानुसार योगदान, जिसमें व्यवस्था के दोष सुधारने का प्रयास भी सम्मिलित हैं, अवश्य करना है।

एक बात लोकतन्त्र के, तथा पत्रकारिता के बाजारीकरण की भी है। राजनीति भी और पत्रकारिता भी, दोनों बाजार से अछूती नहीं हैं। यह भी कि राज्य को छोड़कर सब कुछ किसी-न-किसी रूप में बाजार से प्रभावित है। मैं प्रायः सभी बातों से सहमत हूँ, परन्तु यह

कि राज्य बाजार से प्रभावित नहीं है, से पूर्णतः सहमत होने में कठिनाई का अनुभव करता हूँ राज्य बाजार की शक्तियों से कुछ-न- कुछ अंशों में तो सदा से ही प्रभावित रहा है। परन्तु गत दो दशकों से यानी **जबसे वैश्वीकरण और तथाकथित उदारीकरण का दौर चला है, राज्य में बाजार का दखल निश्चित रूप से और निरन्तर बढ़ रहा है। संसद का बदलता स्वरूप और राज्य की नीतियों का स्वरूप दोनों स्पष्टतः इस दिशा की ओर इंगित कर रहे हैं।**

इस सन्दर्भ में मैं अपना एक संस्मरण आपको सुनाना चाहता हूँ। अब से लगभग 5-6 वर्ष पूर्व शायद 2003 में मेरे एक मित्र जो एक जानी-मानी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था में बढ़े पद पर अमेरिका में पदस्थ थे, उन्होंने मुझसे भारत की खाद्य सुरक्षा विषय पर एक शोधपत्र लिखने का आग्रह किया। मैं उस समय भारत के योजना आयोग का सदस्य था। मैंने प्रस्ताव स्वीकार कर उस पत्र की रूपरेखा उन्हें भेज दी। वह संस्था के प्रबन्धन द्वारा पसन्द कर ली गई और उसकी स्वीकृति भेज दी। पूरा काम छः माह में सम्पन्न होना था, और लगभग 18-20 हजार डॉलर की राशि मुझे पारिश्रमिक के तौर पर मिलनी थीं। मैं विस्तृत लेखन का कार्य प्रारम्भ ही करने वाला था कि मेरे उन्हीं मित्र का फोन आया कि मेरे शोध -पत्र में उस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था को वित्त पोषण देने वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के व्यापारिक हितों को साध ने वाली नीतियों का परिलक्षित होना अपेक्षित है। इस पर मैंने अपने मित्र को अच्छी खासी खरी-खोटी सुनाकर यहाँ तक कह दिया कि उन्हें ऐसा कहने का साहस कैसे हुआ। वे सकपका गये। खेद प्रकट किया। बात आयी-गयी हो गयी। इसके कुछ माह बाद उनका पुनः फोन आया और पुरानी बात को भूल जाने के आग्रहोंपरान्त कहा कि मैं अपनी पूर्ण स्वतन्त्र राय के साथ "भारतीय राजनीतिक-अर्थव्यवस्था के प्रेरक तत्व नामक विषय पर एक 250-300 पृष्ठ की पुस्तक लिख दूँ, जिसे अमेरिका की एक जानी-मानी प्रकाशक कम्पनी प्रकाशित करने को तैयार है, और खासी रायल्टी भी देने को। मैंने कहा कि इसके लिए पुस्तक लिखने की जहमत करने की आवश्यकता नहीं है। यह तो मैं केवल दो शब्दों में बता देता हूँ। उन्होंने उत्सुकतापूर्ण पूछा कि बतायें। मैंने कहा कि **भारत की राजनीतिक-अर्थव्यवस्था के फिलहाल केवल दो प्रेरक तत्व हैं - पहला तो संवदेनहीनता और दूसरा निहित स्वार्थ।** उन्होंने फोन पर ही ज़ोरदार ठहाका लगाकर सहमति जतायी। परन्तु पुनः जोर देकर कहा कि इसी बात को स्पष्ट करने हेतु ही तो पुस्तक लिखने को कहा जा रहा है। किन्हीं परिस्थितियों वश में उनकी यह सदीच्छा भी पूरी नहीं कर पाया। परन्तु **शासन के अपने अन्तरंग अनुभव के आधार पर विश्वासपूर्वक यह कह सकता हूं कि राज्य के मूल में भी बाजार की पैठ पूर्वापेक्षा सतत बढ़ रही है। अतः राज्य बाजार से अछूत है, इस से मैं आंशिक सहमति प्रकट करने का दुस्साहस करता हूं।**

इस समस्त चर्चा के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुँचना स्वाभाविक है कि लोकतन्त्र हो अथवा पत्रकारिता, अथवा हमारे राष्ट्रीय जन-जीवन का कोई भी पक्ष, राजनीति और बाजार उनके वास्तविक और अपरिहार्य तत्व हैं और तथ्य भी। सब-कुछ शनैः-शनैः बाजार के हवाले होता जा रहा है। इस कारण समाज की, राष्ट्र की आसन्न दुर्दशा चिन्ताजनक है।

हमारे दैनन्दिन जीवन में बढ़ते अर्थवाद और शासन को तोलते भ्रष्टाचार से त्रस्त आमजन ही नहीं, प्रायः प्रबुद्ध जन भी कहते पाये जाते हैं कि दूसरे देशों में तो ऐसा हाल नहीं है। दूसरे देशों से उनका मन्तव्य-अमेरिका, जापान तथा यूरोप आदि के विकसित देशों से होता है। परन्तु मैं इस कारण से सहमत नहीं हूं। **अमेरिका को ही ले लीजिये। जिन लोगों को उस देश की सही जानकारी है वह कहते हैं कि उस देश के शासन की सम्पूर्ण रीति-नीति पर छः लॉबिया मुख्यतः हावी हैं- शस्त्र-निर्माता, पेट्रोलियम उत्पादक, वाहन निर्माता, औषधि-निर्माता, चिकित्सा-व्यवसाय और बीमा कम्पनियां। सारी शासन-प्रणाली उनकी चेरी है तथा वहां की विदेश-नीति भी उन्हीं की पक्ष-पोषक रहती है। हां, इतना अवश्य है कि आम आदमी को ये सब सीधे-सीधे प्रभावित न करके अत्यन्त सूक्ष्म रूप से प्रभावित करती हैं। अन्ततः बोझ तो उसी के कन्धों पर पड़ता है, इन सबके बढ़े दामों के रूप में। परन्तु प्रशासनिक हस्तक्षेप और भ्रष्टाचार से आम आदमी पीड़ित नहीं है।**

इस सन्दर्भ में यह अवश्य कहना चाहूंगा कि विश्व के विकसित देशों को यदि छोड़ दें, और विकासोन्मुख देशों, विशेषकर एशिया और अफ्रीका के देशों को देखें तो भारत में लोकतन्त्र और उसके चतुर्थ स्तम्भ पत्रकारिता की दशा अधिकांश राष्ट्रों से कहीं बेहतर और सुखद है। उनकी अपेक्षा हमारा लोकतन्त्र स्थायी भी है और सुदृढ़

भी है। सभी प्रकार की खामियों के बावजूद।

जहां तक राजनीतिक लोगों का प्रश्न है वे व्यवस्था को कोसते भी रहते हैं, परन्तु जब सत्ता में जाने का अवसर मिलता है तो सुधार के प्रयास करना तो दूर उसकी प्रशंसात्मक आत्ममुग्धता में जीने लगते हैं। बाहर हो गये तो फिर वही राग। उनका राग-दरबारी और राग-भैरवी सत्ता में लिप्त और च्युत होने की वैकल्पिक परिस्थिति से सम्बद्ध रहता है। इस सिलसिले में मुझे एक घटना याद आती है। बात 1970 के दशक के अन्त और 1980 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में से कभी की है। हरियाणा प्रान्त की एक वरिष्ठ महिला राजनेत्री, जो काफी समय विधायक, मंत्री और सांसद रह चुकी थीं, परन्तु इन दिनों किसी पद पर नहीं थीं, एक दिन राज्यसभा के एक वयोवृद्ध सदस्य जो पहले दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति थे के निवास पर आईं। मैं संयोग से उस समय वहीं था। बड़े उत्तेजनापूर्ण और चिन्तित स्वर में शिकायत करने लगीं कि राजनीति में कितनी गिरावट आ गयी है। उन राज्यसभा सदस्य महोदय से अपेक्षा की कि वे कुछ करें, अन्यथा स्थिति सर्वनाश की ओर अग्रसर है। शिक्षाविद् सांसद महोदय ने उन्हें शान्त रहने और अनावश्यक चिन्ता न कर धैर्यधारणोपदेश देने का प्रयास किया। परन्तु अपनी शिक्षा को निष्फल होते देख बोल उठे, देख बहन, यह भारत देश बड़ा गौरवशाली देश है। कई सौ साल की अराजकता तथा गुलामी भुगतने के बावजूद यह बना रहा। अब तो यहां लोकतन्त्र आ गया है, आजादी है, आर्थिक प्रगति हुई है, सैन्यबल बढ़ा है। कमियां हैं, परन्तु कालान्तर में ठीक होंगी। और फिर बोले कि अगामी तीन वर्ष, चार माह और ग्यारह दिन तो इस देश का कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। उनकी इस टिप्पणी पर राजनेत्री चौंकी और पूछी कि आप क्या ज्योतिषी हैं कि इस प्रकार काल-गणना कर देश के कुशल-क्षेम की गारन्टी दे रहे हैं? क्या आधार है, आपकी इस गिनती का? सांसद महोदय ने आश्वासनाभिव्यक्ति भाव से साबित किया कि उनकी राज्यसभा सदस्यता का कार्यकाल इतना ही शेष है। अत: तब तक सब कुछ ठीक रहेगा। बाद की बाद में देखी जायेगी। अपने इस कटाक्ष से उन्होंने राजनेत्री जी को एहसास करा दिया कि उनका राग-भैरवी किसी पद पर न होने की टीस मात्र है। अत: राजनैतिक लोगों के वक्तव्यों-वर्णनों का अर्थ-मन्तव्य तत्कालीन व्यक्तिगत परिवेश से जोड़कर ही देखने चाहियें। उनका प्रत्यक्ष-दर्शन मूल्य संदिग्ध समझना ही श्रेयस्कर है।

यह प्रश्न भी उठते हैं कि लोकतन्त्र और पत्रकारिता को कौन बचाये, और किससे बचायें। मेरा राजनीति और विशेषत: चुनावी राजनीति का अनुभव तो कुछ ऐसा आभास देता है कि न तो सत्ता में बैठें और न विपक्ष में बैठे लोकतन्त्र के कर्णधारो की इसमें रुचि है, न उन्हें इसकी फुर्सत। और मतदाता भी मुद्दों तथा प्रत्याशी की गुणवत्ता के आधार पर मत न देकर जाति-पांति, निहित स्वार्थ और धन-मद्यादि लोभ वश मत देने के अभ्यासी होते जा रहे हैं। तब कौन बचाये, किससे बचायें और किसके लिये बचायें ये प्रश्न उत्तरित किये जाने आसान नहीं हैं। प्रबुद्ध मतदाता या बुद्धिजीवी लोग मत डालने ही नहीं जाते और फिर आगामी चुनाव तक सभी रुदन-रत रहते हैं। रही पत्रकारों की और पत्रकारिता की बात तो हाल ही में सम्पन्न लोकसभा के चुनाव के दौरान मीडिया, खासतौर से समाचार-पत्रों ने प्रत्याशियों से जिस बेशर्मी और बेहयाई से उनके प्रचार हेतु बड़ी धनराशि के पैकेजों की माँग की और क्षेत्र में कार्यरत अपने पत्रकार प्रतिनिधियों का इस्तेमाल किया वह जगजाहिर है। तब किससे सवाल किया जाय और कौन करे पत्रकारिता को बचाने का प्रयास, चाहें तो इसकी खुली सार्वजनिक जाँच हेतु वरिष्ठजनों की एक समिति गठित करें और जानकारी लें।

राजनैतिक दलों के मुखियाओं की स्थिति भी लगभग मीडिया मालिकों जैसी ही है। वे ऐसे व्यक्तियों को चुनावी प्रत्याशी तथा दल-प्रबन्धन में प्राथमिकता देते हैं, जो धनबल, बाहुबल और आत्मसम्मान को ताक पर रख कुत्ते की तरह पूँछ हिलाकर चाटुकारिता में निष्णात हों। नेताओं के लिए विपरीत से विपरीत मत वाले दलों और घोर विरोधियों से सर्वथा सिद्धान्तहीन चुनावी सांठगांठ कर अधिक से अधिक सीटें जिताने की मृग-मरीचिका का दर्शन करा सकें। ऐसी परिस्थिति में दल के योग्य और निष्ठावान् कार्यकर्त्ता विरोध करें तो उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया। यदि ऐसे कार्यकर्ता हिम्मत कर चुनाव में उतर पड़े तो उन्हें दल-बदल का दोषी करार दिया जाता है। विडम्बना यह है कि मीडिया भी उन्हीं के स्वर में स्वर मिलाकर ऐसे व्यक्तियों को राजनीति से बाहर होने तक विवश कर डालता है। मुखिया किसी से भी हाथ मिला लें,

उन्हें दल-बदलू नहीं कहा जाता। तो बच गया लोकतन्त्र और निहाल हो गई पत्रकारिता। चाहे लोकतन्त्र की बात हो, अथवा पत्रकारिता की, अथवा भ्रष्टाचार और मँहगाई की, इनकी अन्तिम कड़ी तो नागरिक हैं, वही मतदाता, वही पाठक हैं, वही दर्शक हैं, वही उपभोक्ता। उसे संगठित होकर निरोधात्मक अभियान चलाना होगा। शासन, प्रशासन, अर्थव्यवस्था और पत्रकारिता की अवांछनीय प्रवृत्तियों के विरोध में खड़ा होना होगा। राजनैतिक व्यक्ति होने के नाते बड़ी साफगोई से मैं कहना चाहता हूँ कि राजनैतिक लोग किसी बात से नहीं डरते। वे फूट डाल सकते हैं। लोगों को आपस में लड़ा-भिड़ाकर मरवा-कटवा सकते हैं। राजसत्ता के मद में लाठी-गोली चलवा सकते हैं। बड़े से बड़ा भ्रष्टाचार करने से भी नहीं डरते। वे भय खाते हैं तो केवल एक बात से। वह है जनमत। किसी भी बात के पक्ष में या विरोध में। उसी से झुकते हैं। अतः नागरिकों को जागरूक और एकजुट होकर मुद्दों और प्रत्याशियों की गुणवत्ता के आधार पर सक्रिय मतदान करना तथा भ्रष्टाचार, चाहे वह शासन का हो या मीडिया का, के विरोध में मुखरित होना होगा। आज जैसी संगोष्ठियों की सार्थकता-सफलता का मानदण्ड भी यही है कि इस दिशा में जनचेतना कितने अर्थों में निर्मित है।

इस प्रसंग में महाभारत का एक आख्यान बड़ा सतर्क और उल्लेख्य है। शान्ति प्रकरण में कथा है कि अपने पौत्र अर्जुन द्वारा वाणों से आहत हुए भीष्म पितामह सूर्य के उत्तरायण होने तक अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा में शर-शैया पर पड़े हैं। उन दिनों की परिपाटी के अनुसार प्रत्येक दिन संध्या समय पर युद्ध बन्द कर, कौरवों और पाण्डवों दोनों पक्षों के प्रमुख व्यक्ति उनके समीप आकर बैठते और विभिन्न विषयों पर जिज्ञासापूर्ण प्रश्न कर अपना ज्ञानवर्द्धन करते थे। ऐसी ही एक चर्चा सत्र में युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से अपनी वंश-परम्परा के विषय में पूछा। पितामह ने सारा इतिहास बता दिया। तब युधिष्ठिर ने जानना चाहा कि उनके वंश का राज्य प्रारम्भ होने से पूर्व कौन शासक था। यदि कोई नहीं था तो फिर समाज की व्यवस्था कैसे बचती थी? उत्तर में महर्षि व्यास ने पात्र भीष्म पितामह के मुख से यह श्लोक कहलवाया

न राजा न च राज्यासीत न च दण्डो न दाण्डिकः।
सर्वे प्रजाः धर्मेणैव रक्षन्ति सह परस्परम्।।

अर्थात् न राजा था, न राज्य न कोई दण्ड व्यवस्था थी और न दण्डाधिकारी। सारी प्रजा इतनी प्रबुद्ध थी कि आपस में मिलजुलकर एक-दूसरे की रक्षा सब परिस्थितियों में कर लेती थी। हजारों वर्षों तक भारत में ग्रामीण पंचायतों खाप-पंचायतों और राष्ट्र-पंचायतों के गणराज्य रहे और व्यवस्थाा चली। जब नागरिक परस्पर सहयोगी-सहकारी हैं तो शासन की आवश्यकता ही क्यों पड़े। जब आपस में टकराव हो तो राजनीति जन्म लेती है। राजनीति का तो उद्भव ही टकराव की फूट की आग से होता है इसीलिए जिस समाज में जितनी फूट उतना ही बड़ा शासन तन्त्र। इतना ही अधिक शोषण और उत्पीड़न हो रहा है आज भारत में। उसका निदान ही है केवल नागरिकों की जागृति, एकजुटता, सहयोग और सहकार।

लोकतन्त्र और धर्म इस दृष्टि से और इस धरातल पर एक हो जाते हैं। मानव सहित सभी प्राणियों में आहार, निद्रा, भय और मैथुन समान रूप से पाये जाने वाली नैसर्गिक-जैविक प्रवृत्तियाँ हैं। इन्हें आपस में मिलजुलकर पूरा करें तो धर्म और लोकतन्त्र। अपनी-अपनी स्वार्थ सिद्धि में एक-दूसरे के अधिकार का हरण करें तो राजनीति और शासन के बोझ शोषण उत्पीड़न को भुगतें। या तो अपनी आचार संहिता स्वयं बनायें स्वयं लागू करें, अन्यथा औरों के अन्तर्गत रहकर गुलामी भुगतें, चाहे देशी शासक हों अथवा विदेशी, परिणाम कमोवेश एक सा ही होता है। **-पूर्वतः कृषि राज्य मंत्री, भारत सरकार**

(पृष्ठ 14 का शेष)

प्रेम प्रभु की ओ३म् पताका जगती में लहराओ।
शान्ति मिलेगी कष्ट भगेंगे सुन सुन प्रेम कहानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।22।।

अन्धका से पूर्ण रजनी में देवदूत सा आया।
मिटती मानवता का रक्षक शान्ति किरण ले आया।
प्रेम-प्रेम का राग मिलन का अद्भुत स्वर में गाया।
मुग्ध हुए जो-जो सुन पाए, अपनी आप भुलाया।
आनन्द भरी मुक्ति को दाता दयानन्द की वाणी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।23।।

रवि चन्दों तक अमर रहेगी उसकी दिप्य कहानी,
फैराएंगे भू मण्डल में आज्ञाएं अनुगामी।
दिव्य भाव से भेज रहा है शक्ति हमें वह ज्ञानी,
अन्धकार में ज्योति दिखाए, प्रभु की दिव्य सुवाणी।
स्वर्ण दीप सी दीप्ति रहेगी पथ बतलाती मानी।
सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो, ऋषि की अमर कहानी।।24।।

तनाव पर हास्य का प्रहार

-डा. विशेष गुप्ता

हास्य जीवन की कला और आवश्यकता दोनों ही है। इस से भी आगे बढ़कर हास्य नैसर्गिक और कृत्रिम भी। नैसर्गिक हास्य शरीर के तनाव को कम करता है, परन्तु कृत्रिम हास्य मात्र होठों पर मुस्कान का माध्यम बनता है। कहने की आवश्यता नहीं है कि आज हास्य का एक नूतन संसार विकसित हो रहा है। ऐसा अनुभव होता है जैसे हास्य ने वैश्विक बाजार से अपना रिश्ता जोड़ लिया है। साहित्य से लेकर मीडिया तक नित नये हास्य का बाजार सजाने की गला काट होड़ लगी है। हालात ये हैं कि दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर यदि एक कार्यक्रम हास्य का न रहे तो उन्हें अपनी टी.आर.पी. कमजोर पड़ती दिखाई देने लगती है। देश में जिस प्रकार शब्दों का भाषिक संसार व उससे जुड़ा शाब्दिक अहसास कमजोर पड़ रहा है, ठीक उसी प्रकार हास्य का शाब्दिक संसार भी बेलगाम हो चला है। शब्दों की फूहड़ता तथा उसके दोषपूर्ण संस्करण ने हास्य की आन्तरिक दुनियाँ को विखंडित कर दिया है।

हास्य का बाजार

दरअसल जो हास्य हमें प्रचुर मात्रा में परिलक्षित हो रहा है, वह बाजार से जुड़ा हास्य है। यहाँ इस सच्चाई को कहने में कोई हिचक नहीं कि बाजार से जुड़े हास्य में व्यावसायिकता का समावेश अधिक रहता है। उसमें व्यवसायी और ग्राहक के सम्बन्धों का प्रभाव प्रचुर मात्रा में परिलक्षित होता है। इसका सीधा सा तात्पर्य यह है कि वर्तमान में हास्य की दुनियाँ एक उद्योग के रूप में परिणत हो रही है। इस उद्योग में हास्य के उद्यमियों की दृष्टि हास्य के प्रचुर मात्रा में उत्पादन करने पर केन्द्रित होकर रह गयी है, जहाँ हास्य की गुणवत्ता को पृष्ठभूमि में डाल दिया गया है। बिखरते शब्द, खंडित होता भाव व विकृत होता अहसास ही आज के हास्य का यथार्थ है। बाजारू हास्य कुछ क्षणों के लिए लोगों का ध्यान तो बँटा सकता है, परन्तु लोगों की दुनियाँ को तनाव रहित करना उस हास्य से अनपेक्षित ही दिखायी देता है। कड़वा सत्य यह है कि समाज में हास्य के इन बाजारू साधनों से उसे हँसी मिलती तो है, परन्तु वह हँसी नहीं, मात्र मुस्कान ही होती है जो सहज हास्य से उसे दूर ही रखती है। हास्य की अभिव्यक्ति का माध्यम केवल वाचिक परम्परा ही नहीं है, बल्कि हाव-भाव, मूक प्रदर्शन, लेखन, कला व व्यंग्य के माध्यम से भी हास्य प्रगट होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रत्येक मनुष्य के अन्तर्मन में कुछ मूर्खतायें, कुछ विसंगतियाँ तथा कुछ हास्यास्पद स्थितियाँ छिपी हैं जो उन्हें बाकी मनुष्यों से अलग करती हैं। दूसरी ओर समाज में अनेक प्रकार की विषमतायें, अभाव, दुर्बलतायें तथा रूढ़ियाँ और अन्धविश्वास हैं। समाज के ये नकारात्मक प्रभाव इन्सान को प्रत्येक समय दु:ख और तकलीफों से घेरे रखते हैं। इन्सान का मनोमस्तिष्क हर समय इन सभी मुसीबतों से बाहर निकलने के लिए ललचाता रहता है। यह इसी का परिणाम है कि इन्सान इन सभी दु:खों के बीच भी खुलकर ठहाका लगाना चाहता है। मानव की विशेषता यह है कि हँसते-हँसाते हुए वह जीवन और जगत के विषय में एक दार्शनिक बन जाता है। ऐसी स्थिति में वह हास्य का निरन्तर विस्तार चाहता है जिसके लिए वह रेडियो, टी.वी. व सिनेमा की तलाश करता है। वर्तमान में यान्त्रिक हास्य का विस्तार मानव की इसी स्वाभाविक प्रवृत्ति का खुला मोल है।

जीवन की विद्रूपताएं

आज लोगों को हास्य की कितनी शिद्दत से तलाश है, इसका प्रमाण उन सिनेमाघरों के समक्ष लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ देखकर सहज ही लग जाता है जहाँ हास्य फिल्में चल रही होती हैं। गौरतलब है कि पुराने दौर की 'चलती का नाम गाड़ी', 'पड़ोसन' तथा 'छोटी सी बात' से लेकर वर्तमान समय की 'मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस', 'गोलमाल' व 'हेराफेरी' तथा हाल की 'थ्री ईडियट्स' इत्यादि फिल्मों के माध्यम से सिनेमा के रुपहले परदे पर हास्य की धाक जमी थी। बस अन्तर इतना रहा है कि पूर्व के हास्य में व्यंग्य और सामाजिक जीवन की विद्रूपतायें छिपी होती थीं तथा वर्तमान में हास्यास्पद स्थितियों के साथ में अश्लील प्रसंग अधिक दिखाई देते हैं। आश्चर्य की बात है कि आज आम आदमी से जुड़ा हास्य-बोध शक्तिशाली दिखाई दे रहा है, परन्तु इलेक्ट्रोनिक व डिजिटल मीडिया व सिनेमा का

स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। जरा स्मरण करें कि दूरदर्शन के छोटे पर्दे ने 'यह जो है जिंदगी' तथा 'फ्लाप -शो' जैसे सीरियल के माध्यम से खूब गुदगुदाया था। परन्तु आज 'लाफ्टर शो' के माध्यम से पुरुष कलाकारों को स्त्री बनाकर उनसे अश्लील संवाद बुलवाए जाते हैं। मीडिया विशेषज्ञों का स्पष्ट मत है कि समाज में जो बिकता है हम उसे ही बेचते हैं। अवलोकन बताते हैं कि 'लाफ्टर शो' अब धीरे-धीरे फ्लाप शो बन रहे हैं। उनकी टी.आर.पी. भी शनै:शनै: निम्न स्तर की ओर गतिमान है। विगत लोकसभा के चुनावों में अमृतसर की जनता ने 'लाफ्टर शो' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नवजोत सिंह सिद्धू को स्पष्ट चेतावनी दी थी कि यदि वह आगामी 'लाफ्टर शो' में हास्य व व्यंग्य करते देखे गये तो उन्हें उनके निर्वाचन क्षेत्र में प्रवेश नहीं करने दिया जाएगा।

सामूहिक जीवन में हास्य

हास्य जहाँ एक ओर समाज की विसंगतियों की मरम्मत करता है, वहीं दूसरी ओर वह इन्सान की तनावग्रस्त व आक्रामक परिस्थितियों को अनुकूल बनाने में सेतु का कार्य भी करता है। गाँव के सामूहिक जीवन ने हास्य को सहनशील बनाकर वहाँ की विसंगतियों को मरम्मत कराना सिखाया। होली, दिवाली व दशहरा जैसे उत्सवों पर हास्य की अभिव्यक्ति के उदाहरण हमें स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ते हैं। भारत में हास्य की परम्परा चौपालों और पनघटों से चलकर हास्य कवि सम्मेलनों तक पहुँची। काका हाथरसी, गोपाल प्रसाद व्यास व शरद जोशी जैसे प्रमुख व्यंग्यकारों ने हास्य की परम्परा को विस्तार देते हुए इसे और समृद्ध किया है।

हास्य व व्यंग्य लोगों को तनावपूर्ण व आक्रामक माहौल से बाहर निकालने में सहायता प्रदान करता है। हास्य की प्रमुख विशेषता यह है कि यह सामाजिक सम्बन्धों की परिस्थितिजन्य पहचान कराकर उन्हें पारस्परिक रूप से जानने व समझने के योग्य बनाता है। कुछ परिस्थितियाँ व सामाजिक सम्बन्ध हास्य के लिए प्रतिबन्धित भी हैं। किसी की मृत्यु अथवा दुर्घटना अथवा दूसरे मत-पन्थों की वेशभूषा, शैली व धार्मिक विश्वासों पर हास्य सामाजिक सम्बन्धों की गम्भीरता एवं प्रौढ़ता को कम करता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में विसंगत परिस्थिति होने पर भी मानवीय स्वभाव कदापि हास्य की आज्ञा प्रदान नहीं करता। यही कारण है कि कभी हास्य विसंगत परिस्थितियों पर प्रहार करके उनकी परिधियाँ सीमित करता है, तो कभी समाज की गम्भीर व सम्वेदनशील परिस्थितियाँ हास्य को इजाजत प्रदान नहीं करतीं। सामाजिक परिस्थितियों का यही सन्तुलन भारतीय समाज की स्वदेशी परम्पराओं का एक स्वस्थ संकुल है जहाँ हँसना-हँसाना भी सामाजिक व्यवस्था के संरक्षण में एक स्वस्थ साधन का कार्य करता रहा है।

विशेषज्ञों की राय

हास्य और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता पर पड़ने वाले उसके प्रभावों का अध्ययन कर रहे कैलिफोर्निया के लिंडा विश्वविद्यालय के प्रमुख शोध कर्त्ताओं लीवर्क और डाक्टर स्टेनलेटैन का निष्कर्ष यह है कि हास्य की क्रिया रक्तचाप को कम करती है, तनाव पैदा करने वाले हारमोन्स के स्तर को घटाती है, माँसपेशियों के लचीलेपन को बढ़ाती है तथा शरीर के संक्रमण से संघर्ष करने वाली टी-कोशिकाओं की प्रतिरक्षक क्षमता को बढ़ाती है। साथ ही हास्य की प्रक्रिया प्राकृतिक दर्द-निवारक औषधि के रूप में शरीर में विद्यमान एन्डोरफिन्स के स्तर को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करती है। इस प्रकार कहना न होगा कि हँसना एक वायुजीवी व्यायाम है जो शरीर के डायाफ्राम को एक अभ्यास कराता है तथा शरीर में स्वस्थ प्राण वायु के आवागमन का मार्ग स्वच्छ करता है। हास्य पर शोध करने वाले अन्य विशेषज्ञों का मत है कि हँसी एक ऐसी परम्परागत युक्ति है जो शारीरिक दर्द तक के ठीक होने में एक मरहम का कार्य करती है। होलिस्टिक नर्सिंग से जुड़े एक प्रकाशित अध्ययन में यह बात सामने आयी है कि शल्य चिकित्सा के बाद रोगियों को हास्य व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यात्मक किस्से व कहानियाँ अथवा हँसी से जुड़ी नियमित प्रक्रिया से गुजारने पर यह पाया गया कि ऐसे रोगियों को अन्य रोगियों की तुलना में कम से कम दर्द निवारक औषधियों की आवश्यकता अनुभव हुई। दरअसल हास्य का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसका संक्रामक विस्तार होता है जिसका शरीर पर कोई दुष्प्रभाव भी नहीं है। दूसरे यह एक प्रकार की आन्तरिक जोगिंग है जो शरीर के अन्दरूनी भाग को स्वस्थ रखती है। शायद इसीलिए आज हास्य एक थेरेपी का रूप ले रहा है और जगह-जगह 'लाफ्टर क्लब' खुल रहे हैं।

तनावपूर्ण जीवन का समाधान

संयुक्त परिवार के टूटने से परिवार में बुजुर्गों के स्वयं कर्त्ताधर्ता होने का मिथक भी तेजी से टूट रहा है। मानव और मशीन के संघर्ष ने पारिवारिक संघर्षों के बीच दरार डाल दी है। उपभोक्तावाद की क्रान्ति के सामने

आज युवा अपने परम्परागत बन्धनों से मुक्त होकर अपने पारिवारिक जीवन को अपने ढंग से परिभाषित कर रहे हैं। ऐसा अनुभव होता है कि औद्योगिक विकास की तीव्रता ने सामाजिक विस्थापन को बढ़ाया है। परिणामतः समाज का हर रिश्ता एक तनाव के दौर से गुजर रहा है। समाज का यथार्थ यह है कि समाज का अन्दरूनी शरीर तथा सामुदायिक रिश्तों की गरमाहट पारस्परिक संवाद और मेल मिलाप से आती है। **चारों ओर पूँजी, प्रॉपर्टी, धन, बाजार और पेशेवर व्यवसाय के सामने मानव, मानवीयता, सहिष्णुता, चरित्र मूल्य व संस्कार इत्यादि** पृष्ठभूमि में चले गये। वैश्विक तथा स्थानीय संस्कृति के सम्मिलन से एक दोगली संस्कृति जन्म ले रही है। 'सैंडविच कल्चर' की यह पीड़ा लोगों के बीच नये-नये प्रकार के तनावों को उभार रही है। लोगों के बीच पारस्परिक संवाद के अल्पमत में आ जाने से देश का सामुदायिक माहौल, पंचायतें, चौपाल व पनघट जैसी संस्थाओं की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर पड़ जाने से अन्तर्मन का हास्य अधरों की दिखावटी मुस्कान भर बनकर रह गया है। आज चारों ओर शार्टकट से बड़ा लक्ष्य प्राप्त करने की गलाकाट होड़ है। वैयक्तिकता समाज की सच्चाई बनकर उभर रही है। ऊँची नौकरी, मँहगी कार, बड़ा विलासी आवास, शोहरत, शीघ्र तरक्की जैसी इच्छाओं और आकांक्षाओं ने व्यक्ति के अन्तर्मन को घेरकर हलचल और बढ़ा दी है। कारणवश भीड़ में खड़ा होकर भी व्यक्ति अकेला व तनावग्रस्त है। अवसाद, निराशा, भग्नाशा व वंचनाओं का सामूहिक संकुल उसे आत्मघात को भी मजबूर कर रहा है। इस समय बड़ी प्रतिस्पर्धा का वैश्विक माहौल पल-प्रति-पल बढ़ते इस तनाव से निजात पाने को तड़प रहा है। विभिन्न धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से हँसी का अट्टहास 'लाफ्टर क्लबों' की स्थापना, प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया में लाफ्टर चेलेंज कार्यक्रमों का धमाल जैसे कार्यक्रम बताते हैं कि आज समाज को एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता है जो वैश्विक दुनियाँ से आने वाले अनावश्यक तनाव का प्रबन्ध न कर सके। परन्तु ये सभी कार्यक्रम लोगों के होठों पर क्षणिक व्यवसायिक मुस्कान लाने तक ही सीमित होकर रह गये हैं। इन्सान के अन्तर्मन की गहराइयों में बाहर की दुनियाँ से आने वाला तनाव अभी भी उसे घेरे हुए है जिस कारण वह रक्तचाप, मधुमेह, पक्षाघात व हृदयाघात जैसे रोगों से घिरता जा रहा है। सच यह है कि दिन प्रतिदिन के इस तनाव से निजात पाने का इलाज भारतीय संस्कृति की संवादिक शैली में ही विद्यमान है। सामुदायिक हास्य उसका सबसे सुलभ मंत्र है। परन्तु इस हेतु व्यक्तिगत अहम् के झंझावात और विलासित संस्कृति से बाहर निकलकर हमें अपने आस-पास विकसित होती विसंगत परिस्थितियों और प्रवृत्त होती विद्रूपताओं पर भी दृष्टिपात करना होगा। मेल-मिलाप की सामुदायिक संस्कृति, सामूहिक सोच, खुला पारस्परिक संवाद व आपसी साझेदारी के भारतीय संस्करण से ही मन की गहराइयों से हास्य का प्रस्फुटन होगा। तभी अपने आस-पास के संसार को तनावमुक्त रखने की सम्भावनायें प्रबल होंगी।

(पाञ्चजन्य से साभार)

(पेज 5 का शेष)

अपने प्रकाश से मैं स्वयं ज्योतित हो प्रकाशपुंज प्रभु के आनन्द का पान कैसे करूँ? यह सब ज्ञान ही आत्म विज्ञान है।

आत्म विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध आज कहीं नहीं। जो समाज को शिक्षा देने का दम्भ करते हैं भी वे बहकाने वाले हैं। भूमंडल की सारी शक्ति आज अज्ञान को समझने और उसी के प्रसार में लगी है। आर्यसमाज का कार्य भी अज्ञान को ज्ञान में बदलना या यों कहिए अध्यात्म विज्ञान की शिक्षा देना है। दुर्भाग्य यह हुआ कि इस पवित्र आन्दोलन के संचालक स्वयं अध्यात्मशून्य हो गए और वैदिक धर्म के ये अध्यात्म विहीन कुछ लोग पशुओं की तरह आपस में ही संघर्षरत रहते हैं। संस्थापक का महान लक्ष्य भुला दिया। प्रभु का दिव्य सन्देश ज्ञान भूल गए। ऋचाओं के गीत गाने याद नहीं रहे, रह गईं स्मरण गद्दियाँ, पद और स्वार्थ। आत्मा को मारकर अन्धकार में डालकर कौन आगे बढ़ा है, और आत्मा को जानकर कौन पीछे रहा है? हम अपने को मिटा रहे हैं तो कभी जीत नहीं सकते। अपने को जानें, अपने को समझें। देखें तो सही हम कौन हैं? आँखें खोलनी होंगी, ईश्वर पुत्रों को। प्रभु की शरण में आना होगा और उस मार्ग को जानकर, जो मार्ग देवताओं का है उस पर चलना होगा। जिसे हम अपना-अपना कहकर जीवन की अनमोल घड़ियाँ नष्ट कर रहे हैं, वह सब हमारा नहीं है जो हमारा है उसे समझना होगा। जो साथ जाएगा, वह एकत्र करना होगा।

(पृष्ठ 31 का शेष)

कार्य में शिथिलता आना, मुँह में छाले होना, भूख न लगना, शरीर के कई भागों में सूजन आना, दिल की धड़कन में तेजी आना तथा साँस लेने में कठिनाई होना आदि ऐसी कई खून से सम्बन्धित बीमारियाँ एनीमिया की शिकार होने पर प्रसव के दौरान कम वजन के बच्चों को जन्म देने तथा समय से पहले प्रसव से भी मातृत्व एवं नवजात शिशु की अकाल मौत की सम्भावना बढ़ जाती है। बहुत सी महिलाएँ बार-बार गर्भपात कराती हैं, इससे अगली बार शिशु विकृत या मानसिक रोगी के रूप में जन्म ले सकता है। **(विज्ञान से साभार)**

दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव एवं महात्मा वेदभिक्षुः जयंती समारोह सोत्साह सम्पन्न

राष्ट्र शब्द का उल्लेख विश्व में सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ था। वेद ज्ञान और विज्ञान के अक्षय भण्डार हैं। वेदों की अनुपम ज्ञान सम्पदा के कारण ही भारत अतीत में विश्व गुरू होने का गौरव प्राप्त करने में समर्थ हुआ था। वेदों में वर्णित राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय स्वाभिमान का व्यापक एवं सारगर्भित वर्णन है। विश्व तथा राष्ट्र के समक्ष जो अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं उनका समाधान वैदिक दर्शन में निहित है। वेद का दर्शन अध्यात्मिकता और भौतिकता के समन्वय का द्योतक है। जिसका तात्पर्य यह है कि शस्त्र और शास्त्र से समृद्ध राष्ट्र ही विश्व का मार्गदर्शन करने में समर्थ है।

उपरोक्त उद्गार भारत के पूर्व निर्वाचन आयुक्त जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति जी ने वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर(इब्राहीमपुर) दिल्ली में दयानन्द संस्थान के तत्वावधान में महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती समारोह के अवसर पर, प्रमुख लेखक, चिंतक, साहित्यकार पद्म श्री डा. श्यामसिंह ''शशि'' की अध्यक्षता में आयोजित **'राष्ट्र रक्षा संकल्प सम्मेलन'** का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि विदेशी शासकों ने भारत की ज्ञाननिधि को विलुप्त करने के लिए आधुनिक शिक्षा के नाम पर वैदिक मंत्रों की अनर्गल व्याख्या की। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द को ही यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने वेदों के सत्य ज्ञान को अपने ग्रन्थों द्वारा उद्घाटित किया। विज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धानरत वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करने पर बाध्य है कि प्रकृति की संरचना, नक्षत्रों की सृष्टि में भूमिका और गुरुत्वाकर्षण आदि के सम्बन्ध में जिन मान्यताओं का वेदों में वर्णन हुआ है वे आज हो रहे वैज्ञानिक अनुसन्धान से तिथि सम्पुष्ट हुई हैं।

मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन में उपस्थित पूर्व राज्यपाल श्री **केदारनाथ साहनी** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वेद के सन्देशों के प्रचार-प्रसार से भारत ने अतीत में विश्व में जो गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त किया था वह इतिहास की धरोहर ही राष्ट्रीय स्वाभिमान की प्रेरक है। उन्होंने कहा कि विश्व के अनेक देशों में आज भी अनेक स्मृति स्थल हैं जो भारत के स्वर्णिम अतीत का स्मरण कराते हैं, वे प्रत्येक राष्ट्र भक्त में भारतीय स्वाभिमान का स्फुरण कराते हैं। वेद के सन्देश और निर्देश का अनुगमन कर भारत सभी चुनौतियों का उत्तर देने में समर्थ हो सकता है।

वेद गोष्ठी-सम्मेलन को आर्य मनीषी दयानन्द संस्थान के मंत्री डॉ. धर्मवीर और युनिवर्सिटी में प्रवक्ता डॉ. रामचन्द्र, डा. पूर्णसिंह डबास, (चीन युनिवर्सिटी के पूर्व प्राध्यापक) डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, डॉ. ज्ञानचन्द, डॉ. सत्यानन्द आर्य, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, डा. शिवकुमार शास्त्री, श्री रामनिवास गुणग्राहक, डॉ. सन्तोषराय शास्त्री आदि विद्वानों ने सम्बोधित किया। तथा दयानन्द संस्थान द्वारा वेदों को सर्वसाधारण के लिए सुलभ बनाने में योगदान की मुक्त कण्ठ से सराहना की। विश्व विख्यात लेखक, विचारक एवं मनीषी डॉ. श्यामसिंह शशि ने अपने अध्यक्षीय भाषण में वेदों और भारतीय संस्कृति के प्रति विश्व में बढ़ रही अभिरुचि का उल्लेख करते हुए वेदों में वर्णित राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रवाद का वर्णन करते हुए कहा कि यजुर्वेद में जो राष्ट्रीय प्रार्थना है उसमें एक समृद्धिशाली राष्ट्र के सुख समृद्धि एवं योगक्षेम के लिए वह सब कुछ प्राप्त करने का संकल्प किया गया है जो किसी भी महान राष्ट्र के लिए अनिवार्य माना जाता है। सम्मेलन से समीपस्थ ग्रामों के नर नारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

सम्मेलन में **तीन आर्यजन सम्मानित** श्री जी. वी.जी. कृष्णमूर्ति एवं डॉ. श्यामसिंह शशि ने शाल ओढ़ाकर संस्थान के तीन सहयोगियों सर्वश्री शिवकुमार मदान (जनकपुरी) श्री राजवीर (हिरणकी) एवं राजवीर सिंह तंवर (श्रीनिवासपुरी) को सम्मानित किया। इस अवसर पर टोरंटो (कनाडा) से प्रकाशित वसुधा हिन्दी पत्रिका की सम्पादक स्नेह ठाकुर को वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

जयन्ती समारोह के .कार्यक्रम में पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन निगम पार्षद श्रीमती विमला त्यागी ने किया। सुश्री सुमेधा दर्शनाचार्य, श्रीमती रेखा सिन्हा, श्रीमती विमला त्यागी, पुष्पा शर्मा व श्रीमती शकुन्तला नांगिया आदि नेत्रियों ने सम्बोधित किया, तथा दयानन्द संस्थान द्वारा वेद प्रचार प्रसार में किये जा रहे कार्यों की सराहना की। सम्मेलन में हिन्दी प्रचार अभियान में योगदान के लिए कु0 फरहाना का अभिनन्दन किया गया कार्यक्रम का संचालन सुमेधा दर्शनाचार्य ने किया।

युवा सम्मेलन डा. गोविन्दवल्लभ जोशी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ राष्ट्रवादी युवा सम्मेलन का उद्घाटन आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (राष्ट्रीय स्वाभिमान अभियान के प्रभारी) ने किया। मुख्य अतिथि युवा निगम पार्षद श्री गौरव खारी तथा विशिष्ट अतिथि श्री वैकुण्ठलाल शर्मा पूर्व सांसद व डॉ. रामबिहारी विश्वकर्मा,पूर्व निर्देशक आकाशवाणी दिल्ली व अनिरुद्ध शर्मा क्षेत्रीय विधायक श्रीकृष्ण त्यागी, वीर सावरकर समिति के प्रमुख प्रो. आनन्दकुमार मल्होत्रा, आर्यसमाज नयाबांस के प्रधान श्री उत्तमकुमार आर्य, श्री चन्द्रप्रकाश पत्रकार (सम्पादक आक्रोश) वयोवृद्ध आर्यनेता श्री डी. आर. आर्य एवम् श्री वेदप्रकाश तथा श्रीमती ललिता जोशी, श्री वलजीत मान,श्री बाबूराम आर्य (सीताराम बाजार) श्री राजेन्द्र चौधरी (खारी बावली) श्री विश्वम्भर शर्मा(जनकपुर) श्री राकेश भार्गव(करौलबाग) ने राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भागीदारी विषय पर अपने विचार व्यक्त किए तथा राष्ट्रीय आयु कवि विजय गुप्त एवं श्री सूरजभान शर्मा ने राष्ट्र भक्ति से ओतप्रोत रचनाएं प्रस्तुत कीं वक्ताओं ने स्वधीनता संग्राम में वैदिक चिन्तन और महर्षि दयानन्द के दर्शन को सराहा। कार्यक्रम का संचालन हरपाल सिंह ने किया। एवं राजकरण सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम की सफलता में केशव नगर, नत्थूपुरा क्षेत्र के ग्रामों के प्रतिनिधियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। ●●

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुंजाएं।।

अन्तिम कवर पृष्ठ	११०००/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	९०००/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	७०००/-रुपए
आधा पृष्ठ	४०००/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	२०००/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" नई दिल्ली के नाम भिजवाएं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

विज्ञापन व्यवस्थापक

जनज्ञान-मासिक

२२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-५ दूरभाष:४१००४७४१

बन्द हो गाय बैलों से अमानवीय व्यवहार

-मेनका गांधी, संसद सदस्य

दो वर्ष पूर्व एटा से लौटते समय मैं काचलपुर में गंगा नदी पर बने एक लम्बे, संकरे पुल पर रुकी। मेरे सामने से एक छोटा सा ट्रक आ रहा था, जिसमें जिबह करने के लिए ले जाए जा रहे गायों और भैंसों के बछड़े भरे हुए थे। मैंने ट्रक को खाली करवाया और सोलह बुरी तरह से डरे बच्चों की नीचे उतरवाया, जिन्हें एक के ऊपर एक ठूंस कर चढ़ाया गया था। एक मर चुका था और दो के पैर टूट गए थे। मैंने उन्हें स्थानीय गांव वालों को सौंप दिया। ट्रक के ड्राइवर और मालिक कह रहे थे कि उन्होंने ये काम कभी नहीं किया (ऐसा वे सभी कहते हैं, जो पकड़े जाते हैं)। पुल पर बनी दुकानों के दुकानदार इतने गुस्से में आ गए कि उन्होंने उस ट्रक करे चट्टान पर से धक्का दे दिया, लेकिन उन सबने माना कि हर सप्ताह ऐसे दर्जनों ट्रक यहां से गुजरते हैं। सोरों के पशु बाजार से इन पशुओं को ट्रक में लादा जाता है और बदायुं के कसाईखाने तक ले जाया जाता है। ये पशु बाजार दुनिया की सबसे दुखदायी जगह है। अब ये पूरे भारत में हर जगह मौजूद हैं। केवल अपने जिले पीलीभीत को छोड़कर, जहां मैंने करीब दस साल पहले इन्हें बंद करवा दिया था। ये किसानमंडी जैसे दिखाई पड़ते हैं जहां खेती और डेयरी के लिए, पशु नए मालिकों को बेचे जाते हैं। एक उत्साही फलों के व्यवसायी ने अपना पूरा आम का बगीचा काट डाला और पूरी जमीन को समतल बनाकर बंजर कर दिया। उस जमीन को फिर उसने साप्ताहिक या रोज लगने वाले पशु बाजार के लिए दे दिया और हर आदमी से पैसे वसूलने शुरु कर दिए, जो उस जमीन का इस्तेमाल कर रहा था। इसकी अनुमति स्थानीय जिला प्रशासन से ली गई जो यह दिखावा करते रहे कि यह किसानों के भले के लिए उठाया गया कदम है और स्थानीय पुलिस मालिक, खरीदने और बेचने वाले से लगी बंधी रिश्वत लेती रही। पूरे जिले से बूढ़ी गायें, भैंसों और बैल या छोटे नर पशु दर्जनों मील पैदल चलाकर इन पशु बाजारों में लाए जाते हैं। उन्हें तेज धूप में घंटों बिना दाना-पानी के खड़ा रखा जाता है। जब कसाई इन पशुओं कामोल-भाव करते हैं, उन्हें धकेलते और कोंचते हैं, तब ट्रक इन स्थानों को चारों ओर से घेर कर खड़े रहते हैं। जब एक बार सौदा पक्का हो जाता है, तब इन पशुओं को पूँछ से खींचकर या भारी डन्डों से मारते हुए धकेल कर ट्रकों पर चढ़ाया जाता है। ट्रकों पर चढ़ते ही दो लड़के इनके पैर तोड़ देते हैं और इनकी गर्दन पकड़कर नाक में रस्सी डाल देते हैं और इसी रस्सी को ट्रक के आर-पार लगा लोहे के सरिये से बाँधकर थोड़ी-सी जगह में इन्हें फँसा देते हैं। अगले बैल या भैंस को इनके ऊपर चढ़ा दिया जाता है। अगर सींग बीच में आते हैं तो ये लोग इन्हें तोड़ देते हैं या कहीं दबा देते हैं। इस तरह जिस ट्रक में केवल चार पशु ले जाए जा सकते हैं उसमें 35-40 भर दिए जाते हैं। एक टैम्पो जो केवल दो पशुओं को ले जा सकता है, उसमें 20 भर दिए जाते हैं। इन पशुओं को तारपोलिन से ढक दिया जाता है ताकि रास्ते में कोई इन्हें देख न सके और इन्हें आसानी से मीलों तक ले जाया जा सके। घोर यन्त्रणा भरी यह 2-3 घण्टों की यात्रा एक गैर कानूनी कसाईखाने में जाकर खत्म होती है। यहाँ इन पशुओं को धकेलकर या फेंककर ट्रकों से नीचे उतारा जाता है। और दर्द से अधमरे हो चुके पशुओं को उनकी गर्दन काटे जाने तक यूँ ही पड़े रहने दिया जाता है। इनमें से आध से ज्यादा तो मर चुके होते हैं, लेकिन उनकी भी खाल उतारकर उनका माँस और खाल बेच दिया जाता है। जो पशु ट्रकों से नहीं ले जाऐ जाते, उन्हें नाक में रस्सी डालकर एक साथ बाँध दिया जाता है और हर कदम पर मार-मार कर चलाते हुए नजदीकी कसाईखाने तक ले जाया जाता है। दर्द से उनकी पसलियाँ बाहर निकल जाती हैं। अगर वे रास्ते में थोड़ा सा भी झिझके तो उनकी पूँछ मरोड़ दी जाती है।

ये गैर कानूनी बाजार है। इन बाजारों का किसान से कोई लेना-देना नहीं है। ये गैर कानूनी बाजार पशु हत्यारों के लिए सुविधाजनक पशु मंडी हैं। यही पूरा व्यापार कानून तोड़ने वाले सुगठित माफिया द्वारा चलाया जा रहा है और स्थानीय प्रशासन इनका साथ देता है। भारत सरकार के कानून के अनुसार कोई भी पशु बाजार पशुओं के लिए बिना समुचित छायादार स्थान, समुचित चारे और पानी की व्यवस्था के नहीं लगाया जा सकता। एक आदमी एक बार में दो से ज्यादा पशु नहीं खरीद सकता। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि पशु किसी

किसान द्वारा ही खरीदे गए हैं और खेती या डेयरी के काम में ही लिए जायेंगे। इन स्थानों पर तैनात सरकार पशु चिकित्सकों द्वारा इन पशुओं का निरीक्षण भी जरूरी है। इन बाजारों के नजदीक ट्रक या कोई भी दूसरा वाहन खड़ा करने की अनुमति नहीं है और न ही पशु इनमें लादकर ले जाया जा सकता है।

इनमें से किसी भी कानून की पालना नहीं होती। हमने हाल में दो पुलिस वालों को बाजार के नजदीक खड़े हुए पकड़ा जो हमारे पास आए शिकायतकर्त्ता को समझा रहे थे कि वो भी पैसा ले और भाग जाए। ये भले लोग थे। हमारे पास कम से कम बीस ऐसे मामले हैं जिनमें पशुओं के लिए काम करने वाले लोगों ने पुलिस में क्रूरता रोकने के लिए पशु एक्ट नियमों में लिखित शिकायत दर्ज कराई और उन्हें पशुओं के खरीदारों और और व्यापारियों की इस शिकायत पर गिरफ्तार कर लिया गया कि ये पशु कल्याण कार्यकर्त्ता उनसे पैसा माँगकर परेशान कर रहे हैं। एक-दूसरे मामले में हरियाणा के एक जिले में एक शिकायत पर यह बाजार बन्द करवा दिया गया, तब कसाइयों ने शिकायतकर्त्ता को इतना मारा कि उसे अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। इन लोगों के खिलाफ स्थानीय पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की, क्योंकि वे नाराज थे कि उनकी एक लगी-बँधी आय का जरिया बन्द करवा दिया गया था। बाजार दो दिन बाद फिर शुरू हो गया। पाप को प्रेरित करना पाप है। पाप को बर्दाश्त करना भी पाप है। पुलिस और स्थानीय प्रशासन इस क्रूर और दुष्ट पशु संहार को बढ़ावा दे रहे हैं, लेकिन आप भी अपने नजदीक ऐसे किसी बाजार को बर्दाश्त करके इसे बढ़ावा दे रहे हैं। आपको इनकी तस्वीरें लेनी चाहिएं, नाम और रास्ते पता लगाने चाहिएं और फिर स्थानीय अदालत में जाकर इस कारोबार को रुकवाना चाहिए। आपको स्थानीय जिला मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारी को तब तक परेशान करना चाहिए, जब तक कि वे इन खुले भ्रष्टाचार का हिस्सा बनना बन्द नहीं कर देते। जो कोई भी दिन के उजाले में इतने खुलकर भारत के कानून को पशुओं को मारने के लिए तोड़ सकता है, वह ऐसा इन्सानों को मारने के लिए भी कर सकता है। उत्तर प्रदेश पुलिस के अन्दरूनी दस्तावेजों के मुताबिक, इन गैर कानूनी पशु हत्यारों से आया आधे से ज्यादा धन बंदूके हासिल करने और भारत में आतंकवाद फैलाने के काम में लाया जाता है, इसलिए जब भी आप मूकदर्शक बने रहना चुनें तो याद रखिए अगला निशाना आप भी होने वाले हैं।

(गोधन से साभार)

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बन्धियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला आजीवन याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिन्ता की आवश्यकता नहीं। जीवन भर का उपहार है **'जनज्ञान'**। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया **'जनज्ञान'** की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका आभार मानते नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बन्धी को केवल 120/-रुपये में उपहार स्वरूप **'जनज्ञान'** का वार्षिक सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की खुशियाँ। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चन्दा भेजकर अपने मित्र या सम्बन्धी को **'जनज्ञान'** का वार्षिक सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य **'उपहार'** से उपकृत कीजिए।

-सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक 20 को गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के प्रांगण में हुई। जिसमें पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, विशेष आमन्त्रित सदस्यों सहित सैकड़ों आर्यजनों ने भाग लिया प्रातः यज्ञ, भजन और प्रवचन हुये तथा गुरूकुल वृन्दावन को पुनः उसके शीर्ष पर पहुँचाने का संकल्प लिया गया। विगत अनेक वर्षो से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश में विवादों के कारण गुरूकुल की दशा क्षीण हो गयी थी अराजक तत्व छा गये थे। विद्यार्थी चले गये थे। विश्वविद्यालय की मान्यता गुरूकुल की उपाधि की शासकीय मान्यता रद्द कर दी गयी थी। सभा की विज्ञप्ति के अनुसार अन्तरंग सभा ने आचार्य स्वदेश जी को गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का कुलपति मनोनीत किया तथा उन्हें गुरूकुल की अभ्युन्नति के लिए सर्वात्मना सहयोग देने का आश्वासन दिया।

प्रेषक (आचार्य वेदव्रत अवस्थी)
संपादक आर्य मित्र साप्ताहिक, लखनऊ

समाचार दर्शन

महर्षि दयानन्द जयन्ती

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की जयन्ती 27 फरवरी को आर्यसमाज, टिकरा, कौशाम्बी के तत्त्वावधान में बक्शीपार, टिकरा आदि स्थानों पर बड़ी धूमधाम से मनायी गयी। सर्वप्रथम बृहद यज्ञ के आयोजन हुए उसके पश्चात भजन व भाषणों द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी जीवन दर्शन का विद्वानों ने दिग्दर्शन कराया।

आर्यसमाज चौरी चौरा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज चौरी चौरा गोरखपुर का 76वां वार्षिकोत्सव 24 से 27 मार्च गुड़ का पड़ाव स्थान पर आयोजित हुआ, जिसमें विश्व कल्याण यज्ञ तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों, युवा वर्ग की गिरती हुई मानसिकता और दूषित विचार धारा को नवीन प्रकाश देने के लिए विविध सम्मेलन आयोजित किए।

आर्यसमाज मुम्बई

वैदिक संस्कृति की विच्छिन्न धारा को पुनः प्रवाहित करते हुए युगप्रवर्तक **महर्षि दयानन्द सरस्वती** ने मानवता के कल्याण हेतु **आर्यसमाज** की स्थापना 136 वर्ष पूर्व की थी अपनी स्थापना से लेकर अब तक आर्यसमाज वैचारिक क्रान्ति के इस महायज्ञ की अग्नि निरन्तर प्रज्वलित रखे हुए है। उस पवित्र उद्देश्य के प्रति समर्पणभाव जाग्रत करने हेतु 4 अप्रैल सोमवार को पृष्ठलिखित कार्यक्रमानुसार **आर्यसमाज स्थापना दिवस** का विशेष समारोह आयोजित है।

कार्यक्रम स्थलः आर्यसमाज, वी.पी. रोड,मुम्बई

आर्यसमाज जंगीगंज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जंगीगंज सन्त रविदासनगर, भदोही का 46 वां वार्षिकोत्सव एवं ऋषि दयानन्द जयन्ती उत्सव दिनांक 25 से 27 फरवरी तक सोल्लास मनाया गया। 24 फरवरी को विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी, जिसमें स्कूली बच्चों व आर्य नर-नारियों ने भारी संख्या में भाग लिया। शोभा यात्रा का नेतृत्व श्री पं. बालगोविन्द गुप्त कर रहे थे।

अग्रदूत थे स्वाधीनता के दयानन्द

महर्षि दयानन्द भारतीय स्वाधीनता के अग्रदूत थे। उनसे प्रेरणा लेकर असंख्य देशभक्तों ने स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। भारत की स्वाधीनता आर्यसमाज धवरुआ, अम्बेडकर नगर, के 26वें वार्षिकोत्सव पर आर्य विद्वान् डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आर्य ने विचार व्यक्त किये। उन्होंने वेदों के महत्व तथा राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। इस समारोह में पं. योगेन्द्र याज्ञिक (होशंगाबाद) और आर्य भजनोपदेशक पं. भीष्म आर्य (बिजनौर) ने भी जीवन में उच्च मानवीय आदर्शों को अपनाकर आर्य बनने की प्रेरणा दी। सभा का संचालन प्रधान श्री राजकरन आर्य ने किया।

एम. आर. राजेश 'वेदाचार्य' पद से सम्मानित

दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, महात्मा एम. आर. राजेश 'वेदाचार्य' पद से सम्मानित किए गए। कर्नाटक राज्य के प्रसिद्ध आर्ष विद्या गुरुकुल ओम शान्तिधाम ने यह प्रथम बार एक केरलीय ब्राह्मण को पद दे रहा है। महात्मा राजेश केरल के कालीकट शहर को निवास स्थान बनाकर वेद प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहे हैं। पिछली कुछ वर्षों से उन्होंने 25000 से अधिक लोगों को पंचमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि सिखाई है। इनके द्वारा केरल में महर्षि दयानन्द के आदर्शों का खूब प्रचार हो रहा है। केवल कालीकट क्षेत्र में 4000 से ज्यादा परिवार प्रतिदिन संध्या और हवन कर रहे हैं। यह बात प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी और डॉ. हरीशचन्द्र जैसे आर्य विद्वानों ने भी अनुभव की हैं।

गुरुकुल प्रभाताश्रम के ब्रह्मचारी विजयी

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा 25 फरवरी को आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालयीय संस्कृत प्रतियोगिताओं में आर्य संस्कृति की संवाहक संस्था गुरुकुल प्रभाताश्रम के ब्रह्मचारी नीतीश ने **'धरायाः भूषणं वृक्षाः प्राणीनां वारिजीवनम्। चलन्ति वायुना प्राणाः रक्षेदेतत् समं सुधीः'** व ब्र. अभय ने **'आतंकसंकुले काले संस्कृतं परमौषधम्'** विषय परसंस्कृत भाषण प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त कर तथा **अष्टाध्यायीसूत्रान्त्याक्षरी** में ब्र. अवधेश व ब्र. विकास ने प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त कर गुरुकुल की प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

महर्षि दयानन्द की पवित्र जन्मभूमि टंकारा में अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय जो कि महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित है, जिसमें भारत के 13 प्रान्तों एवं नेपाल तथा मारिशस के ब्रह्मचारी वेद एवं संस्कृत व्याकरण का अध्ययन कर रहे हैं जिसके माध्यम से शास्त्री, आचार्य एवं प्रचारक बनकर देश सेवा करते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में ट्रस्ट ने छः दर्शनों एवं ग्यारह उपनिषदों को पढ़ाने के लिए एक दर्शनाचार्य की व्यवस्था की है।

कन्या गुरुकुल शिवगंज

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज (सिरोही) में महर्षि दयानन्द के 127 वें निर्वाण दिवस पर गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस गोष्ठी में अहमदाबाद, जोधपुर आदि स्थानों से अभिभावक भी सम्मिलित हुए। इस गोष्ठी की विशेषता यह थी कि गोष्ठी में महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश विषय पर महत्त्वपूर्ण प्रवचन व प्रकाश डाला गया। गोष्ठी की मुख्य अथिति पाणिनि कन्या महाविद्यालय की आचार्या डॉ. सूर्या देवी जी चतुर्वेदा थीं। पू. आचार्या जी ने अपने प्रवचन में कहा- सत्यार्थप्रकाश अज्ञान की खाई से बचाने का एक मात्र प्रेरक ग्रन्थ है। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का सार ग्रन्थ है। आचार्या जी ने जैन, बौद्ध, ईसाई, चार्वाक एवं श्री शंकराचार्य आदि के पक्षों की समीक्षा के साथ सत्यार्थप्रकाश में महर्षि दयानन्द द्वारा परिभाषित ईश्वर, प्रकृति, जीव, कर्मफल, पुनर्जन्म की दलीलें प्रस्तुत कीं, वे सभी सहज तथा तर्कपूर्ण थीं। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों का अहोभाग्य रहा कि उन्हें ऐसे ओजस्वी प्रवचन सुनने को प्राप्त हुए। झज्र आदि मान्य विद्वानों ने रामपाल दास की पुस्तक का खंडन किया। रामपाल दास की घिनौनी हरकत सुनकर उस समय आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज की ब्रह्मचारिणियों में जो जोश आया, उन्होंने संकल्प लिया कि ऐसे लोगों की हरकतों को बढ़ने नहीं देंगे।

गोष्ठी के अनन्तर गुरुकुल की मान्या आचार्या डॉ. धारणा याज्ञिकी जी तथा सभी ब्रह्मचारिणियों ने गुरुकुल के मुख्य द्वार के बाहर 'कड़ुवा सच' पुस्तक की 100 प्रतियाँ जलाई।नेतृत्व डॉ. सूर्या देवी जी चतुर्वेदा ने किया।

फिजी में होली का उत्सव

फिजी में होली का पर्व वहाँ के हिन्दू समाज के द्वारा अत्यन्त उत्साह के साथ मनाया गया। फिजी सरकार के द्वारा 19 मार्च का अवकाश घोषित कर दिया गया था। उल्लेखनीय है कि हिन्दू, सिक्ख, जैन सहित वहाँ की जनसंख्या का 33.7 प्रतिशत है। प्रशान्त महासागर के इस द्वीप में होली के दिन 'फगवा' गायन की विशेष परम्परा है। अनेक स्थानों पररंग की परेड निकाली गई और परेड में होली का गीत 'चौथल' गाया गया। उल्लेखनीय है कि फिजी के हिन्दू एक विशेष प्रकार का होली गीत गाते हैं जिसका नाम चौथल है। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार पहली बार सन् 1880 में यहाँ होली मनाई गई। तब से वर्तमान तक होली का उत्साह बढ़ता जा रहा है। सन् 1987 के पश्चात् से मेथोदिष्ट चर्च के द्वारा हिन्दुओं पर्व मनाने से रोका जाता है लेकिन आतंक के साये में भी हिन्दू त्यौहार मनाते हैं।

अमरीका में नेवाडा सेनेट का गायत्री मंत्र से शुभारम्भ

क्या उपरोक्त शीर्षक पढ़कर आप आश्चर्य चकित हैं? यह कल्पना का प्रतिदान नहीं अपितु तथ्य है। कारसन नगर (अमेरिका) स्थित नेवाडा राज्य की सेनेट 14 फरवरी को वैदिक मंत्रों से गुंजित हो उठी।

हिन्दू राजनेता राजन जैड ने उस दिन नेवेडा सेनेट में वैदिक ग्रन्थों से मंत्रोच्चार किया तो सेनेट सदस्य भाव विभोर हो उठे। संस्कृत में प्रार्थना का मंत्रोच्चार करने के बाद राजन जी ने उनका अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। संस्कृत पावन भाषा है ही साथ ही भारतीय-यूरोपीय भाषाओं का मूल भी इस में निहित है।

श्री राजन जैड ने, जो यूनिवर्सल सोसाइटी ऑफ हिन्दुइज्म के अध्यक्ष भी हैं ऋग्वेद से प्रार्थना मंत्रों का सस्वर उच्चार कर उपस्थित सांसदों को आध्यात्मिकता की गंगा में निमग्न कराया। उन्होंने परमपिता परमात्मा के सर्वोत्तम नाम 'ओ३म' से गायत्री मंत्र का भी सस्वर उच्चार किया।

प्रार्थना मंत्रों के उच्चार के समय नेवाडा राज्य सेनेट के सदस्य, कर्मचारी और उपस्थित जन ने श्रद्धा सहित नमन किया। प्रार्थना मंत्रों का उच्चारण करते समय श्री राजन जैड ने भगवे परिधान धारण किए हुए थे और मस्तक पर चंदन का तिलक लगाया हुआ था। उन्होंने प्रार्थना की समाप्ति पर भारत से लाए गंगाजल के कुछ कण भी उपस्थित श्रद्धालु जन पर छिड़के। उन्होंने नेवाडा के लैफ्टिनेन्ट गवर्नर श्री ब्रिएन के. क्रोलिकी को भगवद् गीता की एक प्रति भी भेंट की।

श्री जैड ने असतो मा सद्गमय का उच्चारण कर अंग्रेजी में उसका अनुवाद प्रस्तुत किया तो उपस्थित श्रोताओं ने ज्ञान की गंगा में आकंठ स्नान करने सरीखी अनुभूति की।

उल्लेखनीय है कि नेवेडा की सेनेट के इक्कीस सदस्य हैं। श्री क्रोलिकी सेनेट के अध्यक्ष हैं। नेवाडा विशालतम स्वर्ण उत्पादक राज्य है। नेवाडा को 'सिल्वर स्टेट' भी कहा जाता है। ब्रियान सन्डोवाल इस राज्य के गवर्नर हैं। कार्यक्रम के एक संयोजक ने बताया कि हिन्दू धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है।

-स्रोतः न्यूज इंडिया टाइम्स

॥ओ३म्॥

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह: एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग तीन लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग १५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था। इस गौशाला में उत्पादित गौ दुग्ध का वितरण आश्रमवासियों तथा समय-समय पर आने और ठहरने वाले अतिथि गण में किया जाता है।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा के अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। **अभी नई फसल आने पर भूसा सस्ते मूल्य पर उपलब्ध हो सकेगा। बाद में लगभग दुगने मूल्य में लेना पड़ता है।** जो भी सहयोगी जन चारा-भूसा प्रदान करेंगे उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में ठोस योगदान सिद्ध होगा। अत: आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है। यदि आप राजधानी से दूरस्थ स्थान के निवासी हैं तो गौओं हेतु अपने योगदान की राशि **"दयानन्द संस्थान"** के नाम ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं।

दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को **'जनज्ञान'** मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष—दयानन्द संस्थान

2286, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-5

चलभाष : 09810257254

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	2000 रु.
2.	सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	100 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	100 रु.
5.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	15 रु.
6.	धरती का स्वर्ग	15 रु.
7.	सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र)	60 रु.
8.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	20 रु.
9.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	15 रु.
10.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	5 रु.
11.	वैदिक सम्पत्ति	200 रु.
12.	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	15 रु.
13.	योग और ब्रह्मचर्य	15 रु.
14.	गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह)	20 रु.
15.	Inside the Congress	60रु.
16.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
17.	History of the assassins	60 रु.
18.	Concept of God	60 रु.
19.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	60 रु.
20.	Light of Truth	250 रु.
21.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	15 रु.
22.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	60 रु.
23.	संक्षिप्त महाभारत	80 रु.
24.	संक्षिप्त रामायण	20 रु.
25.	ऋग्वेद शतकम	10 रु.
26.	चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
27.	सत्संग पद्धति	10 रु.
28.	वैदिक सान्ध्य गीत	15 रु.
29.	A Short Life Story of Swami Dayanand	30 रु.
30.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्री लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	4 रु.

100 रु. से अधिक धार्मिक साहित्य पर 15 प्रतिशत 300 रु. से अधिक लेने पर 20 प्रतिशत तथा 500 रु. से अधिक लेने पर 25 प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

३१.	बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार	३०० रु.
३२.	ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में)	१५० रु.
३३.	अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि	२०० रु.
३४.	अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि	१०० रु.
३५.	मोपला (उपन्यास)-वीर सावरकर	१०.०० रु.
३६.	वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय	५.०० रु.
३७.	भाई परमानन्द (जीवन परिचय)	३०.०० रु.
३८.	बाल सत्यार्थ प्रकाश	६०.०० रु.
३९.	मां गायत्री	२.०० रु.
४०.	स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा	२.०० रु.
४१.	विश्व को वेद का संदेश	३.०० रु.
४२.	विश्व को आर्यसमाज का संदेश	३.०० रु.
४३.	Great Gayatri	२.०० रु.

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	3.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षु:	2.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? -वेदभिक्षु:	2.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं-सावरकर	2.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? -राकेश रानी	2.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ -जहीर नियाजी	2.00 रु.
7.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ	2.00 रु.
8.	इस्लाम-एक परिचय	2.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षु:	2.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	2.00 रु.
11.	बाईबिल को चुनौती	2.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	2.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	2.00 रु.
14.	बाइबल कसौटी पर	4.00 रु.
15.	Bible in the Balence	3.00 रु.
16.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	2.00 रु.
17.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	2.00 रु.
18.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	2.00 रु.
19.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	2.00 रु.
20.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की 1000 पुस्तकें मंगाने पर 50 प्रतिशत और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25 प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक-दयानन्द संस्थान

2286-आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-5

॥ओ३म्॥

भारतीय नव वर्ष (सम्वत्सर) के अवसर

पर

देशवासियों को शुभकामनाएं

卐 卐 卐

देशपाल सिंह राठौर
अध्यक्ष

परिवर्तन जन कल्याण समिति
नई दिल्ली

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

1. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-36 में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। जो आजीवन आपकी होगी। इस समय व्यय लगभग चार लाख रुपए होगा। एक कुटिया 15×12 फुट की, पीछे शौचालय और स्नानागर 5×7 फुट, रसोई 7×7 फुट की, आगे बरामदा 12×7 फुट। प्रत्येक कुटिया अपने आप में पूर्ण इकाई है। वेदमंदिर में यज्ञशाला, सत्संग भवन, कार्यालय आदि के निर्माण हेतु अधिक से अधिक धनराशि 100/-, 500/-, 1000/- रुपये अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वयं तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके धनराशि "दयानन्द संस्थान" के नाम भेजें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।
2. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।
3. परमात्मा की अमरवाणी "चारों वेदों का हिन्दीभाष्य" मूल्य 2000/-रु.। अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में वेदभाष्य पहुंचायें। डाक से मंगाने पर 180/-रुपये अधिक लगेंगे।
4. बढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य 3600 रु.। डाक से मंगाने पर 200/-रु. अधिक लगेंगे।
5. विगत चवालीस वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक "जनज्ञान" के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। वार्षिक शुल्क 120/- रुपये है। इक्कीस सौ रुपये में जीवन भर जनज्ञान भेजा जायेगा, साथ ही अभी दो सौ रुपये का वैदिक साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।
6. प्रतिमास "जनज्ञान" की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ 80/- रुपये में मंगाकर बांटें तथा "जनज्ञान" मासिक में विज्ञापन देकर हमारे "राष्ट्र जागृति अभियान" में सहयोग प्रदान करें।
7. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिनकी सूची "जनज्ञान मासिक" में प्रकाशित होती रहती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

अध्यक्ष--दयानन्द संस्थान

दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव एवं महात्मा वेदभिक्षु: जयन्ती समारोह की झलकियां

जनज्ञान (मासिक)
२२८६, आर्यसमाज मार्ग
करौलबाग, नई दिल्ली-५

चैत्र-वैशाख
सम्वत्-२०६८
अप्रैल, सन्-२०११

Delhi Postal No. DL (C)-01/1114/09-011
R.N. 10719/65
Posted at N.D. PSO on
Date 5&6 of April 2011

ओ३म्

।। जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का गेह नहीं ।।

ऋग्वेद

यजुर्वेद

"परमात्मा" की दिव्य-सनातन वाणी

सामवेद

अथर्ववेद

चारों वेद का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

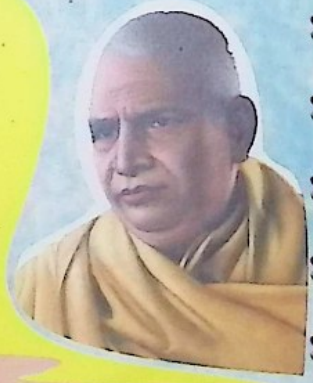

प्रसारार्थ लागत मूल्य
रु. 2000/-

मंत्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित 23x36 सें.मी. साइज में कुल पृष्ठ 2200, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्रायः 8 किलो। सुन्दर मुद्रण।

श्रेष्ठ बढ़िया कागज़ पर लागत मूल्य 3600 /-रुपये

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

अधिक विवरण व राशि भेजने के लिए :

सम्पर्क कार्यालय : दयानन्द संस्थान, 2286 आर्यसमाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 (भारत)

महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेद मन्दिर, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर), पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-110036 (भारत)